दुनिया जब नई नई थी

वेरियर एल्विन

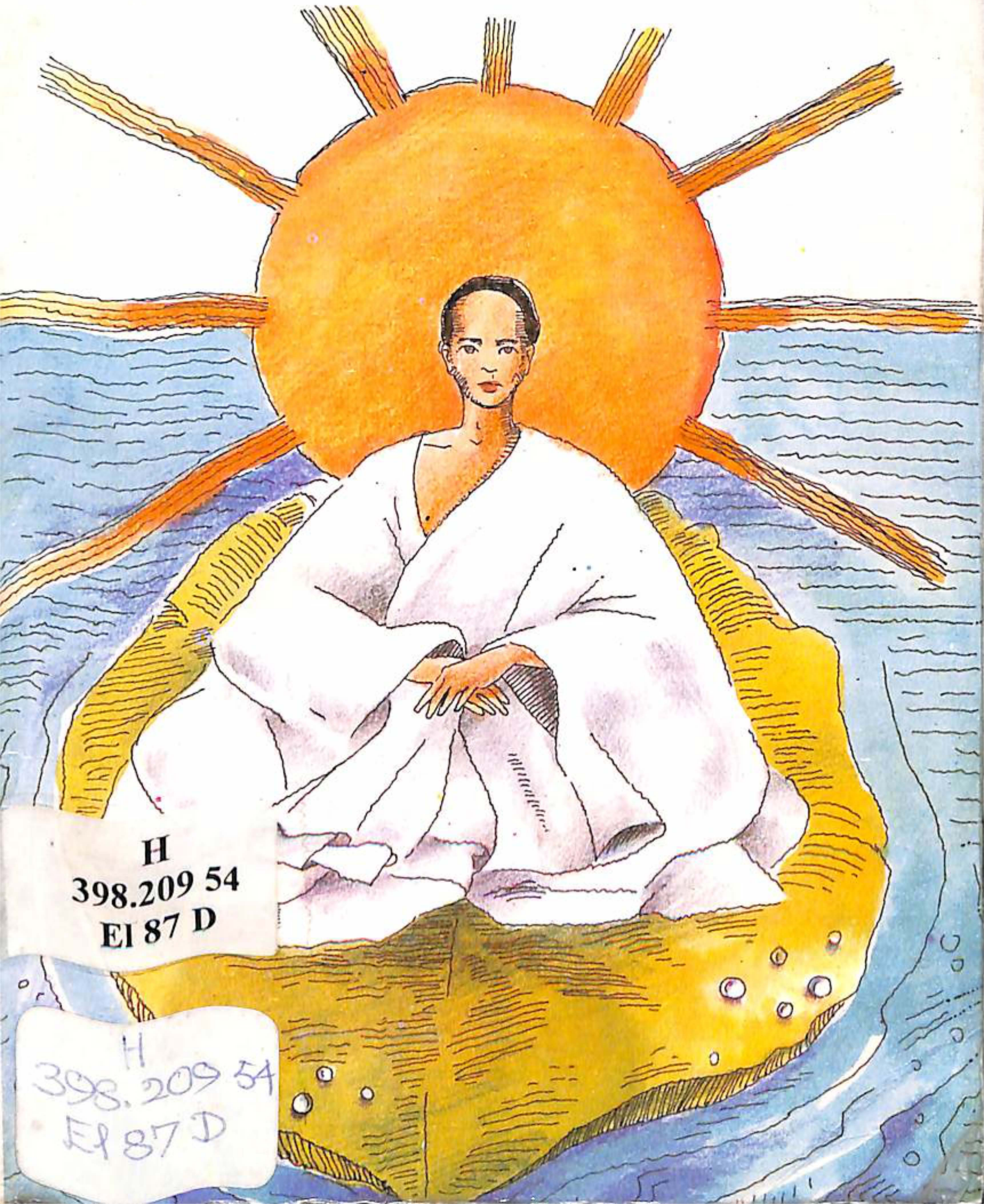

H
398.209 54
El 87 D

H
398.209 54
El 87 D

लोक साहित्य और संस्कृति

दुनिया जब नई नई थी

भारत के पहाड़ों एवं वनों की लोककथाएं

वेरियर एल्विन

अनुवाद
भगवान सिंह

चित्रांकन
अमीना जयाल

भूमिका
रामचन्द्र गुहा

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

Library IIAS, Shimla
H 398.209 54 El 87 D
00091261
H
398.209 54
El 87 D
Acc. No. 91261
Date 23-2-99
SIMLA

यह पुस्तक पर्यावरण-मित्र पुनर्निर्मित कागज पर मुद्रित है।

रामचन्द्र गुहा की भूमिका के साथ।

पहली वार सन 1961 में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित तथा सन 1996 में पहली वार अंग्रेजी में नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित

ISBN 81-237-1922-1

पहला संस्करण : 1996 *(शक 1918)*
मूल © लाला एल्विन
अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
Original Title : When World Was Young *(English)*
Translation : Duniya Jab Nayee Nayee Thi *(Hindi)*

रु. 24.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

वसन्त, नक़ुल और *अशोक* के लिए

अनुक्रम

भूमिका—रामचन्द्र गुहा — नौ
आमुख — तेरह

पहले पहल — **1**
दुनिया कैसे बनी — 1
सूरज और चांद — 7
आसमान में नाचने वाले — 10
इंद्रधनुष — 11
भूखे बच्चे — 12
पहली नदियां — 12
धरती कांपती क्यों है — 15

पहले लोग — **17**
लोग रास्ते से कैसे भटक गए — 17
पहले लोग नन्हें से थे — 19
आंखें कैसे मिलीं — 19
लोगों ने वोलना कैसे शुरू किया — 20
वड़े कान — 22
औरतों की दाढ़ी और मूंछ कहां गई — 22
जव जिंदगी नीरस थी — 23
बहादुर वच्चे — 23

खोजें — **30**
घर कैसे बनाएं — 30
हथौड़ा और चिमटा — 32

कपड़ा कैसे चलन में आया 33
आग की खोज 35
तमाकू 39
पहले नर्तक 41

बोलने वाले जानवर **42**
पहले बंदर 42
मेढक और बंदर 44
काला कुत्ता 46
दो दोस्त 49
उड़ने वाले हाथी 50
कछुए का बच्चा 52
कुत्ता और सूअर 55
सांप-पति 56
याक 60
पहला मिथुन 63

जादू नगरी की सैर **68**
पक्षियों की अतिथि सेवा 68
सुनहला मोर 70
चुराई हुई आंखें 73
मृग-वाला 78
संपत्ति और बुद्धि 82
जादुई मादल 91

प्रलय **96**
दुनिया में मौत कैसे आई 96

भूमिका

दुनिया जब नई नई थी में भारतीय जनजातियों की लोककथाओं में से विविध प्रकार की कथाओं को संकलित किया गया है। इस पुस्तक में दुनिया कैसे बनी, नदी को अपनी राह कैसे मिली, भूचाल क्यों आते हैं, आदि के विषय में अचरज भरे विवरण मिलते हैं। ये कहानियां उन्हीं प्रपंचों के रूखे-सूखे वैज्ञानिक विवेचनों की तुलना में अधिक आह्लादकारी तो हैं ही, इसमें भी संदेह नहीं कि ये अधिक रोचक हैं। दूसरी कथाओं में यह समझाया गया है कि आदमी ने बोलना और देखना कैसे शुरू किया, कपड़ा और पोशाक की उत्पत्ति कैसे हुई, आग की खोज कैसे हुई। कुछ कहानियों में जानवरों से मनुष्य के लगाव और टकराव का और जानवरों के गुणों और लक्षणों के आरंभ होने का विवरण है। इनसे हमें पता चलता है कि मेंढक के पांव इतने पतले क्यों होते हैं और हाथी के पंख क्यों नहीं होते।

इन कहानियों में विषय की जैसी विविधता है उसी तरह की विविधता इनके भौगोलिक प्रसार में भी पाई जाती है, क्योंकि इनका जन्म इतने सुदूर क्षेत्रों में हुआ है जिसमें एक ओर तो मध्यप्रदेश के जंगलों में बसे बैगा हैं और दूसरी ओर अरुणाचल में सिआंग नदी के तटों पर पाए जाने वाले मिन्यांग। इन दोनों पहलुओं से ये कथाएं संकलनकर्ता की अनुभवसंपन्नता और जीवन की अपार विविधता को भी प्रकट करती हैं। वेरियर एल्विन का जन्म सन् 1902 में हुआ था। वह इस शताब्दी के अग्रणी नृतत्वविदों में से एक थे। एल्विन ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अपने तेजस्वी छात्रजीवन के बाद भारत में सबसे पहले सन् 1927 में आए थे। कुछ ही समय बाद वे महात्मा गांधी के संपर्क में आ गए और राज के विद्रोही बन गए। वे ऐसे अंग्रेज थे जिसने ब्रितानी शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए जम कर अभियान चलाया।

1932 में एल्विन अपनी जीवन-संगिनी शामराव हाइवेल के साथ मध्यप्रदेश के मांडला जिले में एक दूरस्थ गोंड गांव में बस गए। यहां इन दोनों साथियों ने जनजातियों के बीच आधुनिक शिक्षा और दवा-दारू का प्रसार करने के लिए

गोंड सेवा मंडल नाम से एक कल्याणकारी संगठन की स्थापना की। आरंभ में जनजातियों से उनके सावका का वर्णन एल्विन के गोंडो के साथ जीवन के मोहक संस्मरण *लीव्ज फ्राम दि जंगल* (प्रथम प्रकाशन, 1936) में किया गया है। उस पुस्तक में उन्होंने इस बात की चर्चा की है कि वे जनजातियों की संस्कृति और जीवन शैली से कैसे अभिभूत हो गए और कैसे उनकी कथाओं और मिथकों का संकलन और अनुवाद आरंभ किया। शामराव हाइवेल गोंड सेवा मंडल के स्कूलों और अस्पतालों का काम देखती थीं और एल्विन आज के मध्यप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र और बिहार के जनजातीय क्षेत्रों में भटकते रहते। अपनी छानवीन के आधार पर उन्होंने उन विविध समुदायों के विषय में आधिकारिक अध्ययनों की एक पुस्तकमाला तैयार की जिनसे उनका इस बीच सावका पड़ा था। परंतु जनजातियों के जीवन में एल्विन की रुचि वैज्ञानिक सीमाओं में वंधी हुई नहीं थी। अपनी भूमि और जंगलों पर उनके अधिकार के छिन जाने, और उनकी संस्कृति के क्षय से वह इतने उद्विग्न हो उठे थे कि वे ढाई करोड़ आदिवासियों के स्वयं-नियुक्त, फिर भी वेजोड़ प्रभावशाली प्रवक्ता वन गए। सच तो यह है कि भारत के शहरी लोग पहली वार एल्विन की पुस्तकों, लेखों, व्याख्यानों, फिल्मों और चित्रों के माध्यम से ही अपने जनजातीय देशवासियों के जीवन और उनकी समस्याओं से अवगत हो पाए।

अगस्त 1947 में स्वाधीनता मिलने के वाद एल्विन वैध रूप में भारत के नागरिक वन गए जिसकी लालसा उनके मन में लंवे समय से वनी हुई थी। इस समय तक उनके प्रशंसकों और समर्थकों का एक प्रभावशाली जाल सा तैयार हो चुका था, जिनमें प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी आते थे। नेहरू की सिफारिश पर ही वे तत्कालीन पूर्वोत्तर सीमा-प्रांत एजेंसी (आज के अरुणाचल प्रदेश) सरकार के जनजातीय मामलों के परामर्शदाता नियुक्त किए गए। भारत के इस दुर्गम्य और अल्पज्ञात भाग में एल्विन का काम था जनजातियों की जीवन-दशा का अध्ययन करना और इस बात का परामर्श देना कि उनके विषय में सरकार की नीतियां क्या हों। एक वार फिर उन्होंने अपनी भूमि और वनों पर जनजातियों के अधिकार को मजबूत बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। आदिवासियों की सेवाओं और भारतीय नृतत्व में उनके योगदान के लिए उन्हें सन् 1961 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। लोक समादृत और अपार जनों के प्रेमभाजन वेरियर एल्विन का निधन अपने अपनाए हुए देश में ही फरवरी 1964 को हुआ।

एल्विन के जीवन और कृतित्व का सुंदर समाहार उनकी आत्मकथा *द ट्राईवल वर्ल्ड आफ वेरियर एल्विन* में हुआ है जिसे वह अपने जीवन काल में

ही पूरा कर गए थे, पर जिसका प्रकाशन उनकी मृत्यु के बाद हुआ। (यह पुस्तक तथा *लीव्ज फ्राम दि जंगल* हाल ही में पुनर्मुद्रित हुई हैं और दोनों ही पठनीय कृतियां हैं) एल्विन समय-समय पर एक प्रचारक, एक समाजकर्मी, एक नृतत्वविद्, और एक सरकारी पदाधिकारी रहे। पर इन सवसे ऊपर वे एक लेखक रहे। उन्होंने पचीस से अधिक पुस्तकें लिखी हैं जो नृजातिवर्णन से लेकर उपन्यासों तक, इतिहासग्रंथों से लेकर आत्मकथा तक के व्यापक परिधि को समेटती हैं। उन्होंने लोककथाओं के भी पांच विशद खंडों का प्रकाशन कराया। **दुनिया जव नई नई थी** उन्हीं में से चुनी गई कथाओं का संकलन है। उनकी अन्य पुस्तकों की तरह यह खंड भी जनजातियों के प्रति एल्विन के गहन तादात्म्य और एक किस्सागो के रूप में उनके कौशल को प्रमाणित करता है। इसका प्रथम प्रकाशन 1961 में और पुनर्मुद्रण 1966 में हुआ था। अब इसे पाठकों की एक नई पीढ़ी के लिए पुनः जारी किया जा रहा है।

1995 —रामचन्द्र गुहा

आमुख

मैं भारत की पहाड़ियों और जंगलों में पिछले तीस वर्षों से कथाओं का संग्रह करता रहा हूं और दो हजार से अधिक कथाओं को प्रकाशित करा चुका हूं। इस पुस्तिका में मैंने उनमें से कुछ ऐसी कथाओं का संचयन किया है जिनमें उन दिनों की जिंदगी के वारे में लोगों के खयालों का वर्णन किया गया है जव दुनिया वच्ची थी। इनमें से कुछ में यह वताया गया है कि दुनिया शुरू कैसे हुई और पहले लोग और लुगाइयां किस तरह की जिंदगी विताते थे। कुछ अन्य कहानियों में यह सुझाया गया है कि जीवन की कुछ अति आवश्यक वस्तुएं, जैसे आग का प्रयोग, घरों का वनाना, कपड़े की वुनाई - का आविष्कार कैसे हुआ। कुछ दूसरी कहानियों में उन रोमांचक दिनों की याद है जव आदमी और जानवर एक साथ रहते थे, आपस में वात-चीत करते थे। जव जादू सचाई वना हुआ था और उसका पूरा जोर था, उस समय लोग किस-किस तरह के विचित्र जोखिम उठाया करते थे। पुरानी दुनिया मौत को तो जानती ही नहीं थी। एक दो कथाओं में यह वताया गया है कि कैसे यह मनुष्य के जीवन को विषाद से भरने के लिए नहीं अपितु उनको दिलासा देने के लिए, वहुत लंवे समय तक जीते चले जाने के वोझ को उतारने के लिए पहली वार धरती पर आई।

ये कथाएं मेरी पूर्व प्रकाशित पुस्तकों—*फोक-टेल्स ऑफ महाकोशल* (ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1944), *मिथ्स ऑफ मिड्ल इंडिया* (ऑ.यू.प्रे., 1949), *ट्राइबल मिथ्स ऑफ ओरिसा* (ऑ.यू.प्रे., 1954), *मिथ्स ऑफ दि नार्थ-ईस्ट फ्रंटियर ऑफ इंडिया* (नार्थ-ईस्ट फ्रंटियर एजेन्सी, 1958) और *दि वैगा* (जॉन मरे, 1939) से ली गई हैं। मैं इन प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञ भाव से आभार प्रकट करता हूं।

शिलांग, 1 दिसंबर, 1960 **वेरियर एल्विन**

पहले पहल

दुनिया कैसे बनी

भारत के पहाड़ों और जंगलों में बसे लोगों के बीच दुनिया की सृष्टि के बारे में तरह-तरह की कथाएं पाई जाती हैं। कुछ का कहना है कि यह एक बहुत विशाल अंडे के फूटने से निकली। दूसरों के अनुसार इसे विधाता ने अपने हाथों से गढ़कर बनाया। लेकिन अधिकांश का मानना यह है कि पहले पहल पानी का एक विराट समुद्र था। धरती उसी की तलहटी से निकाली गई और इसे कुछ उसी तरह उसके ऊपर फैला दिया गया जैसा मध्यप्रदेश के शानदार वनों में रहने वाले बैगा जनों की कहानी में बयान किया गया है।

पहले पानी को छोड़कर कहीं कुछ नहीं था। चारों ओर पानी ही पानी फैला था। तब न कहीं ईश्वर की आवाज थी, न दानव की, न हवा, न चट्टानें, न रास्ते, न जंगल। जैसे इस समय आकाश फैला है, वैसे ही तब जल फैला था। ईश्वर एक कमल के पत्ते पर बैठा था और वह पत्ता जल पर इधर से उधर डोलता फिर रहा था। ईश्वर निपट अकेला था। उसका न कोई पिता, न पूत। एक दिन उसने अपने हाथों को मला और उससे जो मैल निकली उससे उसने अपनी एक पुत्री, कौवी को गढ़ा। जब वह बढ़कर उड़ने लायक हो गई तो उसने उससे कहा, 'जाओ और मेरे लिए कहीं से मिट्टी तलाश करो। मैं यहां अकेला हूं, मैं एक दुनिया बनाना चाहता हूं।'

कौवी उड़ी तो उड़ती ही चली गई, उड़ती ही चली गई। उड़ते-उड़ते वह जाने कहां पहुंच गई। उड़ते-उड़ते उसका दम फूल गया और वह धप् से नीचे एक कछुए की पीठ पर जा गिरी। कछुआ भी ऐसा कि उसका एक हाथ तो समुद्र की तलहटी में और दूसरा आकाश को छूता हुआ।

कछुए ने पूछा, 'माजरा क्या है? तुम इस तरह हांफ क्यों रही हो?'

कौवी ने कहा, 'ओ मेरे भाई, मैं थककर इतनी निढाल हो गई हूं कि मेरे

प्राण अब छूटे कि तब।'

'मेरी बहना, तुम जा कहां रही हो?'

'मैं मिट्टी की तलाश कर रही हूं। मुझे मिट्टी कहां मिल सकती है?'

'जाओ और समुद्र की पेंदी में रहने वाले कीड़े को तलाशो। उसी ने मिट्टी को निगल रखा है। मैं तुम्हें लोहे के देवता के पास ले चलूंगा। तुम्हारी मदद

वही करेंगे।'

कछुआ उसे लोहे के देवता के पास ले गया और उसने अपने बारह लोहारसुर भाइयों को जो लोहारी का काम करते थे, तेरह तामसुर भाइयों को जो तांबागरी का काम करते थे, और चौदह अगियासुर भाइयों को जो आग का काम करते थे, अपने पास बुलाया। उन सभी ने मिलकर लोहे का एक विशाल पिंजड़ा बनाया और उसमें एक द्वार भी बना दिया। कौवी और कछुआ उस पिंजड़े में बैठ गए और लोहे के देवता ने उस पिजड़े को नीचे समुद्र में उतारा और जब तक वे समुद्र की पेटी में नहीं पहुंच गए तव तक उतारता ही चला गया। उसने उन्हें एक और जंजीर थमा दी और कहा कि जव तुम्हारा काम बन जाए तो जंजीर को खींचना और मैं तुम दोनों को ऊपर खींच लूंगा।'

कीड़ा सो रहा था। पिंजड़ा ठीक उसके सिर के पास उतरा। कछुआ और कौवी बाहर निकले और कीड़े को जगाया। कीड़ा आग बबूला हो गया। उसने चीखते हुए कहा, 'मैं वारह साल से सोया पड़ा था और तुम दोनों ने मुझे जगा दिया। मैं बहुत भूखा हूं। इस वीच मैंने कुछ खाया ही नहीं। अव मैं तुम दोनों को गटककर कलेवा करने जा रहा हूं।'

कछुए ने यह सुना तो वह कौवी के पीछे दुबक गया।

कीड़े ने कौवी से पूछा, 'तुम किसकी लड़की हो?'

'मैं तो स्वयं ईश्वर की लड़की हूं।'

'तुम यहां क्यों आ धमकीं?'

'मैं मिट्टी की तलाश में आई हूं।'

'क्या तुम्हारा वाप यहां मिट्टी छोड़ गया था जो तुम उसकी तलाश करने यहां चली आईं?'

कौवी ने यह सुना तो वह भी अपने आपे में न रही। उसने कहा, 'तुमने मुझे मिट्टी नहीं दी तो मैं तुम्हारी वह पिटाई करूंगी कि तुम्हारे होश ठिकाने आ जाएंगे।'

अव कीड़े की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने कहा, 'मिट्टी यहां नहीं है। यह वहां है, पर उसकी रखवाली एक दानव कर रहा है। तुम उसके पास गईं तो वह तुम्हें जलाकर भस्म कर देगा।'

कछुए को उसकी बात पर भरोसा नहीं हुआ। जब उसने देखा कि कीड़ा डर गया है तो उसका अपना डर हवा हो गया। वह कौवी की ओट से बाहर आया और उछलकर उस कीड़े की पीठ पर सवार हो गया और उसकी गर्दन दवोच ली।

वह जोर से गरजा, 'झटपट मिट्टी दो नहीं तो मैं तुम्हारा सिर काट कर अलग कर दूंगा।'

अब उसने उसे धीरे-धीरे कसना शुरू कर दिया। कीड़ा तड़पने और छटपटाने लगा। उसने कहा, 'अरे बेटे, अरे बेटे, एक पल रुको तो सही।' वह उल्टी करने लगा। वह जितनी बार उल्टी करता उतनी बार थोड़ी सी, बेर के बराबर, मिट्टी बाहर निकलती।

उसकी पहली उल्टी से धरती मां बाहर निकली। दूसरी से पीली मिट्टी बाहर आई। तीसरी से काली मिट्टी, चौथी से पापी मिट्टी निकली जिसमें बाघ आदमी की जान ले सकता है। पांचवीं से सूखी मिट्टी जिसमें आप बीज तो बो सकते हैं पर उपजेगा कुछ नहीं। छठी से गंदी मिट्टी, सातवीं से अछूती मिट्टी, आठवीं से दूध जैसी सफेद मिट्टी, नवीं से अच्छी मिट्टी, दसवीं से कांपने वाली मिट्टी, ग्यारहवीं से पंचमेल मिट्टी, वारहवीं से लाल मिट्टी, तेरहवीं से निचाट मिट्टी, चौदहवीं से उजली मिट्टी, पंद्रहवीं से चट्टानी मिट्टी, सोलहवीं से लाल बजरी वाली मिट्टी, सत्रहवीं से बलुई मिट्टी, अठारहवीं से वहरी मिट्टी, उन्नीसवीं से उपजाऊ मिट्टी, जिसमें अनाज पैदा होता है, वीसवीं से बंजर मिट्टी, जिसमें कुछ उगता ही नहीं और इक्कीसवीं से कोरी मिट्टी बाहर आई।

कीड़े ने सारी 'मिट्टी जब' कौवी को दे दी तो कछुए ने जंजीर खींची और लोहे के देवता ने उन दोनों को ऊपर खींच लिया। कछुए ने सारी मिट्टी रस्सी से कौवी की गर्दन में लपेट दी और फिर वह उड़ी तो उड़ती ही चली गई। उड़ते-उड़ते वह थककर मरने-मरने को हो गई तब कहीं ईश्वर के पास पहुंची।'

ईश्वर ने उसे देखा तो पूछा, 'वेटी, तुम मिट्टी ले आईं?'

कौवी वोली, 'हां पिताजी, यह रही मिट्टी।'

ईश्वर ने उसकी गर्दन खोल कर मिट्टी निकाली और उसे अपनी गोद में रख लिया। उसने एक कुंवारी युवती को बुलाकर कहा कि वह एक दोना बनाए और फिर उसने धरती को दोने पर रख दिया और उस लड़की ने उसे गूंथना शुरू किया। वह आठ दिन और आठ रात लगातार उसे तब तक गूंथती रही जव तक सव कुछ मिलकर एकसार नहीं हो गया। ईश्वर ने इस धरती को वेलकर एक वड़े रोटे जैसा बनाया और फिर इसे पानी के ऊपर फैला दिया। अब वह बढ़ती चली गई, वढ़ती चली गई। बढ़ते-बढ़ते इसने पूरे पानी को ढंक लिया।

धरती वन तो गई पर यह मजवूत नहीं थी। यह इतनी रपटीली थी

जैसे बरसाती कीचड़। वे उस पर खड़े होते तो यह पांव के नीचे से सरक जाती।

अब ईश्वर ने अपनी बेटी कौवी को पवन दसेरी या वायु देवता को और भीमसेन को बुलाने को भेजा। पवन को ईश्वर ने अपने फूंक से सिरजा था इसलिए वह हबड़-तबड़ करता सबसे पहले पहुंचा। वह धरती पर बहने लगा। उसने कुछ मिट्टी तो उड़ाकर हवा में मिला दी और इस सारी धरती को फिर मिलाकर तब तक बहाता रहा जब तक यह कड़ी और टिकाऊ नहीं हो गई। लेकिन पवन तो ठहरा अंधा। इसीलिए तो यह चीजों से धड़ाम-धड़ाम टकराता और लोगों को थपेड़े लगाता रहता है, इसलिए उसके काम में कसर रह गई। धरती कड़ी तो हो गई थी, पर जब उस पर वे एक ओर खड़े होते तो यह दूसरी ओर से टंग जाती थी।

अब आए महाबली भीमसेन। वह एक ही डग में वहां पहुंच गए। उनका एक पांव अपने घर में और दूसरा ईश्वर के सामने। लेकिन वे थके हुए थे इसलिए बोले कि और कुछ होने-हवाने से पहले उन्हें कुछ खाने को दिया जाए। सो ईश्वर ने उन्हें पचीस बोरे चावल और बारह बोरे मसूर दिए। यह सारा चट करने के बाद वे बोले कि इससे तो उनका कुछ बना-बिगड़ा ही नहीं। अब उन्होने भीमसेन को बारह बोरे चने के दिए। जब इसे भी वे खा चुके तो बोले, 'काकाजी, आप ने मुझे पीने को तो कुछ दिया ही नहीं।'

ईश्वर ने कहा, 'तुम जाकर दारू की तलाश करो।'

भीमसेन ने पूछा, 'वह क्या बला है?'

ईश्वर ने कहा, 'जाओ और खुद देखो।'

भीमसेन जंगल में गए और पूरा जंगल छान मारा। बहुत देर के बाद वे एक महुए के पेड़ के पास पहुंचे। यह पेड़ भीतर से खोखला था और वह पूरा दारू से भरा था। उसकी डालियों पर चारों ओर हरे कबूतर, नीलकंठ, तोते, मैना, तरह तरह के पक्षी बैठे थे और वे उस दारू को पी रहे थे। वे सभी अपना सिर झपका रहे थे। भीमसेन सोचने लगे, ' ये अपना सिर क्यों झपका रहे हैं?' वे उस पेड़ पर चढ़ गए। अब देखते क्या हैं कि पेड़ का कोटर दारू से लबालब है। भीमसेन ने उसमें अपनी उंगली डुबोई और उसे चखा।

वे चीख पड़े, 'मिल गई ! दारू मिल गई !' और वह उसे पीने में जुट गए। पेट भर जाने पर उनका सिर झपकने लगा। वे भी चिड़ियों के साथ ही बैठ कर उन्हीं की तरह झूमने लगे। अब उन्होंने बारह तूंबों में उस दारू को भरा और उसे ईश्वर के पीने के लिए ले आए। अब ईश्वर और पवन और वह कौवी सभी बैठकर दोनों में भरकर दारू पीने लगे। जब वे झूमने लगे तो भीमसेन

उठे और धरती पर चारों ओर चक्कर लगाने लगे।

जहां धरती पतली रह गई थी वहां उन्होंने पहाड़ रख दिए। जहां यह वहुत भारी थी वहां उन्होंने घाटी बना दी। जहां यह फिसल रही थी वहां उन्होंने पेड़ लगा दिए कि उनका सहारा लिया जा सके। धरती फिर भी अटल और अचल नहीं हुई। यह अव भी डगमग हो रही थी। यह इतनी बिखरी-बिखरी और ऊवड़-खाबड़ लग रही थी कि लगता था धरती न हुई किसी मकड़े का टूटा हुआ जाला हो।

पांच साल इसी तरह बीत गए तव कहीं धरती की एक दरार से नंगा बैगा और उसकी पत्नी पैदा हुए। नंगा बैगा ने धरती माता से कहा, 'मैया, मेरा एकतारा कहां है?'

धरती माता ने कहा, 'मेरे लाल, अभी तो तुम्हारा नाल भी नहीं कटा, तुम इसी समय एकतारे का क्या करोगे?'

लेकिन उसी दिन बांस कुमारी का भी जन्म हुआ और नंगा वैगा बांस काटने गया। उसने ऐसा टुकड़ा काटा जिसमें फूंक मारो तो आर-पार हो जाए। उसने तार की जगह अपने ही बाल लगाए और एकतारा बनाकर बजाने लगा। इसके सुर से ईश्वर का आसन डोलने लगा। अब ईश्वर को पता चला कि वैगा की जोड़ी का जन्म हो चुका है। उन्होंने उन दोनों को वुला भेजा। उनका दूत पहुंचा तो क्या देखता है कि नंगा बैगा एक सुपेली में सोया पड़ा है। धरती माता ने कहा, 'मेरे लाल, तुम कहीं मत जाओ। पर नंगा वैगा गोरू की तरह नंग-धडंग वहां से उठा, अपना एकतारा उठाया और चल पड़ा। ईश्वर ने कहा, 'अपना नाखून धरती में गड़ाओ जिससे यह अचल हो जाए। नंगा वैगा के अभी नाखून तो निकले नहीं थे सो उसने अपने दांये हाथ की कानी उंगली काटी और उसे ही धरती में धंसा दिया। इससे ईश्वर को तोप नहीं हुआ। वे वोले, 'मैं मजबूत खंभे चाहता हूं।'

इस पर नंगा वैगा ने आग के देवता, अगियासुर, को वुलाया और अगियासुर लपटें देकर धू-धू करके दहकने लगे। और लोहार की आग से अगरिया का जन्म हुआ। वह आग से ही पैदा हुआ था इसलिए उसे आग का कोई डर नहीं था और वह नंगे हाथों से दहकता हुआ लोहा पकड़ सकता था। अगरिया ने लोहमटिया के वारह खंभे वनाए और उन्हें दुनिया के चारों कोनों पर लगा दिया और यह अचल हो गई। इसके वाद ईश्वर ने चारों ओर बीज बिखेर दिए और धरती वनकर तैयार हो गई।

सूरज और चांद

अपनी अगली कहानी के लिए भारत के पूर्वोत्तर सीमा के ऊंचे पहाड़ों में चलते हैं। सूरज और चांद को अनेक पहाड़ी जन देवता मानते हैं पर मजे की बात यह है कि सूरज को अक्सर स्त्री माना जाता है और चांद को उसका पति। सिआंग नदी के बाएं किनारे पर बसे मिन्यांग लोगों की कहानी में भी यही बात है।

धरती नारी है, आकाश पुरुष। जब उन्होंने ब्याह किया और उनका मिलन हुआ तो आत्माओं, आदमियों और जानवरों की एक सभा यह विचारने के लिए हुई कि वे किस जुगत से इनके बीच दबने से बच सकते हैं। सबसे महान आत्माओं में से एक सेदी-दियोर ने आकाश को पकड़कर उसकी वह धुनाई की कि वह धरती को छोड़कर ऊपर आसमान में पहुंच गया। जब वह दूर चला गया तो धरती ने दो लड़कियों को जन्म दिया। पर उसे अपने पति के खोने का इतना मलाल था कि उसने उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। सेदी-दियोर को उनके लिए एक धाई मां की तलाश करनी पड़ी।

लड़कियां चलने-फिरने लायक हुईं तो उनसे ज्योति फूटने लगी और यह ज्योति दिनों दिन अधिक बढ़ती चली गई। कुछ समय बाद धाई की मौत हो गई और सेदी-दियोर ने उसे जमीन में गाड़ दिया। बच्चियां अपनी मां के लिए तो बिलखती ही थीं, उसके लिए भी उतना ही बिलखने लगीं। वे इतना रोईं, इतना रोईं कि रोते-रोते मर गईं और उनसे जो ज्योति निकलती थी वह भी उन्हीं के साथ मर गई।

अब फिर अंधेरा छा गया और आत्माएं, मनुष्य और जानवर डरने लगे। आत्माओं ने सोचा, हो न हो, दाई ने बच्चियों की कोई चीज चुरा ली और वे उसी के लिए इतना रो रही थीं। अब यह पता लगाने के लिए कि वह चीज क्या थी उन्होंने उसके शव को खोदकर बाहर निकाला। उन्होंने पाया कि उसकी दोनों आंखों को छोड़कर पूरा शरीर सड़-गल गया था। उन्होंने देखा कि उसकी आंखें बहुत बड़ीं हैं और वे अंधेरे में चमक रही हैं और उनमें उनकी अपनी परछाईं दिखाई दे रही थी। अपनी परछाइयों को देखकर उन्होंने समझा कि मरी हुई बच्चियां उन आंखों में जीवित हैं। वे उन्हें एक नदी के किनारे ले गए और पांच दिन पांच रात तक उसे पखारते रहे। इससे वे और अधिक तेजी से चमकने लगीं। पर लाख धोने-पखारने पर भी उन आंखों में से झांकती हुई आकृतियों को वे अलग नहीं कर सके।

आत्माओं ने एक बढ़ई को बुलवाया और उसने उन आंखों को इस जुगत

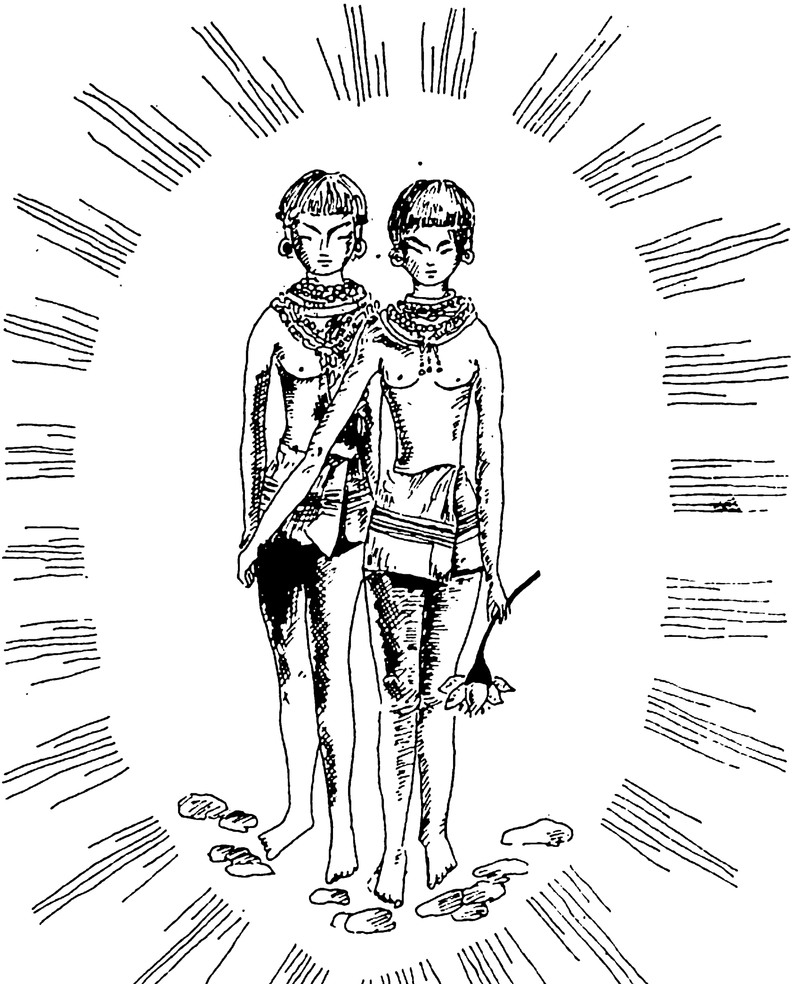

से चीरा कि परछाइयां हट गईं और वे दो जीवित लड़कियों में बदल गईं। उन्होंने इनमें से एक का नाम रखा सेदी-इर्कांग-बोमोंग और दूसरी का नाम रखा सेदी-इर्कांग-बोंग और उन्हें बड़े जतन से अपने घर में रखा।

पर जब वे बड़ी हुईं तो एक दिन बोमोंग ने खूब चटकीले कपड़े और बहुत सारे गहने पहने और सज-धजकर दुनिया की सैर पर निकल पड़ी। वह अपने घर से बाहर निकली ही थी कि चारों ओर उजियाला फैल गया

और दिन हो गया। वह पहाड़ियों के पार चली गई और फिर लौटकर आई ही नहीं।

बहुत समय बीत गया तो उसकी बहन बोंग उसके पांवों के निशान देखती उसकी खोज में निकली। पर वह जहां भी जाती, उससे इतनी कौंध फूटती कि उससे चट्टानें दरक जातीं, और उसके ताप से पेड़ मुरझा जाते और आदमी अचेत हो जाते।

आत्माओं, आदमियों और जानवरों की सभा दुबारा जुटी और यह तय किया गया कि दोनों बहनों में से एक को मारना ही होगा। ऐसा करने में उन्हें डर भी लग रहा था इसलिए वे देर तक इस पर बहस करते रहे। अंत में मेंढक उनके रास्ते पर जाकर बैठ गया और धनुष संभाले इस लड़की के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। बोंग जब चमकती-दमकती लौटी तो उसने उसके दोनों बगल दो बाण मारे और वह मर गई। अब पहले जैसी गर्मी न रह गई और रोशनी उतनी चकाचक नहीं रह गई। पेड़ों में जान आ गई और आदमी फिर अपने काम-धंधे पर निकल पड़े।

पर लड़की का शव जहां पड़ा था वहीं पड़ा रहा। चूहा फुदकता हुआ आया तो उसे उसका शव मिल गया और वह उसे अपनी पीठ पर लादे हुए घिसटता-घिसटाता बोमोंग के पास ले चला। रास्ते में वह लुढ़क गया और तभी से चूहे के पांव टेढ़े हो गए। वह फिर भी संभलकर उठा और उस शव को एक ऐसी नदी के किनारे ले गया जहां से बोमोंग को गुजरना था। उसने अपनी बहन को देखा तो इस डर से जार-बेजार रोने लगी कि अब उसकी भी जान बचने वाली नहीं है। उसने एक ऐसा रास्ता पकड़ा जिसे कोई नहीं जानता था और अपने सिर पर एक पत्थर रखकर बैठ गई। पत्थर की परछाई के कारण दुनिया में अंधेरा छा गया।

इसके बाद आत्माएं, आदमी और जानवर डर गए और वे रोशनी की तलाश में निकले। बहुत देर तक उन्हें कुछ हाथ न आया। फिर उन्होंने चूहे, बनपाखी और मुर्गे को पकड़ कर खोई हुई बच्ची की तलाश के लिए भेजा।

चूहा और बनपाखी तो अपने-अपने धंधे में लग गए पर मुर्गे ने पूंरे धीरज से तव तक अपनी खोज जारी रखी जब तक बोमोंग मिल नहीं गई। वह उससे विनती करने लगा कि वह वापस लौट चले। उसने कहा, 'नहीं, उन्होंने मेरी बहन को मार डाला और अब मुझे भी मार डालेंगे। उनसे कह दो कि वे मेरी बहन को जिला दें तभी मैं वापस लौटूंगी। मुर्गा वापस लौटा और बोमोंग ने जो कुछ कहा था वह उसने सभी को सुना दिया। उन्होंने एक ऐसा बढ़ई तलाश किया

जिसने बोंग का शरीर गढ़कर तो तैयार किया पर उसका आकार छोटा रखा जिससे उससे मद्धिम ज्योति ही फूटे। उसने उसके भीतर प्राण डाल दिए और जब बोमोंग को पता चला कि उसकी बहन जी उठी है तो उसने पत्थर उतारकर फेंक दिया और उठकर खड़ी हो गई। दिन निकला और उजास फैली तो मुर्गा बोला, कोकोको-कोकोको , बनपाखी गाने लगा पेंगो-पेंगो, चूहा किंकियाने लगा टकटक-टकटक, क्योंकि उन्हें उजाले और गर्मी से मजा आ रहा था।

आसमान में नाचने वाले

जोगी झोरिया के सात लड़कियां थीं। सातों की सातो कुंवारी, हंसोड़ और सुंदर थीं। एक बार साल के सबसे बड़े त्यौहार पर उन्होंने दूसरे गांव की छोरियों के साथ नाच किया। नाचते-नाचते वे आनंद से मतवाली हो गईं। नाचते-

नाचते ही वे नगाड़ा बजाने वाले लड़कों के साथ खिंचती हुई कुछ इस तरह आकाश में उठती चली गईं जैसे कोई बाज उन्हें झपट ले गया हो। नाचते-नाचते ही वे बादलों के देवता के पास पहुंच गईं जो उनके नाचने से इतना खुश हुआ कि वह उन्हें धरती पर लौटने ही नहीं दे रहा था। उसने कहा, 'जब मैं धरती पर बरसात करूं तो तुम सभी आकाश में नाचती रहोगी और नगारे बजाने वाले लड़के नगाड़े बजाएंगे। उसने लड़कियों का नाम बिजली और लड़कों का नाम गर्जन रख दिया।

यह कहानी तो उड़ीसा की है। ऐसी ही एक प्यारी कहानी पूर्वी भारत में नोक्टे लोगों के बीच कही जाती है।

इसके अनुसार दो भाई हैं जिनमें बड़ा तो धरती पर रहता है और छोटा आसमान में। समय-समय पर छोटा भाई नाचने लगता है और बरखा की झड़ी नीचे की ओर फेंकता है। फिर वह सुंदर धरती की सुघड़-सजीली लड़कियों से पूछता है कि क्या उन्होंने इतने सुंदर मनके जीवन में कभी पहने हैं। कभी-कभार वह धरती पर बिजली भी गिराता है और पूछता है कि क्या धरती के लोगों के पास ऐसा जादू है? कभी-कभी वह नगाड़े बजाने लगता है और जब यह पूरे आकाश में धमकने लगता है तो पूछता है कि क्या धरती के लोगों के पास इसके जोड़ का कोई संगीत है?

मिसमी लोगों में रसिकता कुछ कम है। उनका कहना है कि बादल सूअरों के बाल हैं। आसमान में विशाल लड़ियों का बना हुआ एक रास्ता है और बादलों के सूअर इसी के आस-पास घूमते रहते हैं। जब दो सूअरों का सामना होता है तो वे आपस में लड़ने लगते हैं। उनके बाल एक दूसरे से रगड़ाते हैं और इस रगड़ से पूरी दुनिया में बिजली चमकने लगती है। सूअर लड़ते हुए जोर-जोर गुर्राते हैं और यही बादलों की गर्जना है।

इंद्रधनुष

जल की चार आत्माएं हैः लुकार्पो जो श्वेत आत्मा है, लुनाक्पू जो काली है, लुसिर्पू जो पीली है और लूमार्पो जो लाल है। वे जल में निवास करती हैं और अपने जैसी ही सुंदर बहूटियों की तलाश में आकाश में एक छोर से दूसरे तक घूमती रहती हैं। उनके चलने से जो रास्ता बनता है वही इंद्रधनुष है। जब वे इसे पार करती हैं तो हल्की झींसी पड़ती है। यह झींसी उस चाय और मंडा की है जिसे वे अपनी यात्रा में थकान मिटाने के लिए पीती हैं।

भूखे बच्चे

बहुत पहले दो भाई अपनी पत्नियों के साथ फांग लांगरा पहाड़ पर रहते थे। उनके बच्चे तो बहुत थे पर खाने को कुछ नहीं था। हारकर एक दिन वे पहाड़ पर खूब ऊंचाई तक चढ़े पर वहां भी खाने को कुछ नहीं मिला। निराश होकर वे अपने बच्चों को छोड़कर आगे चले गए। बच्चे आकाश की ओर सिर उठाकर भूख से रोने लगे।

दूर आसमान में बादलों के भीतर लुजुफू और जसुजू ने खूब सारा भात जुटा रखा था। उन्होंने बच्चों को रोते सुना तो उसे उठा-उठाकर नीचे फेंकने लगे। यह भात धरती पर बर्फ बनकर गिरने लगा।

पहली नदियां

ब्रह्मपुत्र नदी सूरज की बहन है। सूरज के भाग अच्छे हैं कि वह आकाश में चलता है जहां कोई ऐसी रुकावट नहीं जिससे उसके रास्ते में बाधा पड़े। उसका जी जिधर जाने को करे उधर जा सकता है। पर शुरू में ब्रह्मपुत्र को धरती पर चलने में बहुत अड़ंगे पड़े। उस समय वह दुनिया के छोर पर स्थित निम्तुब्रम नाम की विशाल झील में रहती थी। पर दुनिया के दूसरे हिस्सों में पानी था ही नहीं और पानी न होने के कारण आदमी और जानवर निढाल हो रहे थे।

कीड़ा प्यासा था और वह पानी पीने आया। उसने एक पतली सी नाली बनाई और जरा-मरा पानी उससे बहकर नीचे को आया। बनबिलार की नजर इस पर पड़ी और उसने पानी पीने की कोशिश की पर एक तो वह बहुत कम था, दूसरे मटियाला था। अब वह निम्तुब्रम झील पर गया और एक चौड़ी सी धारा निकाली। उससे जितना पानी पीते बना, पिया, और उसके बाद वहां से चलता बना। ब्रह्मपुत्र उसके पीछे लग गई। जिधर-जिधर से वह बनबिलार गया, उधर-उधर से देश-देशांतर पार करती ब्रह्मपुत्र उसके पीछे-पीछे चलती रही।

जब द्राबुक देवता ने देखा कि यह हो क्या रहा है तो वह भागा-भागा उन्हें रोकने को आया। वह अपने साथ मिट्टी से भरा एक टोकरा ले आया था और उससे उसने ब्रह्मपुत्र के रास्ते में एक बांध बांध दिया। दूसरा देवता, चैन्ये ने

इसके बारे में सुना तो यह सोच कर झल्ला उठा कि जिस पानी के लिए मनुष्य तरस रहे थे क्या अब वह उन्हें मिल ही नहीं पाएगा? वह द्राबुक के पास गया और बोला, 'भाई, तुम तो गजब के कारीगर हो। तुम दुनिया बनाते हो और अब तुम ब्रह्मपुत्र को इधर-उधर भटकने से रोकना चाहते हो। तुमने जो कुछ किया वह आला दर्जे का काम है पर मैं तुम्हें एक बुरी खबर सुनाना चाहता हूं। तुम्हारी लुगाई तुम्हारे अपने घर में ही चल बसी। वापस जाओ और देखो।'

द्राबुक बोला, 'इसमें क्या धरा है; एक लुगाई मर गई तो मुझे एक हजार लुगाइयां और मिल जाएंगी।'

चैन्ये ने सोचा था कि द्राबुक चला जाएगा तो वह बांध तोड़ देगा। अब उसे निराश होकर वापस लौटना पड़ा।

पर उसने हार न मानी। उसने दुबारा कोशिश की। इस बार उसने कहा, 'इस बार की खबर तो और बुरी है। तुम्हारा लड़का मर गया।'

द्राबुक बोला, 'तो क्या हो गया; एक लड़का मर गया तो एक हजार पैदा कर लूंगा।'

चैन्ये को इस बार भी निराश लौटना पड़ा।

लेकिन उसे तो आदमियों की इतनी चिंता लगी हुई थी (वह सोच रहा था कि वे बेचारे पानी के बिना जीवित कैसे रहेंगे?) कि उसने एक बार फिर कोशिश की। इस बार उसने कहा, 'तुम्हारी लुगाई मर गई और मैं भी मानता हूं कि इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम्हारा लड़का मर गया तो भी कोई बात नहीं। पर अब तो तुम्हारी मां मर रही है।'

द्राबुक ने मन ही मन कहा, 'सच तो, लुगाइयां और बच्चे तो बहुत सारे मिल जाएंगे, लेकिन मुझे दूसरी मां तो कभी नहीं मिलेगी। मुझे उसे तो जाकर देखना ही होगा।' सो उसने काम रोक दिया और वहां से चल दिया।

चैन्ये ने झट बांध तोड़ दिया और ब्रह्मपुत्र पहाड़ों के चक्कर काटती हुई तब तक चलती रही जब तक वह आसाम के मैदानों में न पहुंच गई।

उसका पानी जहां भी जाता वहां के आदमी और जानवर जी उठते।

यह कहानी पूर्वोत्तर भारत के ईदु मिशमी जनों में कही जाती है। नदियों के बारे में दूसरी कहानी उड़ीसा के कामरों में प्रचलित है।

बहुत पुराने जमाने में एक आदमी, उसकी औरत और उनका एक लड़का रहता था। एक दिन यह लड़का बीमार पड़ गया और उसके मां-बाप घबरा उठे। उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। वे यहां-वहां भाग-दौड़ करने लगे। कभी ओझा-सोखा को बुलाकर लाते, कभी दवा-दारू करते, कभी

देवी-देवताओं को बकरे और कबूतर की वलि देते। अंत में बूढ़े आदमी को एक बहुत नामी जादूगर का पता चला और उसने उसे किसी तरह अपने घर चलने को राजी कर लिया।

अभी वे रास्ते में ही थे कि वच्चे के प्राण निकल गए। घर में अकेली उसकी मां थी और वह जोर-जोर से विलाप करने लगी। बेचारी ! यह उसका इकलौता बेटा था। वह इतना रोई, इतना रोई कि उसकी आंखों से आंसू नदी की धार की तरह बहने लगे और वे आंसू जव धरती पर पड़े तो सचमुच नदी बन गए। औरत का रोना फिर भी नहीं रुका तो उस नदी में बाढ़ आ गई। जब लड़के का बाप सोखा को लिए अपने घर के पास पहुंचा तो क्या देखता है कि उनके सामने एक नदी है जो वेग से बह रही है और जिसने उनका रास्ता रोक रखा है। बूढ़ा डर गया। वह सोचने लगा कि अभी वह यहां से गया था तव तो यहां कोई नदी थी ही नहीं। इस बीच जरूर कोई अनहोनी बात हो गई है।' उसने सोखा से कहा, 'अब तुम घर जाओ। तुम्हारा अब कोई काम नहीं रह गया।'

अंत में मां का विलाप बंद हुआ और वाढ़ नीचे उतरी और उसका पति नदी को पार करके अपने घर पहुंचा। उसने पाया कि उसका लड़का मर चुका है। उसने अपनी पत्नी से कहा, 'तुमने इतना विलाप न किया होता तो मैं सोखा को लेकर घर पहुंच गया होता और हो सकता है वह हमारे बेटे को

बचा लेता।'

पर उसने जवाब दिया, 'मैं तो दुनिया में नदी बनाने के लिए रोई थी।'

वह बिगड़कर चीखा, 'तुम्हारा मतलब है, तुमने नदी बनाने के लिए हमारे बेटे की जान ले ली?'

उसने उस औरत को नदी को वलि चढ़ा दिया और इसके वाद अपने भी उसी में कूदकर डूब गया। इस तरह वे सभी मर गए पर दुनिया बहते हुए सजीव जल से लहलहा उठी।

धरती कांपती क्यों है

जब भीम राजा महुल्लक्टा पहाड़ी पर रहते थे तो उन्होंने एक सरकार बनाई। वह वारी-वारी हर एक गांव से लोगों को बुलाते और उनसे महल में काम करवाते। घर-घर से एक आदमी काम वजाने के लिए जाता। राजा ने यह भी तय किया कि घर-घर से साल में दो बार लगान उगाही जाएगी। उसे अपनी प्रजा के हाथ से धन लेना गवारा न था। उसने आदेश दिया कि वे खरहे पर सिक्कों की थैलियां लादकर उन्हें महल की ओर हांक दें।

इसके कारण लोगों को अपने घरों में छोटे-छोटे खरहे रखने पड़े। जब खरहे बड़े हो गए तो चार-छह गांव मिलकर ही एक खरहे को लाद पाते। वे उसकी लदाई कुछ अधिक कर देते थे इसलिए वह दौड़ नहीं पाता था और एक दिन की दूरी एक महीने में पार करता था। लोगों को इससे बहुत कठिनाई हो रही थी इसलिए उन्होंने राजा की जान लेने का फैसला किया। वे वोले, 'एक बार हमने राजा की जान ले ली तो हम सभी चैन से रहेंगे।' उन्होंने अपने-अपने हथियार संभाले और महल के पास जा पहुंचे।

राजा के दो लड़के थे और दोनों अभी बच्चे थे। जिस समय विद्रोही पहुंचे, राजा दरवार में था। वे दरवार में घुस गए और उसको वहीं मार डाला। रानी ने यह समाचार सुना तो उसने अपने बच्चों को एक तहखाने में छिपा दिया और उसके दरवाजे पर ताला लगा दिया। उसने अपने रुपये-पैसे और गहने एक पेटी में रखे और इसे कुएं में डाल दिया। इसके वाद वह और उसकी बांदियां कुएं में कूद पड़ीं और डूब गईं। राजा के अमलों-पियादों में कुछ मारे गए, कुछ दुवक गए और कुछ भाग खड़े हुए। विद्रोहियों ने बच्चों की खूब तलाश की पर वे इस तरह छिपाए गए थे कि उनके हाथ न लगे।

वे दोनों लड़के बाहर निकलकर अपने माता-पिता की मौत का बदला लेना

चाहते थे। वे जोर-जोर से तहखाने के दरवाजे को पीटते पर वहां कोई सुनने वाला ही न था। फिर वे दरवाजे को जोर-जोर से हिलाने लगे और इसके साथ ही सारी दुनिया हिलने लगी। आज भी वे कभी-कभी दरवाजे को झकझोरते हैं और धरती कांपने लगती है।

पहले लोग

लोग रास्ते से कैसे भटक गए

पहाड़ के लोगों में मनुष्य की उत्पत्ति की अनेक कहानियां पाई जाती हैं। कुछ में कहा गया है कि ईश्वर ने मिट्टी से अपने हाथों आदमी को गढ़ा, कुछ के अनुसार वे एक विशाल अंडे से निकले। वे धरती माता के गर्भ से, एक दरार से प्रकट हुए, वे एक देवी की कोख से पैदा हुए, यह भी कि वे जानवरों से पैदा हुए।

पर सभी कहानियों में एक बात पाई जाती है कि वे आए जैसे भी, पर आज की तुलना में वे बहुत अलग किस्म के लोग थे। यही बात नीचे की कहानी में भी दिखाई गई है। उड़ीसा की सवर जाति में यह कहानी चलती है कि पहले-पहल आदमी के दुम हुआ करती थी।

जिन दिनों आदमी के दुम हुआ करती थी, वे उससे जमीन बुहारा करते थे। जब आबादी बढ़ चली तो चलते समय दुम बीच में आ जाती थी और शादी या मौत के समय जब बहुत से लोग एक जगह जुटते तो उनकी दुम किसी न किसी के पांव के नीचे आ जाती और वे पलटी खा जाते। इससे लोगों को बहुत मजा आता।

एक दिन महादेव किट्टुंग बाजार गया और वहां, जैसा कि होता ही है, खूब भीड़-भाड़ थी। वह अच्छी तमाकू की टोह में एक दुकान से दूसरी को देखता घूम रहा था कि इसी समय किसी ने उसकी दुम पर पांव रख दिया और वह कलैया खा कर मुंह के बल जा गिरा। बुरा यह हुआ कि वह टकराया भी तो एक पत्थर से जिससे उसके आगे के दो दांत टूटकर बाहर आ गए। पूरा बाजार ठहाका लगा उठा और किट्टुंग देवता आपे से बाहर हो गया। उसने अपनी दुम को पकड़ा और उसे खींचकर बाहर निकाला और एक ओर फेंक दिया। दूसरों की दुमों ने यह देखा तो वे डर गईं और वे अपने आप

अपने-अपने शरीर से अलग होकर भाग खड़ी हुई। किट्टुंग की दुम तो सागू का पेड़ वन गई। दूसरी सभी घास वन गईं जिससे आज कल झाड़ू बनाई जाती है।

पहले लोग नन्हें से थे

बस्तर के मुड़िया कहते हैं कि पहले लोग बहुत नन्हें-नन्हें हुआ करते थे।

दुनिया जब नई-नई थी, उस समय न सूरज था, न चांद और आकाश एवं धरती पति-पत्नी थे। वे एक दूसरे से सटे हुए थे। आदमियों को इनके बीच में ही दुवककर चलना होता था इसलिए उनको बहुत नन्हा तो होना ही था। वे हल में चूहों को जोतते थे और यदि उनको बैगन तोड़ना होता तो वे उसके पौधे पर कुछ उसी तरह चढ़ते थे जैसे आज कोई आम तोड़ने के लिए आम के पेड़ पर चढ़ता है। इधर-उधर आते-जाते उनका सिर अक्सर आसमान से टकरा जाता।

यही सिलसिला लंबे समय तब चलता रहा और वे इससे तंग आ गए। एक दिन एक बुढ़िया अपने पेड़ के पास बगीचे में झाड़ू लगा रही थी और उसकी झाड़ू आसमान से जा टकराई। उसको इस पर बहुत ताव आया। उसने आसमान की इतनी जमकर पिटाई की कि यह भाग खड़ा हुआ और वहां पहुंच गया जहां यह आज है।

इसके वाद आदमियों के बढ़ने के लिए खूब सारी जगह हो गई और उनका आकार बढ़कर आज जैसा हो गया।

आंखें कैसे मिलीं

पहले लोगों के पास आंखें नहीं होती थीं। तव वे एक दूसरे पर पिल्लों की तरह लुढ़कते-ढिमलाते हुए चलते थे। वे कोई काम तो कर नहीं सकते थे इसलिए वहुत लंबे समय तक जी भी नहीं पाते थे। एक दिन विधाता ने सोचा, 'मैंने अपने वच्चों के लिए सारा संसार रच दिया है। पता नहीं उनका हाल क्या है?' अपने हाथ में एक छड़ी लिए वह संसार के बीचोबीच आ पहुंचा। उसने लोगों को लुढ़कते-ढिमलाते देखा तो उसे बहुत दुख हुआ। उसने सोचा, 'इनकी यह दशा

इसलिए है क्योंकि इनके पास आंखें नहीं हैं।'

अब वह एक नदी के किनारे गया और वहां उसे बड़ी-वड़ी आंखों वाला एक केंकड़ा मिला। उसने सोचा, 'मुझे यही तो चाहिए था।' उसने केंकड़े को पकड़ना चाहा पर केंकड़े ने उसे डंस लिया और अपनी आंखों को अपने भीतर समेटकर अपने बिल में घुस गया।

विधाता जंगल में गया। उसने एक पेड़ पर बैठे हुए एक उल्लू को देखा। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं। उसने सोचा, 'इसी की तो मुझे जरूरत थी।' उसने उल्लू को पकड़ना चाहा पर उसने अपने टखने से उसका मुंह नोच लिया और अपनी आंखों को अपने शरीर के भीतर समेटकर उड़ भागा।

अब विधाता थक गया था। वह एक जामुन के पेड़ के नीचे बैठ गया। उसकी एक डाल पर एक कौआ वैठा हुआ जामुन खा रहा था। जामुन के कुछ बीज विधाता के ठीक सामने ही आ गिरे। उसने सोचा, 'आंखें तो इससे भी बहुत सुंदर बनेंगी।' उसने उन बीजों को उठा लिया और आदमियों के चेहरे पर लगा दिया और इसके बाद वे देखने लगे।

लोगों को आंख तो मिल गई थी, फिर भी आंखों पर पलकें नहीं थीं इसलिए वे आंखें खोले-खोले ही सोते थे। आदमी लेटा हो तो यह बताना संभव नहीं था कि वह जगा हुआ है या सो रहा है।

एक रात एक बूढ़ा और बुढ़िया अपने लड़के और लड़की के साथ अपने झोपड़े में सोए हुए थे। उसी समय तीन जलपरियां उनसे मिलने आईं। उन्होंने देखा कि लोग आंखें खोले हुए लेटे पड़े हैं और कोई उनकी आव-भगत करने को आगे नहीं बढ़ रहा है तो उनकी समझ में नहीं आया कि उन्हें हुआ क्या है। भोर होने पर उन्होंने देखा कि सोते समय भी उनकी आंखें वैसे ही खुली रहती हैं जैसे जागते समय। जलपरियों ने जब तालाब के निर्मल जल में अपनी छाया देखी और पाया कि उनकी आंखों के ऊपर तो पलकें और बरौनियां हैं तो मनुष्यों की आंखों पर उन्हें बहुत हैरानी हुई। अब वे जंगल में गईं और एक मोर के पंख के कोर काटकर ले आईं और उन्हें बूढ़े, बुढ़िया, लड़के और लड़की की आंखों पर चिपका दिया। इसके बाद उनकी पलकें उठने और गिरने लगीं और जब वे सोते तो वे अपनी आंखों को बंद कर सकते थे।

लोगों ने बोलना कैसे शुरू किया

पहले लोगों के पास जीभ न थी और वे बोल नहीं सकते थे। विधाता इस सोच

में थे कि इसको ठीक कैसे किया जाए। वह सोचते रहे, सोचते रहे, पर उन्हें कोई उपाय नहीं दिखाई दे रहा था। एक दिन वह नहाने गए। नहाने के बाद वह अपने शरीर को सुखाने के लिए एक चट्टान पर बैठ गए। चट्टान के नीचे एक बिल था और उसमें एक मेढक और मेढकी रहती थी।

मेढक ने मेढकी से कहा, 'कल मूसलाधार वर्षा होने वाली है। इससे चारों ओर बाढ़ आ बाढ़ आ जाएगी जिसमें हमारे बच्चे बह जाएंगे।'

विधाता ने मेढकों को बात करते सुना तो उसने उन्हें पकड़ लिया और उनकी जीभ को ध्यान से देखा। उसे जिस चीज की तलाश थी वह मिल गई। उसने उनकी जीभ काटी और उसे लाकर आदमियों के मुंह में लगा दिया। उसके बाद से आदमी बोलने लगे।

Acc. No. 91261
23-2-99

बड़े कान

एक समय ऐसा भी था जब आदमी के कान बहुत वड़े-बड़े थे। वे इतने बड़े थे कि एक आदमी एक कान को चटाई की तरह बिछाकर सो सकता था और दूसरे को कंबल की तरह ओढ़ सकता था।

एक बार जब विधाता शिकार करने निकले हुए थे, उन्होंने आदमी को जानवर समझ लिया क्योंकि उसका शरीर उसके वड़े-बड़े कानों से छिपा हुआ था। उन्होंने आदमी को अपने बाण से मार दिया। जब उनकी नजर उसके शरीर पर पड़ी तब उन्हें इस वात का बहुत मलाल हुआ कि उनसे एक आदमी की हत्या हो गई। उन्होंने उसके कान को कतर दिए जिससे फिर ऐसी चूक न होने पाए और आदमी के प्राण उसे लौटा दिए।

उस समय के वाद से आदमी के कान छोटे हो गए, जैसे वे आज भी हैं।

औरतों की दाढ़ी और मूंछ कहां गई

बहुत पहले औरतों के भी दाढ़ी और मूंछ होती थी। उन दिनों जंगल का राजा बाघ हुआ करता था। उसका एक लड़का था। जब वह बड़ा हुआ तो उसका बाप अपनी पतोहू के लिए जगह-जगह लड़की की तलाश करता फिरा पर उसे कोई जंच ही नहीं रही थी।

बाघ ने सारे जानवरों से कहा, 'तुम कोई भी सुंदर लड़की ढूंढ़कर लाओ, मैं उससे अपने बेटे का ब्याह कर दूंगा।'

जानवरों ने सुना तो सोचने लगे, 'यदि मेरी बेटी बाघ की पतोहू बन जाए तो वह जंगल की रानी कहाएगी!'

वकरी एक बुढ़िया की सेवा-टहल किया करती थी। जब उसने वाघ के ऐलान की बात सुनी तो उसने अपनी मालकिन से कहा, ' तुम मुझे अपनी दाढ़ी और मूंछ दे दो जिससे मैं इतनी सुंदर हो जाऊं कि शेर अपने लड़के से मेरा ब्याह कर दे। उसके दो तीन दिन बाद आकर मैं तुम्हें तुम्हारी अमानत लौटा दूंगी।'

औरत ने अपनी दाढ़ी और मूंछ नोचकर अलग किया और बकरी के मुंह पर लगा दिया। वह एक बार जंगल को गई तो फिर उलटकर नहीं आई और उसी समय से औरतों के मुंह पर बाल नहीं रह गए।

जब ज़िंदगी नीरस थी

उड़ीसा के कोंड कहते हैं कि पहले पहल जब तक गुदगुदी नहीं पैदा हुई थी लड़के और लड़कियां बहुत गंभीर होते थे। वे एक साथ बैठकर अपने उधार और कर्ज के बारे में, अपनी फसल की दशा के बारे में बात किया करते थे पर एक दूसरे के साथ हंसी-ठिठोली या रंगबाजी नहीं करते थे।

जब निरंताली देवी ने यह सब देखा तो उसने सोचा यह तो बहुत मनहूस बात है। उसने कहा, 'कोई ऐसी जुगत होनी चाहिए जिससे दुनिया में कुछ मौज-मस्ती आए। इसके बाद वह जंगल में गई और वहां उसने मोम लेकर गुदगुदी का कीड़ा बनाया। वह लौटकर घर आई और उसे लड़कों और लड़कियों के पेट की ओर रवाना कर दिया।

उसने उससे कहा, 'जब तुम भीतर चले जाओ तो फिर ठोड़ी के नीचे, कांख में और पसलियों के भीतर बस जाओ और जैसे ही कोई बाहर की चमड़ी को छुए, तुम भीतर ही भीतर दौड़ लगाने लगो। इससे उनको मजा आएगा और वे हंसना चाहेंगे।'

गुदगुदी का कीड़ा लड़कों और लड़कियों के शरीर में घुस गया। आठ दिन के बाद निरंताली यह देखने गई कि अब उनका क्या हाल है। अब वहां न उधार-कर्ज की बात हो रही थी, न खेत-बगीचे की। वहां हंसी-ठिठोली, प्रेम और किल्लोल को छोड़कर कुछ था ही नहीं। निरंताली ने एक लड़की की कमर पर हाथ लगाया, वह तुरत खिलखिलाने लगी।

यहां से आदमियों के लिए एक नई खुशी शुरू हुई।

बहादुर बच्चे

एक कहानी के अनुसार दुनिया के आरंभ में ऐसे विचित्र और रंगीन दिन भी थे जब देवता और आदमी, जानवर और दानव सभी साथ रहते और आपस में बात करते थे। यह कहानी अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम की ओर पहाड़ियों में रहने वाले अकस जनों के बीच सुनने में आती है।

बहुत पहले आवा नाम का एक आदमी रहता था। उसका शरीर तो भालू की तरह झबरा था फिर भी किसी जुगत से उसने सूरज की बेटी जुसम से ब्याह रचा लिया था। विवाह के समय सूरज ने उसे मुर्गी के पंख और

सूअर के कुछ बाल दिए थे। आवा अपनी दुल्हन को अपने घर ले आया और कुछ समय बाद उसके जुड़वां बच्चे पैदा हुए। इनमें एक लड़का था और दूसरी लड़की। वे अपने लड़के को सिबजी-साओ और लड़की को सिबजिम-साम कह कर बुलाते।

जब बच्चे कुछ बड़े हुए तो दोनों बीमार पड़ गए। बाप ने पुरोहित को बुलवाया और उसने कहा कि यदि आवा ने मुर्गी और सूअर की बलि दी तो बच्चे चंगे हो जाएंगे। लेकिन उसने यह भी कहा कि मुर्गी और सूअर जंगली नहीं पालतू होने चाहिए।

भाग्य का खेल यह कि आवा ने न तो मुर्गी पाल रखी थी न ही सूअर। उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह इनका जुगाड़ कहां से करे। उसकी लुगाई ने उसे इतना अनमना देखा तो इसका कारण पूछा। उससे जो बात

पुजारी ने कही थी, वह उसने उसे सुना दी। जुसम ने कहा, 'घबराने की कोई बात नहीं, तुम बांस का एक पिंजड़ा और काठ की एक कठौत बनवाओ।'

आवा ने बांस का पिंजड़ा और उसके पास ही एक कठौत वनवाई। जब सब कुछ बनकर तैयार हो गया तो जुसम पिंजड़े के सामने बैठ गई। अपने पिता के घर से वह जो पंख ले आई थी उसमें से एक पंख लेकर उसने उस पर फूंक मारी तो पिंजड़े के भीतर झट एक मुर्गी और मुर्गा तैयार हो गए। फिर वह नाद के सामने बैठी। पिता के घर से वह जो सूअर के वाल ले आई थी उनमें से कुछ लेकर उसने फूंक मारी तो कठौत के सामने एक सूअर और सूअरी प्रकट हो गए।

सूअर और मुर्गे रोने लगे। जुसम ने अपनी छाती का दूध पिलाकर उनका ढाढस बंधाने की कोशिश की, पर वे दूध पी ही नहीं रहे थे। वह बोली, 'तुम लोग दूध तो पी नहीं रहे हो, फिर रो किसलिए रहे हो?'

सूअर-सूअरी और मुर्गे-मुर्गी ने कहा, 'क्योंकि हमें वहुत जोर भूख लगी है।'

जुसम ने कहा, मेरे पास तुम्हें खिलाने के लिए और कुछ भी नहीं है। इसीलिए तो मैं तुम्हें अपना दूध पिला रही थी।'

उन्होंने कहा, 'नहीं, हम और कुछ भी करें, पर तुम्हारा दूध नहीं पिएंगे क्योंकि उस हालत में तुम हमारी वलि नहीं दोगी और हमें तो बनाया ही वलि देने के लिए गया है।'

जुसम ने कहा, 'मेरे पास तो इसे छोड़ और कुछ भी देने को नहीं है। अब तुम्हें जो कुछ भी मिल सके उसे खाओ।'

कुछ ही देर बाद मुर्गी ने अंडा दिया और उसे सेकर उसमें से चूजा निकाल दिया। उधर सूअर ने एक वच्चा जन दिया। आवा ने चूजे और सूअर के छौने को ले जाकर उनकी वलि चढ़ा दी और उसके बच्चे चंगे हो गए।

इस तरह आवा और उसकी बहू के पास मुर्गी-मुर्गा और सूअर हो गए पर उनके पास अनाज तो था ही नहीं। जुसम ने आवा से कहा, 'मेरे पिता के पास जाओ क्योंकि उनके पास अनाज का भंडार है और यदि तुमने उनसे ठीक से मांगा तो उसमें से कुछ तुम्हें दे ही देंगे।'

आवा वोला, 'मुझे तो तुम्हारे पिता के घर का रास्ता ही नहीं मालूम है।'

इसलिए जुसम उसे रास्ता दिखाने के लिए कुछ दूर तक उसके साथ ही साथ गई और फिर बोली, 'अब तुम इसी रास्ते पर चलते जाओ। कुछ दूर जाने

के बाद एक तिराहा आएगा। ध्यान रहे, तुम्हें दाएं हाथ के रास्ते पर चलना है, बाएं रास्ते पर नहीं। यदि तुम बाएं वाले रास्ते पर चल पड़े तब तुम्हारी मुसीबतों का कोई ओर छोर न होगा।'

इसके बाद जुसम वापस आ गई और आवा अपने रास्ते हो लिया।

अब आवा उस तिराहे पर पहुंचा जहां से आगे का रास्ता दो ओर को जाता था। उसे अपनी बीवी की कही हुई बात याद आई और इसलिए उसने दाएं हाथ का रास्ता पकड़ा। लेकिन उस पर इतने सारे कांटे और गड्ढे थे कि उसने सोचा उससे जरूर चूक हुई है और वह पीछे लौटकर बाएं वाले रास्ते पर चल पड़ा।

वह काफी दूर तक चलता चला गया। अंत में वह एक गुफा के पास पहुंचा जिसमें एक काली, कानी, एक हाथ और एक छाती वाली डायन रहती थी जो आग के पास बैठी हुई थी। डायन ने उसे देखते ही उसके ऊपर एक जलती हुई लुकाठी फेंकी और इसके साथ ही वह कुत्ते में बदल गया। बेचारा आवा घिसटता-घिसटाता अपने घर को वापस लौटा पर उसका साहस घर के भीतर जाने का नहीं हो रहा था। वह अपने अगले दोनों पांव चौखट पर रखकर वहीं बैठ गया। इसी समय दोनों बच्चे सिबजी-साओ और सिवजिम-साम घर से बाहर निकले और उन्होंने उसे वहां पड़े देखा वे दौड़कर अपनी मां के पास गए और उससे कहा, ' द्वार पर एक अजीब सा जानवर बैठा हुआ है।'

उनकी मां झटपट घर के बाहर आई और कुत्ते को देखते ही उसे समझ में आ गया कि यह उसका मूर्ख पति ही है जिसने गलत रास्ता पकड़ लिया होगा। उसने बच्चों से कहा, 'ये तुम्हारे पिता हैं।'

पर बच्चों ने कहा, 'हमारे पिता तो लंब-तडंग आदमी हैं। यह हमारा पिता कैसे हो सकता है।

जुसम ने कहा, 'मेरी बात पर भरोसा नहीं है तो अपने हाथों पर थूक कर इस जानवर के सामने करो। यदि इसने उसे चाट लिया तो इसका मतलब हैं कि ये तुम्हारे पिता हैं, यदि नहीं चाटा तो यह कुछ और होगा।'

बच्चों ने वैसा ही किया और अपना हाथ बढ़ाया तो कुत्ते ने झट उसे चाट लिया। अब जुसम ने कहा, 'अब तो पता चल गया न कि ये तुम्हारे पिता ही हैं।'

बच्चों ने कहा, 'बात तो तुम्हारी ठीक है। ये हमारे पिता ही हैं।'

जुसम ने समझाते हुए कहा, 'हुआ यह कि तुम्हारे पिता मेरे पिता के पास अनाज मांगने जा रहे थे पर उन्होंने रास्ता गलत पकड़ लिया और अब

वे कुत्ता बन गए हैं। अब मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है कि मैं तुम दोनों को कैसे खिलाऊं। अब मेरे पास एक ही चारा रह गया है कि मैं खुद ही पिता जी के पास चली जाऊं। मैं वहां से कुछ बीज भेजूंगी और तुम लोग खेत तैयार करके उन बीजों को बो दोगे और इस तरह तुम दोनों को खाने को कुछ अनाज मिल जाएगा।' इस पर बच्चे रोने लगे। वे उसे छोड़ ही नहीं रहे थे इसलिए उसे शाम होने तक रुकना पड़ा। शाम को बच्चों को खाना खिलाकर मां ने उन्हें आग के पास सुला दिया और चुपके से अपने पिता के पास चली गई।

जब जुसम ने घर छोड़ा तो जंगल के प्रेतों ने देख लिया कि दोनों बच्चे इस समय अकेले रह गए हैं इसलिए वे उन्हें निगलने के लिए इकट्ठे हो गए। जब कुत्ते ने उनको आते देखा तो वह जोर से भौंका और उन्हें वहां से भगा दिया। भोर होने पर जब बच्चों ने पाया कि उनकी मां चली गई है तो बिलखते हुए कहने लगे, 'आओ, मां जहां गई है हम भी पीछे-पीछे वहीं चलें।' कुत्ता आगे-आगे चला और बच्चे पीछे-पीछे। वह वहां तक तो चला गया जहां तक का रास्ता उसे मालूम था, इसके बाद वह चुपचाप खड़ा हो गया। बच्चे आराम करने को बैठ गए और कुत्ते ने मन ही मन सोचा, 'बच्चे जब तक झपकी लेते हैं तब तक मैं चलकर सही रास्ते का पता लगा आऊं।

जंगल के प्रेतों ने बच्चों को अकेला देखा तो वे उन्हें खाने के लिए फिर एक जगह इकट्ठे हुए। बच्चों की नींद टूट गई और वे जान लेकर भाग खड़े हुए।

वे भागे जा रहे थे कि उनकी मुलाकात एक भालू से हो गई। उसने बच्चों से पूछा, 'बात क्या है? तुम लोग बेतहाशा भाग क्यों रहे हो?' बच्चों ने बताया कि जंगल के प्रेत उनका पीछा कर रहे हैं। भालू ने कहा, 'डरने की कोई बात नहीं। तुम्हारी रक्षा मैं करूंगा।' उसने उनको अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और एक ऊंचे पेड़ पर चढ़ गया और वहां एक डाली की चोटी पर उनको बैठा दिया। फिर वह नीचे उतरा और पेड़ के तने का छिलका हटा दिया जिससे प्रेत पेड़ पर चढ़ ही न पाएं। ऐसा करके भालू चला गया।

भालू के चले जाने के बाद जंगल के प्रेत आए और पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करने लगे पर वह इतना चिकना हो गया था वे उस पर चढ़ ही नहीं पा रहे थे। अब वे उस पेड़ को दांत से काटने लगे। बच्चों ने यह देखा तो पेड़ से बोले, 'जब तुम गिरो तो खुले मैदान की ओर गिरना।'

जंगल के प्रेत चिल्लाए, 'पहाड़ की ओर गिरना।'

अंत में जब पेड़ गिरा तो मैदान की ओर गिरा। उसने यह काम बच्चों पर पसीजकर किया था। कारण, बुरी आत्माएं मैदान की ओर जा ही नहीं सकती थीं।

इस बार बच्चे बच तो गए, पर वे निपट अकेले थे। उन्होंने आपस में कहा, 'हमें किसी न किसी जुगत से अपनी मां का पता लगाना चाहिए।' अभी वे यह सोच ही रहे थे कि वे क्या करें कि एक गिद्ध उड़कर नीचे आया और उसने बच्चों से पूछा, 'क्या बात है?'

जब उन्होंने पूरी बात बताई तो उसने कहा, 'मेरा तो यह काम ही है कि मैं मरी हुई लाशों की तलाश करूं और उनका रक्त सूरज के घर पहुंचाऊं।

बच्चों ने कहा, 'हम तो वहीं जाना ही चाहते हैं; हमारी मां सूरज की

बेटी है इसलिए जब तुम जाने लगो तो हमें भी साथ लेते चलना।'

गिद्ध ने कहा, तुम इतने भारी हो कि तुम दोनों को मैं एक साथ नहीं ले जा सकता। मैं तुममें से एक को ही ले जाऊंगा।

इस तरह उसने सिबजी-साम को अपनी पीठ पर चढ़ाया और उड़कर सूरज के घर पहुंच गया। जब जुसम ने अपनी लड़की को देखा तो उसे बड़ी खुशी हुई और उसने उसे बीजों से भरा हुआ एक बड़ा सा टोकरा दिया। उसने उसके बालों से एक रस्सी बांध दी और उसी से उसे धरती पर, अपने घर के सामने ही, उतार दिया। बच्ची घर पहुंची तो उसने कुछ अनाज पकाया और उसकी मंडा बनाई और फिर घर के सामने बाहर बैठकर अपने भाई के लौटने की राह देखने लगी।

सिबजी-साओ जहां खड़ा था वहीं खड़ा रह गया क्योंकि बहुत समय बीत जाने पर भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। वह इस उधेड़ बुन में पड़ा ही हुआ था कि उसका बाप जो अपने बच्चों को देर से इधर-उधर ढूंढ़ रहा था, उसे मिल गया। उसने सिबजी-साओ को देखा तो उसके ऊपर उछलकर उसका मुंह चाटने लगा और दुम हिलाते हुए भौंकने लगा। फिर वह उसे लेकर घर की ओर लौटा। वे घर पहुंचे तो सिबजी-साम ने उन दोनों के लिए खाना बनाया और पीने को खूब सारी मंडा दी क्योंकि फिर मिल जाने के कारण वे सभी बहुत प्रसन्न थे।

खोजें

घर कैसे बनाएं

पहाड़ी लोगों में इस बात को लेकर अनेक कहानियां चलती हैं कि उनके पुरखे पहले कैसे रहते थे। कुछ गुफाओं में बसते थे; कुछ चिड़ियों की तरह पेड़ों पर रहते थे, कुछ ने घास-फूस के छोटे-छोटे झोपड़े बना रखे थे। उड़ीसा के सवर पुराने दिनों का जो हाल बयान करते हैं वह इस प्रकार है :

पहले लोग पेड़ों के नीचे रहते थे। उस समय उनका कद छोटा हुआ करता था—बहुत हुआ तो दो हाथ ऊंचा। बरसात के दिनों में उनको बहुत परेशानी होती थी, इसलिए उन्होंने खरगोश की तरह जमीन में बिल बनाकर उसमें रहने की ठानी। ऐसा करते समय ऊपर की छत धंस गई और उनमें से कई जीते जी दब गए और दुनिया के लोगों की संख्या पहले से कम हो गई।

बहुत समय बाद जंगू सवर नाम के एक आदमी को मकान बनाने की बात सूझी। उसने ताड़ के पत्ते लेकर उनसे छाते के आकार का घर बनाया। यह एक ही खंभे पर टिका था, इसकी छत गोलाकार थी और इसमें दीवारें नहीं थीं। मनुष्य बहुत लंबे समय तक ऐसे ही मकानों में रहते रहे और सवर आज भी अपने मंदिर इसी तरह बनाते हैं। इसके बाद वे लकड़ी और गीली मिट्टी के मकान बनाने लगे। ये मकान सूखे और गर्म होते थे। अंत में एक दूसरे के साथ रहने के लिए उन्होंने गांवों में अपने मकान बनाए।

पूर्वोत्तर भारत के सिंगफो जनों में इस बात की बहुत लंबी-चौड़ी कहानी सुनने को मिलती है कि मनुष्य को बहुत सारे जानवरों ने कैसे मकान बनाना सिखाया।

जिन दिनों लोग गुफाओं में और पेड़ों पर रहते थे उन दिनों किन्द्रू-लालिम और किंचा-लाली-दाम नाम के दो मित्रों ने अपने लिए घर बनाने की

ठानी। मुसीवत यह थी कि उनको यह पता ही नहीं था कि मकान बनता कैसे है। इसलिए वे इसके बारे में विचार करने के लिए जानवरों के पास गए।

उनके सामने जो पहला जानवर पड़ा, वह था हाथी। उन्होंने उससे पूछा, 'हम लोग अपने लिए घर बनाना चाहते हैं। क्या तुम बता सकते हो कि घर कैसे बनाया जाता है?'

हाथी ने कहा, 'मेरे पांव जैसे मोटे और मजबूत खंभे काटो।'

उन्होंने पूछा, 'फिर उसके बाद?'

हाथी वोला, 'आगे का तो मुझे कुछ पता नहीं।'

दोनों मित्र आगे बढ़े। उनको एक सांप मिला और उन्होंने उससे कहा, 'हम लोग एक घर बनाना चाहते हैं। क्या तुम बता सकते हो कि घर कैसे बनाया जाता है? हाथी ने हमसे अपने पांव जितने मोटे और मजबूत खंभे बनाने को कहा, पर इससे आगे वह कुछ नहीं बता पाया।'

सांप ने कहा, 'मेरे शरीर की तरह लंबी और पतली बल्लियां काटो।'

उन्होंने पूछा, 'इसके बाद क्या करें?'

सांप बोला वह तो मुझे भी नहीं मालूम।

वे और आगे बढ़े। उन्हें एक भैंस मिली जो अपने मर्द के मरे हुए शरीर के पास खड़ी थी। दूसरे जानवरों ने उसका मांस मज्जा सब खा लिया था। अब उसका कंकाल ही बचा रह गया था।

दोनों मित्रों ने भैंस से कहा, 'हम लोग अपने लिए घर बनाना चाहते हैं। क्या तुम बता सकती हो कि घर कैसे बनाया जाता है? हाथी ने हमसे अपने पांव जितने मोटे और मजबूत खंभे बनाने को कहा। सांप ने कहा, 'मेरे शरीर की तरह लंबी और पतली बल्लियां काटो। पर इससे आगे वह भी कुछ नहीं बता पाया।'

भैंस भैंसे के कंकाल की ओर इशारा करके बोली, 'बल्लियों को आड़े-पड़े लगाते हुए इस ढांचे की तरह एक छत बनाओ।'

उन्होंने पूछा, 'उसके बाद क्या करें?'

भैंस बोली, 'यह तो मुझे मालूम ही नहीं।'

वे आगे बढ़े। उनकी भेंट एक मछली से हुई।

उन्होंने मछली से कहा, 'हम लोग अपने लिए घर बनाना चाहते हैं। क्या तुम वता सकती हो कि घर कैसे वनाया जाता है? हाथी ने हमसे अपने पांव जितने मोटे और मजवूत खंभे बनाने को कहा। सांप ने कहा, 'मेरे शरीर की तरह लंबी और पतली बल्लियां काटो।' भैंस ने कहा, 'बल्लियों को आड़े-पड़े लगाते हुए

हड्डी के ढांचे की तरह एक छत बनाओ।' पर इससे आगे वह भी कुछ नहीं बता पाई।'

मछली ने कहा, 'मेरे शरीर के ऊपर के चोंइटे को देखो। खूब सारी पत्तियां इकट्ठी करो और अपनी छत पर उन्हें उसी तरह सजा दो जैसें मेरे शरीर के ऊपर चोंइटे हैं।

यह सुनने के वाद दोनों साथी अपने घर लौटे और उन्होंने पहला मकान वनाया।

हथौड़ा और चिमटा

इन्तुपवा नाम का एक कारीगर था जो पैने पत्थरों से लकड़ी काटने की कोशिश कर रहा था। इससे बात बन नहीं रही थी। वह इससे अच्छी किसी और चीज की खोज में निकला।

उसने सपने में लोहा नाम की किसी चीज को देखा था और वह पेड़ों से पूछने लगा कि लोहा कहां मिलेगा। पेड़ों ने जवाब दिया, 'हमने बता दिया तो तुम उससे कुल्हाड़ी बनाकर हमें काट डालोगे।'

फिर उसने घास से पूछा। घास ने कहा, 'हमने बता दिया तो तुम हंसिया वनाओगे और हमें काटकर साफ कर दोगे।'

उसने जंगली जानवरों से पूछा तो वे बोले, 'हमने बता दिया तो तुम तीर वनाओगे और हमारी जान ले लोगे।'

उसने पानी से पूछा तो पानी ने कहा, 'नुमरांग-निंगपू जाओ। तुम्हें वहां लोहा मिल जाएगा।'

इन्तुपवा उस जगह गया, पर वहां उसे लोहा नहीं मिला। वहां एक देवी रहती थी। जिस दिन वह वहां पहुंचा था उसी रात देवी ने सोते समय एक बच्चे को जन्म दिया।

बच्चा पैदा हुआ तो वह आग की तरह लाल था, पर वह जैसे-जैसे ठंडा पड़ता गया वैसे-वैसे उसका रंग काला पड़ता गया। इन्तुपवा ने उसका थोड़ा सा हिस्सा काटा और उसे लेकर घर चला आया। इसके बाद वह बच्चा टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। एक धारा उसे बहाकर ले चली और उसने उसे पूरी दुनिया में बिखरा दिया। इसके बाद लोहा जगह-जगह फैल गया।

इन्तुपवा को यह पता नहीं था कि जो लोहा उसे मिला है उसे गढ़कर तैयार कैसे करे। वह अपने घर के सामने बैठा इसी उधेड़-बुन में पड़ा हुआ था कि

उधर हाथी आ निकला। उसने जब देखा कि हाथी के पांवों के नीचे हर एक चीज कुचल जा रही है तो उसे पत्थर का हथौड़ा बनाना आ गया। अब उसने लोहे को गरम किया, पर उसे पकड़ने के लिए कोई संड़सी नहीं थी। वह लगातार कोशिश करता रहा और कोशिश करते-करते उसे प्यास लग आई। फिर वह पानी पीने के लिए नदी के पास गया। वह पानी पी रहा था कि तभी केंकड़ा आया और उसने उसका हाथ पकड़ लिया। वह दर्द से उछल पड़ा, पर जब उसने उसके चंगुल को देखा तब उसे समझ में आया कि उसे जो चीज चाहिए थी वह मिल गई। उसने झट एक संड़सी बनाई और फिर तो कुल्हाड़े, छुरियां और तीर के सिरे बनाने लगा।

कपड़ा कैसे चलन में आया

पहले लोग कपड़ा नहीं पहनते थे क्योंकि वे कपड़ा बुनना नहीं जानते थे। पहला बुनकर एक लड़की हुई जिसका नाम हम्ब्रुमाई था। उसे यह गुन माताई देवी ने सिखाया था। वह नदी के किनारे बैठ जाती, उसकी सतह पर उठती लहरों और हिलोरों को देखती रहती और उसी की नकल अपने नमूने में करती। वह जंगल में पड़ी-पड़ी पेड़ों की डालियों, बांस की पत्तियों से बनने वाले आकारों को देखती रहती; वह बूटों, पौधों और फूलों और दूसरी चीजों को देखा करती और उनसे दूसरे नमूने सीखती रहती। उसका काम उतना ही सुंदर था, जितनी सुंदर उसकी काया, और इसलिए बहुत से नौजवान उससे ब्याह करना चाहते थे।

पर एक दिन हेयरम नाम का साही उसका कपड़ा चुराने के लिए उसकी गुफा में घुस आया। गुफा का दरवाजा इतना संकरा था कि वह उससे भीतर जा ही नहीं सकता था इसलिए उसने उसकी चट्टान को धक्का दिया और इसके साथ ही वह नदी में जा गिरी। वह लड़की उसी के नीचे दब गई। उसका करघा टूटकर टुकड़े-टुकडे बहकर नीचे मैदान की ओर चला गया और वहां के लोगों को मिल गया। इससे उन्होंने बुनाई सीख ली। इससे जो नमूने तैयार हुए वे तितलियां बन गए और इनके पंखों के निशानों में आज भी वे नमूने देखे जा सकते हैं जो उस लड़की ने बनाए थे।

यह कहानी पूर्वोत्तर भारत के मिशमी लोग सुनाते हैं। उनके यहां एक और कहानी चलती है जो इससे कुछ अलग है।

खामलांग नदी में हाम्ब्रू नाम की एक मछली रहती थी। उसके शरीर पर

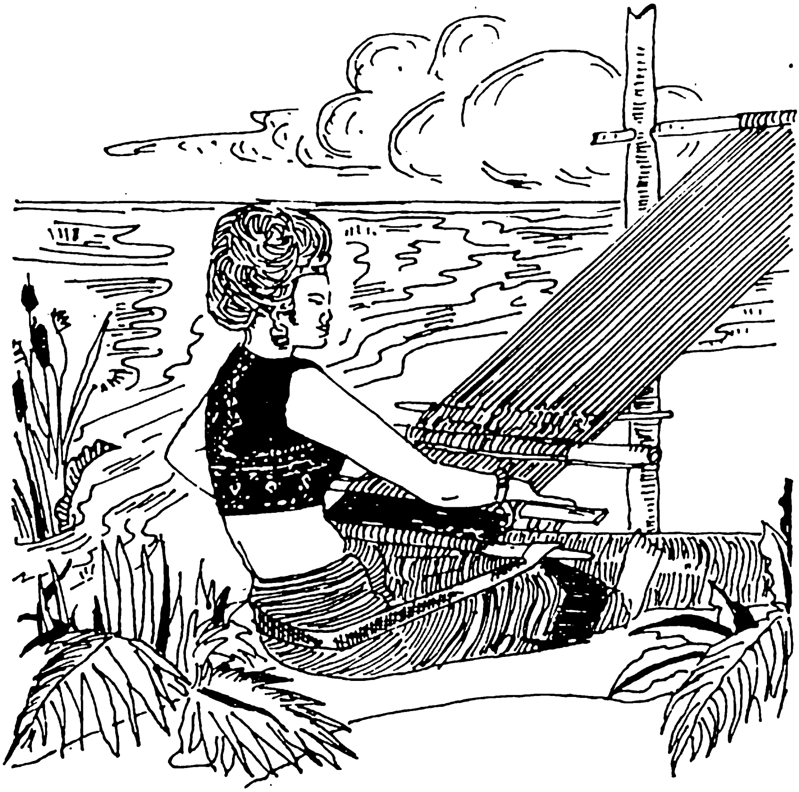

फूल बने हुए थे और उसके साथ लाल, सफेद और नीले, तीन रंगों का एक सांप रहता था। ये रंग बादलों में झलकते रहते हैं।

एक अनाथ लड़का था जिसका नाम कोवोन्सा था जिसे मछली मारने का बहुत शौक था। लेकिन उसे खेतों में इतना जीतोड़ काम करना पड़ता था कि उसे मछली मारने का मौका ही नहीं मिलता था। एक दिन उसने पानी में अपना फंदा लगाते हुए कहा, 'मेरे भाग्य में यदि मछलियां बदी होंगी तो अपने आप इसमें आ फंसेंगी।' भोर होने पर उसने पाया कि उसमें एक बड़ी और एक छोटी, दो हाम्ब्रू मछलियां फंसी पड़ी हैं और उसने समझ लिया कि यह देवताओं की कृपा से ही हुआ है।

कोवोन्सा ने छोटी मछली को आग में डालकर भूना और उसे चट कर गया। पर बड़ी मछली इतनी प्यारी थी कि उसने उसे तुमड़ी में डाल कर अपने घर में रख लिया। अगले दिन जब वह काम करके लौटा तो क्या देखता है कि

उसके घर में चारों ओर कपड़ा ही कपड़ा है। उस कपड़े पर मछली के चोंइटे और सांप की धारियां बनी हुई हैं। वह हैरान रह गया और उसको डर भी लगने लगा, क्योंकि इससे पहले किसी ने कपड़ा देखा ही नहीं था और कोई जानता नहीं था कि यह होता क्या है। यह सिलसिला कुछ समय तक चलता रहा। वह अपनी मछली को चारा खिलाता और काम पर निकल जाता और जब लौटता तो पाता कि कपड़ा और भी अधिक हो गया है। एक दिन वह अपने घर के बाहर छिप गया और झांककर भीतर देखने लगा। देखता क्या है कि मछली तूंबे से बाहर आई और लंबे केशों वाली एक लड़की में बदल गई। उसके पास एक करघा है और उससे उसने बहुत थोड़े समय में ही कपड़े के कई थान तैयार कर दिया है।

वह झट भीतर घुसा और उसने लड़की को पकड़ लिया और उससे पूछा, 'तुम कौन हो और तुम्हारा गोत क्या है?'

उसने जवाब दिया, 'मैं निमके से आई हूं। मेरा नाम हम्ब्रूमाई है और गोत हाम्ब्रू है।'

कोवोन्सा ने उससे ब्याह कर लिया और उसने वहां की सारी औरतों को कपड़ा बुनना सिखा दिया। जब उन औरतों ने उससे पूछा कि उसे बुनाई किसने सिखाई तो उसने कहा, जब मैं मछली थी तो मैं सांप के शरीर की धारियों की नकल करती थी और बादलों में उसके रंगों की जो छाया उभरती थी उसी को उतारती जाती थी। कोवान्सा ने कुछ कपड़े बाहर सूखने को डाले और हवा इसे बहाकर दूसरे गांवों में ले गई। वहां के लोगों ने भी कपड़ा बुनना सीख लिया। धीरे-धीरे यह कला पूरी दुनिया में फैल गई।

आग की खोज

जिन दिनों लोग आग से काम लेना नहीं जानते थे। उन्हीं दिनों बिल्ली और भालू का ब्याह हुआ। दुनिया के सारे जानवर उस ब्याह में शामिल होने को आए। दावत तो बहुत शानदार हुई, पर इतना तो जाहिर ही है कि कोई चीज पकी हुई नहीं थी। मेहमान शिकायत करते हुए कहने लगे, 'हम तो यह कच्चा मांस खाने से रहे। हमें तो कुछ स्वाद वाला भोजन चाहिए। इसके लिए कहीं से आग क्यों न जुटाई जाए?'

तेंदुए ने लकड़बग्घे से कहा, 'तुम जाकर ले आओ।'

लकड़बग्घे ने उलटकर जवाब दिया, 'तुम खुद क्यों नहीं लाते?'

तेंदुआ बोला, 'नहीं, इसे तो कोई बहुत ताकतवर जीव ही ला सकता है।'

अंत में बाघ ने कहा, 'चलो, मैं ही लाने जाता हूं।' अब वह कहीं से आग जुटाने को निकला।

बात यह है कि जुगनू ने दुनिया की सारी आग अपनी पूंछ में छिपा रखी थी और वह उस पर आसन मारकर बैठी थी। जब बाघ को इसका पता चला तो उसने इसके लिए लड़ाई शुरू कर दी। जुगनू ने उसे एक पत्ती में बदल दिया और यह पत्ती हवा में उधिया गई। पत्ती ने झिंझागुरु नाम के सोखा की गुहार लगाई और इसके साथ ही फिर बाघ में बदल गई।

बाघ फिर जुगनू से लड़ने को बढ़ा पर इस बार जुगनू ने उसे धूल बना

दिया और फिर हवा में उड़ गई। धूल ने भिंजागुरु नाम के सोखा का नाम लिया। नाम लेते ही वह फिर बाघ में बदल गई।

बाघ लड़ने को लौटा तो इस बार जुगनू उसके पंजे में आ गई। वह उसे मसलने ही जा रहा था कि उसने विनती की, 'मेरी जान छोड़ दो तो मैं तुम्हें थोड़ी सी आग दे दूंगी। बाघ ने उसे छोड़ दिया। उसने अपनी दुम को काटा और उससे एक बूंद लोहू एक पत्ती पर गिरा दिया। बाघ इसे ले कर घर की ओर दौड़ा। वहां पहुंचकर उसने सरपत का एक गठ्ठर बनाया और वह लोहू उसी पर टपका दिया। लोहू का टपकना था कि वह ध``क उठी। अब शादी की दावत दुबारा शुरू हुई। मांस को भूना गया। अब इसके वाद मेहमानों को भला क्या शिकायत हो सकती थी।

एक दिन जब बिल्ला घूम रहा था तो वह एक गांव में पहुंच गया। उसे एक मकान दिखाई दिया तो वह सोचने लगा कि यह है क्या चीज। वह भीतर गया। वहां दूध का एक बर्तन पड़ा था। उसने कुछ दूध पिया पर दूध का स्वाद उसे पसंद न आया। उसने सोचा, 'इसे उसी तरह पकाया जाना चाहिए जैसे मेरे घर में पकाया जाता है।' वह वापस लौटा, थोड़ी सी आग एक लुकाठी में लेकर उसे अपने गले में लपेटे बिल्ला वापस लौटा, आग जलाई और दूध को उबाल दिया। इसी समय घर का मालिक आ गया और बिल्ला वहां से भाग खड़ा हुआ। उन्होंने उबला हुआ दूध पिया तो उन्हें इसका स्वाद पसंद आया। उस दिन से ही लोग अपना भोजन पकाकर खाने लगे।

आग की खोज को लेकर दूसरी अनेक कहानियां हैं। मध्यभारत के कवर्धा लोगों में प्रचलित कहानी इस प्रकार है।

जब मनुष्य पहले पहल पैदा हुआ तो उसे न तो खाना पकाना आता था, न नहाना, न ही कपड़ा पहनना। उनके नाखून बढ़कर बहुत लंबे हो जाते क्योंकि वे यह नहीं जानते थे कि इनको काटकर छोटा भी किया जा सकता है। उनके पास न घर थे न गांव। दस-बीस आदमी इकट्ठा हो जाते और वे किसी पेड़ के नीचे या किसी गुफा में रात काट लेते।

एक साल बांस की बीमारी फैली और बांसों में फूल आ गए और इसी के साथ वे सूख गए। हवा में बांस इधर-उधर झूमने लगे और आपस में रगड़ खाने लगे और इससे आग पैदा हो गई। पूरा जंगल तो पहले ही सूखी लकड़ी का ढेर बन चुका था। वह धू-धू करके जलने लगा। जब आग बुझ गई तो लंबे नाखून वाले मानुस आए और देखा कि बहुत सारे जानवर राख में भुने पड़े हुए हैं। उनमें से एक ने कहा, 'यह क्या है?' उसने भुने हुए शरीर को अपनी उंगली से छुआ तो यह गर्म मांस के भीतर चला गया और उसमें जलन होने

लगी। उसने इसे झट वापस खींच लिया और अपने मुंह में डाल लिया। उसने मन ही मन सोचा, इसकी गंध तो बहुत अच्छी है। और कितना अच्छा स्वाद है। खाने का तो यही तरीका ठीक है।' उत्तेजना में वह अपना दर्द भूल गया। उसने अपने साथियों को बुलाया। अब सभी ने जानवरों का भुना हुआ मांस खाया।

अगले दिन वे शिकार करने गए और एक खरहे का शिकार किया। अब उन्हें कच्चा मांस खाना गले के नीचे उतर ही नहीं रहा था। उन्होंने इसे भूनने की कोशिश की। इसे उन्होंने छाल की रस्सी बनाकर उससे बांध दिया। फिर एक तिपाई बनाकर उसके ऊपर इसे लटका दिया और उसके नीचे आग जला दी। आग जब जली तो रस्सी जल गई और खरहा टूटकर आग में जा गिरा। अभी उसके बाल ही जले थे, पर मांस नहीं पका था। खैर उन्हें तो भूख लगी थी सो उन्होंने उसे खा लिया।

अगले दिन लंबे नाखून वाले मनुष्यों ने एक हिरन का शिकार किया। उन्होंने पहले इसका चमड़ा उतारा और उसके बाद इसे काटकर इसके छोटे-छोटे टुकड़े किए और इसे आग में पकने को डाल दिया। इस बार मांस पूरा पक गया था और इससे सभी को मजा आया। इसके बाद उन्होंने पत्तियों में रखकर पकाने की कोशिश की और इसमें उन्हें पूरी सफलता मिली।

उस समय तक लंबे नाखून वाले लोगों के पास खाना पकाने के लिए बर्तन नहीं थे और वे कोई चीज पानी में उबाल नहीं सकते थे। जब वे बरसात के दिनों में इधर-उधर जाते तो उनके पांवों में कीचड़ जम जाती और उससे उनका पोर पोर भर जाता और जब वे वापस घर आकर आग सेंकते तो पाते कि कीचड़ की परत कड़ी हो गई है। एक बार उनमें से एक आदमी ने सोचा कि यदि मिट्टी आग से कड़ी हो जाती है तो इससे कुछ बनाया क्यों न जाए?' उसने एक बर्तन बनाया और इसे धूप में सुखाकर उसमें पानी भरकर, उसमें मांस डालकर तीन पत्थरों के एक चूल्हे पर रख दिया। लेकिन जब उसने आग जलाई तो बर्त्तन टूट गया और पानी बह गया। इससे आग बुझ गई। अब उसे मालूम हुआ कि धूप की गर्मी ही काफी नहीं है। उसने सोचा, 'यदि हमें आग पर खाना पकाना है तो हमें बर्तन को भी आग में पकाना होगा।' इसलिए उसने बर्तन को आग में पकाया और इस बार यह नहीं टूटा इसके बाद से लोग आग से बर्तन पकाने लगे और खाना पकाने लगे।

तमाकू

एक राजा था। उसके एक ही लड़की थी पर दुख की बात यह कि वह बेचारी बौनी थी। उसकी आंखें ऐंची थीं, उसके शरीर पर फोड़े निकले हुए थे और एक हाथ लूला था। जब वह बड़ी हुई तो उसके बाप ने रुपंए पैसे लिए और उसके लिए एक पति की तलाश में निकला। उसे देखने को कई नौजवान आए पर वह इतनी कुरूप थी कि उसे देखते ही सब सन्न रह जाते और वहां से भाग खड़े होते।

जव लड़की बड़ी हुई तो उसने देखा कि दुनिया के सारे लोग कितने आनंद से हैं। चाहे वे चींटियां हो या चूहे या पखेरू या जानवर या आदमी, सभी के अपने जोड़े हैं। राजा उसके लिए एक पति की तलाश मे लगा रहा पर कोई लड़का उससे ब्याह करने को तैयार ही नहीं हो रहा था। लड़की को यह देखकर बहुत दुख हुआ। वह अपने बाप के पास गई और बोली, 'मुझसे कोई शादी नहीं करेगा। मैं अब जिंदा नहीं रहना चाहती। इसके बाद वह पड़ रही और मर गई।

राजा ने उसके शरीर को सजाया और उसे गाड़ने की तैयारी की। लेकिन पड़ोसियों का कहना था कि राजा को उसका दाह करना चाहिए। इसलिए राजा ने एक बहुत बड़ी चिता बनवाई और अपनी बेटी की लाश को उस पर रखकर जला दिया। इसके बाद पीठ की एक हड़डी को छोड़कर उसका कुछ भी न बचा।

लड़की की आत्मा महाप्रभु के पास पहुंची और वह उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उससे पूछा, 'तू मुझसे जो चाहे सो मांग ले।'

लड़की ने कहा, 'मैं अपने जीवन में बहुत दुखी थी। मुझे कोई पसंद नहीं करता था। अब मुझे ऐसी बना दीजिए कि सारी दुनिया मुझसे प्यार करे।'

महाप्रभु ने कहा, 'ऐसा ही होगा।' और उन्होंने उसकी आत्मा को उसी मसान में और उस छोटी सी बची हुई हड्डी में वापस भेज दिया। कुछ समय बाद यह तमाकू का पेड़ बनकर उगी।

एक चरवाहा उस ओर से जा रहा था। उसने उस पौधे को देख लिया। उसने मन ही मन कहा, 'यह देखने में तो बहुत ताजा और अच्छा लग रहा है।' उसने उसकी एक पत्ती तोड़ ली और उसे सूंघा। इसकी महक उसे अच्छी लगी। उसने उसके बीज को लेकर बो दिया जिससे उसके बहुत सारे पौधे हो गए। वह उसकी पत्तियों को सूंघा करता था। एक दिन उसने एक पत्ती ली और उसे

चवाने लगा। उसे यह बहुत मजेदार लगा। अब वह इसे रोज चवाने लगा। फिर उसे पता चला कि यदि इसे चिलम पर रखकर जलाया जाए या इसको मोड़कर एक चुरुट बना लिया जाए तो यह उससे भी मजेदार हो जाता है। अब उसने इसे अपने साथियों को भी चखाया और वे भी इसके सुगंधित धुएं से मदमस्त हो गए। उन्होंने उससे उसका बीज लिया और इस तरह एक-एक करके तमाकू पूरी दुनिया में फैल गई और आज तो हाल यह है कि लोग कहते हैं, 'तमाकू और बीवी में कोई अंतर नहीं है; हम इन दोनों को एक जैसा ही प्यार करते हैं।'

कुरूप लड़की खुश है क्योंकि अब लोग उससे प्यार करते हैं और उसको चिलम पर रखकर चूमे बिना तो कोई काम पर जाता ही नहीं।

पहले नर्तक

पहले लोगों ने मोरों की पहाड़ी पर नाचना शुरू किया। कारण, यहां पर मोर अपने शानदार पंख फैलाए अपनी मादा के सामने नाचा करते थे। एक बार गोंडों का एक दल जंगल से वापस आ रहा था और उसने इस नाच को देखा तो उन्हें यह नाच इतना भा गया कि वे सभी के सभी पक्षियों के साथ नाचने लगे। जब गोंडों को नाच का ताल आ गया तो वे अपने घर लौटे और उन्होंने इसे अपने साथियों को सिखाया।

उस पहाड़ी के ऊपर एक खजूर का पेड़ था और मोर उसी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए नाचते थे। मोर के सिर पर कलंगी होती है और उसकी एक सजीली पूंछ हुआ करती है इसलिए गोंड भी अपनी पगड़ी में पंख लगा कर और अपने शरीर को रंगकर नाचने लगे। मोर अपनी सुंदरता को मुड़ मुड़कर निहारता हुआ नाचता है इसलिए गोंड भी मुंह मोड़कर अपनी छाया को निहारते हुए नाचते हैं। उन्होंने नाचते समय जो पहला गाना गाया था वह इस प्रकार थाः

नीचे खजूर के नाचे भयूरा।
जनमा रे जनमा पाखी मयूरा।।

जब गोंडों ने सब कुछ सीख लिया तो मोरों ने उनके साथ नाचना बंद कर दिया। उन्होने उनसे कहा, 'हमारे पंख की कलंगी अपनी पाग में लगाया करो तो तुम्हारा नाच कभी बेताल नहीं होगा।' उन्होंने अपनी पूंछ में से वहुत से पंख निकाले और उसे गोंडों को दे दिया। तभी से वे इनका प्रयोग करते आ रहे हैं।

बोलने वाले जानवर

पहले बंदर

भारत के पहाड़ों और जंगलों में सर्वत्र यह विश्वास पाया जाता है कि बंदर आदमी से पैदा हुए, न कि आदमी बंदर से। यह हुआ कैसे, इसे अनेक कहानियों में बयान किया गया है। उड़ीसा के जुआंग लोगों में, जो पहले पत्तियों से तन ढका करते थे, जो कहानी कही जाती है वह इस तरह है :

पहले बंदर आदमी हुआ करते थे। एक दिन वे जंगल में गए और खेती के लिए जमीन खाली करने के लिए अपने चलन के अनुसार पेड़ काटने लगे। जब शाखाएं और घास-पात सूख गए तो उन्होंने उन्हें जलाने के लिए आग लगाई पर आग पकड़ नहीं रही थी। उन्होंने डालियों और सूखी पत्तियों की ढेरी लगा दी और फिर एक-एक करके गांव के महतो के घर से, पुजारी के घर से, ओझा के घर से, गांव के पहरेदार के घर से आग ले आए, पर आग थी जो डालियों को पकड़ने का नाम ही नहीं ले रही थी। उनके हाथ सूज गए, वे पसीने से लथपथ हो गए, उनकी मूंछ और दाढ़ी तक जल गई, पर जो जगह वे काटकर साफ कर चुके थे वहां की कोई चीज नहीं जली। वे आपस में कहने लगे, अब हमें अपनी लुगाइयों की फटकार ही सुननी पड़ेगी। उनको फटकार सुननी भी पड़ी, पर उनका ध्यान बंटाने के लिए वे अपनी पीठ पर लकड़ी की टहनियां बांधकर इधर-उधर कुलांच भरते हुए, हू-हू-हू करते हुए, हल्ला करने लगे। पर जब वे इस तरह नाचते रहे तो लकड़ी की टहनियां पूंछों में बदल गईं और उनका पसीना और मैल पूरे शरीर पर बाल बनकर निकल आई। अब वे बंदर बन गए थे और फल-फूल पर गुजारा करने के लिए जंगल में चले गए।

गडबा जाति में इस बात को लेकर एक कहानी पाई जाती है कि पहले बंदर किस तरह रहते थे।

एक गांव में बारह लड़के और बारह लड़कियां थीं। ये सभी नाचने के पीछे पागल रहते थे। एक दिन जब वे नाच रहे थे तो अंगिया पहने और पगड़ी बांधे एक बंदर आया और उनके पास ही एक पत्थर पर बैठ गया। उसके हाथ में एक एकतारा था। वह इसे इस तरह बजा रहा था कि किसी को यह लगा ही नहीं कि यह बाजा कोई बंदर बजा रहा है और लड़कियां उसकी धुन पर मगन हो कर नाचती रहीं।

रात-दर-रात यही बात होने लगी। कुछ ही समय बाद लड़कियों को बंदर से इस बात पर प्यार हो गया कि वह एकतारा बहुत सुंदर बजाता था। एक लड़की ने उसे अंगूठी दी। दूसरी उसके लिए खाना ले आई। तीसरी ने उसे मंडा पिलाकर तर कर दिया।

यह बात लड़कों को पसंद न तो आनी थी, न ही आई। वे कहने लगे, 'यहां तो कोई इसे जानता नहीं। किसी को पता ही नहीं है कि यह आया कहां से है? यह है कौन?' एक रात को उन्होंने बहुत ध्यान से देखा। बंदर की पूंछ उसके पीछे लगी हुई थी। अभी तक वे समझ रहे थे कि यह उसकी छड़ी है। उस दिन लड़कों से यह बात छिपी न रह सकी। उन्होंने एक दूसरे से फुसफुसा कर कहा, 'यह बंदर छोड़ और कुछ हो ही नहीं सकता।' उन्होंने उस समय कुछ नहीं किया और जब नाच खत्म हो गया तो वे रोज की तरह अपने घोटुल में चले गए और बंदर पेड़ पर चला गया।

अगले दिन लड़कों ने उस पत्थर के चारों ओर लकड़ी सजा दी और उसमें आग लगा दी। जब यह बहुत गर्म हो गया तो उन्होंने उसे साफ कर दिया और जमीन पर बैठकर गाने लगे। इसी समय बंदर अपना एकतारा लिए आया और पहले की तरह उसी पत्थर पर बैठ गया। वह इतना गरम था कि इसके साथ ही उसका पिछौटा जलकर अलग हो गया और वह दर्द से चीखता हुआ वहां से भाग चला।

लड़कों ने उन लड़कियों पर जिन्होंने उसे अंगूठी पहनाई थी, खाना खिलाया था, मंडा पिलाई थी, जो हंसना शुरू किया तो रुकने का नाम न लें। और उस दिन से बंदर का कूल्हा लाल ही रह गया है।

मेढक और बंदर

बहुत पहले आदमी और जानवर एक दूसरे से बातें कर सकते थे। उस समय एक राजा ने एक मेढक और एक बंदर को अपना चाकर बना रखा था। बंदर बहुत कपटी और मनबहक था। वह राजा को मारकर राज करना चाहता था। वह बहुत अकड़ू था। जब भी राजा उसे कोई काम सौंपता, वह उसे ढंग से नहीं करता था।

एक दिन राजा ने मेढक को कुछ मछलियां और बंदर को कुछ मीठे फल लाने को भेजा। बंदर जंगल में गया और जो भी फल उसके हाथ आया उसे तोड़कर तब तक खाता रहा जब तक उसका पेट भर नहीं गया और फिर वहीं

सो गया। शाम को वह उठा तो उसे कुछ डर भी लगा, क्योंकि उसने सोचा कि फल न लाने के लिए राजा उसकी पिटाई जरूर करेगा। इसलिए उसने अपने शरीर में कीचड़ लपेट ली और भागा-भागा घर की ओर चला। रास्ते में उसे मेढक मिल गया जो बहुत सारी मछलियां लादे चला जा रहा था।

जब बंदर ने देखा कि मेढक इतनी सारी मछलियां लिए जा रहा है और वह खाली हाथ लौट रहा है तो वह और घबरा गया। वह सोचने लगा कि राजा कहीं मेढक को तरक्की देकर उसके ऊपर न कर दे। इसलिए उसने मेढक को मछलियों के साथ ही एक नदी में फेंक दिया और मेढक से बोला, 'कुशल इसी में है कि तुम राजा से चलकर कहो कि तुम कोई मछली पकड़ ही नहीं पाए इसलिए खाली हाथ लौट आए हो। तुम इस आदमी के लिए इतने परेशान क्यों होते हो? एक न एक दिन तो मैं उसे मार ही डालूंगा और जव मैं राजा बन जाऊंगा तो तुम्हें बहुत अच्छी नौकरी दूंगा जिसमें बहुत कम काम करने को होगा।'

अब बंदर और मेढक दोनों राजा के पास पहुंचे और उससे बोले कि उन्हें न तो फल मिला न ही मछलियां। बंदर बोला, 'मैंने सारा जंगल छान मारा और सैकड़ों पेड़ों पर चढ़ा पर कुछ हाथ नहीं आया। इसी चक्कर में मैं पेड़ से नीचे गिर गया। आप अपनी आंखों से देख लें कि मेरा शरीर कीचड़ और धूल से किस तरह सन गया है। मैं भला क्या करता। वहां कुछ था ही नहीं। लेकिन जरा इस मेढक को तो देखिए। यह सारे दिन नदी में नहाता रहा और इसने मछली पकड़ने की कोशिश ही नहीं की। देखिए न यह कितना साफ-सुथरा लग रहा है।'

राजा ने देखा कि बंदर मैला-कुचैला है और मेढक साफ और चमकता हुआ। इस पर आग बबूला होकर चिल्लाया, 'तुम मछली पकड़ने गए थे या नहाने' और उसके सिर पर जोर से चोट की। यही कारण है कि मेढक के सिर का ऊपरी भाग आज भी चपटा है।

मेढक को बहुत ताव आया और उसने राजा से वह सब कुछ वता दिया जो बंदर ने उससे कहा था। इसके बाद वह झट-पट उसके घर से बाहर निकला और नदी में चला गया। उस दिन से आज तक वह वहीं रहता है।

उस समय तक बंदर के पूंछ नहीं होती थी। एक दिन बंदर जंगल में गया और अपने सभी नातेदारों को जुटाया। उसने उन्हें धनुष और बाण दिए और राजा के महल पर धावा बोलने और उसकी हत्या करने का डौल बैठाया।

जब राजा को पता चला कि वे क्या करने की सोच रहे हैं तो उसने झट-पट काले रंग का एक लेप तैयार कराया और उसे अपने मुंह पर लगा कर चुपचाप बैठा अपने शत्रुओं के पहुंचने की घड़ी जोहने लगा।

पहले बंदर अपनी सेना को बाहर एक पेड़ पर छिपा कर अकेले ही आया। उसने राजा की सजावट देखी तो उससे बोला, 'आपको यह लेप कहां मिला? मैं भी इसे लेकर अपने मुंह पर लगाऊंगा।'

राजा ने कहा, 'मैं एक कोटर वाले पेड़ के पास गया और अपने नौकर से कहा कि वह मुझे उसके भीतर डाल दे। इसके बाद नौकरों ने खूब सारी लकड़ी जुटाई और उसके चारों ओर रखकर आग लगा दी। उसी के धुंए से मेरा मुंह काला हो गया। तुम भी उतने ही सजीले दीखना चाहते हो तो लकड़ी जुटाकर कोटर वाले पेड़ के पास चलो।'

बंदर ने अपने नातेदारों को बुलाया। उन्होंने ढेर सारी लकड़ी जुटाकर उस पेड़ के चारों ओर अड़ा दी। इसके बाद राजा ने सभी बंदरों को रस्सी से एक दूसरे के साथ बांधकर उस कोटर में डाल दिया। जब वे सभी भीतर चले गए तो उसने लकड़ियों में आग लगा दी। कुछ ही देर बाद बंदर चिल्लाने लगे, 'हम बहुत काले हो गए। अब हमें बाहर निकालो, बाहर निकालो।' लेकिन राजा लकड़ी पर लकड़ी डालता ही चला गया और अंत में वे सभी जलकर मर गए।

लेकिन एक बंदरिया जो बहुत ऊपर बैठी थी वह जल नहीं पाई, क्योंकि जिस रस्सी से उसे बांधा गया था वह जलकर अलग हो गई थी। वह उस रस्सी को अपने पीछे लटकाए-लटकाए ही वहां से भाग निकली। यही उसकी पूंछ बन गई और वह बानरों की एक नई जाति की मां बन गई।

काला कुत्ता

बाघ जंगल और पहाड़ के लोगों की बहुत कद्र करता है और इस बात को लेकर उनके बीच कई कहानियां कही जाती हैं। कुछ कहानियों में उसकी शक्ल मनुष्य जैसी दिखाई जाती है जिनमें यह बताया जाता है कि वह भी मनुष्य का ही भाई था, पर गलत रास्ते पर चला गया। यह कहानी अरुणाचल प्रदेश की सीमा के अनेक गांवों में कई रूपों में सुनाई जाती है।

निसो और नियू दोनों भाई थे और वे सिपी नदी के किनारे के घने वन में शिकार करने जाया करते थे। वे गिलहरियों और चिड़ियों के लिए फंदे लगाया

करते थे और सांझ होने पर घर लौट आते थे। लेकिन दोनों में बड़ा, निसो बहुत तड़के उठकर जाल में जो भी शिकार होता उसका आधा नियू के जगने से पहले ही खा लिया करता था और फिर जाकर चारपाई पर यह बहाना करके सो रहता था जैसे वह बीच में जगा ही न हो।

जब बाद में वे दोनों फंदे के पास जाते तो देखते कि उसका आधा माल

गायव है। नियू की समझ में नहीं आता कि यह कैसा आदमी हो सकता है जो मांस को कच्चा ही खा जाता है।

यह सिलसिला कुछ दिनों तक चलता रहा। फिर एक दिन नियू ने वहाना वनाया कि वह वहुत थका हुआ है और वहुत पहले ही सोने चला गया। पर निसो के सोते ही वह चुपके से उठा और जहां उनका फंदा था उसके पास के ही एक पेड़ की आड़ में दुवककर वैठ गया। भोर को वह क्या देखता है कि उसका भाई आया। उसने फंदे में से एक गिलहरी निकाली, उसे पकड़कर दो हिस्सों में चीर दिया और फिर खाने लगा।

नियू अव सामने आ गया और वोला, 'भाई, तुम ऐसा क्यों करते हो? इनमें हम दोनों का हिस्सा है। चलो इसे ले चलकर ढंग से भूनकर खाते हैं।'

पर निसो ने कहा, 'मुझे कच्चे मांस से ही ताकत मिलती है। जो कुछ मैंने किया यदि वह तुम्हें पसंद नहीं तो मुझे माफ कर दो। आज से मैं जंगल में ही रहूंगा और मांस का आहार कच्चा ही करूंगा। आज तक मैं तुमसे चोरी करता रहा हूं पर आज से मैं तुम्हारी मदद करूंगा।'

इतना कहना था कि उसकी काया वदल गई और वह वाघ हो गया। उसने कहा, 'जब तुम शिकार पर निकलोगे तो मैं तुम्हारी मदद करूंगा पर एक शर्त है। तुम यह बात किसी को नहीं बताओगे कि तुम्हारा बड़ा भाई कच्चा मांस खाने के लिए जंगली वाघ वन गया। यदि तुमने किसी से भी ऐसा कहा तो मैं अपनी काया वदलकर काला कुत्ता बन जाऊंगा और तुम्हारा पीछा करूंगा। इसके वाद हम दोनों के वीच लड़ाई होगी। तुमने मेरी जान ले ली तब तो ठीक, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।'

नियू ने कहा, 'इस तरह की मनहूस बात मत करो, क्योंकि मैं यह बात किसी को वताऊंगा ही नहीं। इस पर शेर राजी-खुशी वहां से चला गया।

इसके बाद नियू जब भी शिकार को जाता, उसका बाघ भाई हिरना या सूअर पकड़कर उसे देता। इसलिए नियू आराम से रह रहा था। वह धनी और मोटा हो गया था। पर समय के साथ वह भी बूढ़ा हो गया और एक दिन जब वह आग तापने बैठा था उसके लड़के और पोते निसो के बारे में पूछने लगे, 'हमारे एक ताऊ हुआ करते थे, वे कहां गए?' नियू ने कुत्ते के डर से कुछ नहीं कहा, उसने उनको टाल दिया।

फिर नियू इतना बूढ़ा हो गया कि उसके शरीर में ताकत नहीं रह गई। उसके लड़के-पोते अपने ताऊ के बारे में उसका सिर खाने लगे। अव नियू ने सोचा, 'मेरे शिकार के दिन तो लद गए। अव यदि काला कुत्ता आ भी गया तो वह मेरा क्या विगाड़ लेगा?' इसलिए नियू ने अपने लड़कों-पोतों को जो कुछ

हुआ था सब बता दिया।

उधर निसो यहां जो कुछ हो रहा था उसे सुन रहा था। वह काला कुत्ता बन गया और घर के नीचे दुबककर बैठ गया। यह घर भी अरुणाचल के दूसरे घरों की ही तरह खंभों पर बना हुआ था। नियू उधर अलाव के पास बैठा अपने सिर के बालों में कंघा फेर रहा था। हुआ यह कि कंघा उसके हाथ से छूटकर गिर गया और वह फर्श की फांक से हो कर जमीन पर जा गिरा। नियू ने अपने वच्चों में से एक से कहा, 'मेरा कंघा नीचे गिर गया है। जाओ और जाकर उसे ले आओ।' लड़का नीचे गया तो उसे कंघा नहीं मिला क्योंकि काला कुत्ता उसी के ऊपर बैठा हुआ था। वह सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आया और अपने वाप को सब कुछ बताया।

इसके वाद काला कुत्ता जरा सा हिला और कंघा जरा सा दिखाई देने लगा। नियू ने फर्श की फांक से नीचे की ओर देखा तो उसे कंघा और उस पर बैठा हुआ काला कुत्ता दिखाई दिया। उसने अपना धनुष वाण संभाला और जैसे तैसे मकान के नीचे उतरा। इसके बाद निसो फिर बाघ बन गया और अपने भाई के ऊपर उछल पड़ा। ठीक इसी समय निसो ने अपना तीर दाग दिया। तीर उसके पार हो गया और उसके साथ ही वह मर गया लेकिन बाघ की उछाल से नियू भी जमीन पर गिर गया और वह भी उसी के साथ मर गया।

दो दोस्त

बाघ और मेढक में दोस्ती थी। मेढक बाघ से मिलने उसके घर जाया करता और बाघ उसे खाने के लिए खूव अच्छा खाना देता। एक दिन मेढक ने कहा, 'यार, मैं जब भी तुम्हारे यहां आता हूं तुम मुझे बहुत अच्छा भोजन देते हो। कभी तुम मेरे यहां भी तो आओ।'

बाघ बोला, 'भाई मैं हूं मांसाहारी। तुम यदि मुझे मांस खाने को दो तो मैं तुम्हारे पास अवश्य आऊंगा।

मेढक ने कहा, 'क्यों नहीं, तुम कल ही आओ। तुम जो भी चाहोगे मिलेगा।'

मेढक लौटते समय इस बात से बहुत परेशान था कि वह अपने मित्र के लिए मांस कहां से जुटाए। वह मांस की जुगाड़ में कई जगह गया पर काम न वना। वह एक नदी के किनारे से होता लौट रहा था कि उसे एक घोड़ा दिखाई

दिया जो वहां पानी पीने आया हुआ था। मेढक उछलकर उसकी पीठ पर सवार हो गया और उसको दवोचकर उसमें से कुछ मांस निकालने की कोशिश करने लगा लेकिन घोड़े ने उसे झटक दिया और ऐसी दुलत्ती लगाई कि उसका पांव ही टूट गया। इसीलिए मेढक आज भी सीधा नहीं चल पाता।

मेढक लंगड़ाता हुआ धीरे-धीरे अपने घर की ओर चला। वह घर पहुंचा ही था कि उसी समय शेर आ गया। मेढक ने आगे वढ़कर उसकी अगवानी की और उसे बैठाया। पर वह इस वात पर वहुत झेंपा हुआ था कि उसे खिलाने के लिए उसके पास मांस नहीं था। इसलिए वह उछलकर ऊपर चला गया और अपनी टांग से ही कुछ मांस निकालने लगा। इससे उसे वहुत पीड़ा हुई और वह चीख पड़ा, 'अरे माई, मैं तो मरा।'

शेर ने यह सुना तो उछलकर यह देखने ऊपर पहुंच गया कि मामला क्या है। जव उसने देखा कि मेढक ने अपना ही मांस उसे खिलाने के लिए काटकर अलग कर दिया है तो वह वोला, 'मित्र, यह सब करने की क्या पड़ी थी। मैं तुम्हारा मांस तो खाऊंगा नहीं।'

उससे जितना हो सकता था उसे दिलासा देने के वाद वह वहां से चला गया। पर मेढक तो इस पर इतना पानी-पानी हो गया कि वह अपना मकान सदा सदा के लिए छोड़कर चला आया और नदी में रहने लगा।

यही कारण है कि मेढक पानी में ही रहता है और उसकी टांगें इतनी पतली होती हैं।

उड़ने वाले हाथी

यह विश्वास बहुत दूर तक पाया जाता है कि एक समय ऐसा भी था जब हाथी के पंख हुआ करते थे और यह उड़ सकता था। इसी तरह की कहानियों में से एक है यह कहानी, जो उड़ीसा की रम्य पहाड़ियों में बसे सवर जनों मे प्रचलति है।

पहले हाथी के चार विशाल पंख हुआ करते थे और एक हाथी पर तो 'प्रभु' स्वयं सवारी करते थे।

पर जब दुनयिा बन गई और लोग धरती पर रहने लगे तो हाथी मुसीवत बन गए। वे मुर्गों की तरह बांग देते थे और आकाश में उड़ जाते थे। जब थक जाते तो नीचे आते और मकानों की छतों पर आ बैठते। वे इतने भारी थे कि

उनके बैठने के साथ ही मकान ढह जाते। जब प्रभु ने यह सुना तो वह बहुत नाराज़ हुआ और उसने ठान लिया कि इसका कोई न कोई उपाय करना ही होगा। इसलिए उसने एक दिन सभी हाथियों को बुलवाया और उन्हें इतना खिलाया और पिलाया कि वे लड़खड़ाने लगे और एक शांत जगह पा कर वहीं सो गए। जब वे सो रहे थे उसी समय प्रभु ने उनके पंख काट डाले। इनमें से दो पंख उसने मोर को दे दिए जिसके पास उन दिनों पंख नहीं होते थे। यही कारण है कि मोर के पंख इतने लंवे होते हैं। वाकी दो को उसने केले के पेड़ को दे दिया। यही कारण है कि केले के पत्ते इतने वड़े होते हैं।

जब हाथियों को पता चला कि उनके पंख क़ट गए हैं तो उन्हें बहुत बुरा

लगा। वे भाग कर जंगल में चले गए और उस समय से वे आदमी से डरने लगे।

कछुए का बच्चा

आसाम के खाम्प्टी लोगों में कछुए की एक विचित्र कहानी सुनने को मिलती है। कहानी है कि कछुआ पहले आदमी की संतान था और वाद में हाथी बन गया। गावों के वहुत से लोग यह मानते हैं कि पहाड़ियों, नदियों और पेड़ों पर अच्छी और बुरी आत्माओं का निवास होता है जिनका प्रभाव मनुष्य के ऊपर पड़ सकता है।

बहुत पहले एक आदमी अपनी लुगाई के साथ रहता था। उसके कोई बच्चा नहीं था। वे वूढ़े हुए तो एक दूसरे से कहने लगे, 'हम बूढ़े हो गए और आज तक हमें एक भी बच्चा नहीं हुआ। इसलिए वे एक पवित्र पेड़ के पास गए और उसे वलि चढ़ाई। वे रोज उस पेड़ को जल चढ़ाते और माथा टेकते। ऐसा वे वहुत समय तक करते रहे तो उस पेड़ से एक आत्मा निकली और उसने उस बूढ़े और वुढ़िया से पूछा, 'तुम इतने समय से हमे चढ़ावा क्यों चढ़ाते आ रहे हो?'

वे बोले, 'हम लोग बूढ़े हो गए पर आज तक संतान का मुंह नहीं देखा। इसी के लिए हम यह चढ़ावा चढ़ाते आ रहे हैं।'

उस आत्मा ने कहा, 'ठीक है, अब तुम्हें कोई चढ़ावा नहीं चढ़ाना होगा। तुम्हारी कामना पूरी हो जाएगी।' इसके बाद वे अपने घर वापस आ गए।

उसी दिन बुढ़िया पेट से रह गई और दस महीने पूरे होने के वाद उसने एक कछुए को जन्म दिया।

वे दोनों बिसूरने लगे कि इतना कष्ट सहकर तो हमने वृक्ष के देवता को मनाया और उसने हमें संतान भी दी तो एक कछुआ। पर बाद में उन्होंने अपने को समझाया , 'चलो, निपूता रहने से पूत के नाम पर एक कछुआ होना भी कुछ बुरा नहीं है।'

वुढ़िया ने कछुए को अपना दूध पिलाना चाहा, पर उसने दूध पीने से इनकार कर दिया और दूध की जगह चावल मांगने लगा। उन्होंने सोचा, नन्ही सी जान है, जरा सा खाएगा, पर वह उनसे दो पत्तल भरकर चावल मांगने लगा। यह दूसरे दिन की वात थी। तीसरे दिन उसने तीन पत्तल भात मांगा और चौथे दिन चार पत्तल खा गया और इसके बाद एक दिन पर एक पत्तल

करके बढ़ाता चला गया। बीस दिन का होने पर वह एक दिन में बीस पत्तल चावल चढ़ा गया।

बूढ़े-बुढ़िया ने जब देखा कि उनके चावल की डेहरी खाली होती जा रही है तो वे घबरा गए और उन्हें अपने वे दिन याद आने लगे जब उनके कोई संतान न थी। 'यह बच्चा आदमी होता तो भी कोई बात थी। इसके कारण तो हम कहीं के न रहेंगे। अभी बीस दिन का होने पर ही यह हाल है तो बड़ा होने पर यह कितना खाएगा?'

अब वे फिर उस पेड़ के पास गए और पेड़ के देव से बोले, 'हमें यह संतान नहीं चाहिए। आप इसे वापस ले लीजिए।' पर पेड़ के देव ने उनकी बात पर कान ही नहीं दिया।

इस बच्चे का नाम उसके माता पिता ने ऐलंग रखा था और जब पेड़ के देवता ने उसे वापस नहीं लिया तो उसकी मां ने उससे कहा, 'तुम खाने को तो हमारा सारा खाना खा जा रहे हो पर काम के नाम पर कुछ नहीं करते।'

ऐलंग बोला, 'मां, पिता जी से कहो कि वह मेरे लिए एक अच्छा सा दाव बनाकर दें।'

मां ने पूछा, 'ऐलंग, तुम दाव का क्या करोगे?'

कछुए ने कहा, 'मैं जंगल में जाकर वहां एक खेत तैयार करूंगा'

मां की समझ में नहीं आ रहा था कि यह बच्चा जिसके पास हाथ तक नहीं हैं, दाव कैसे चलाएगा, फिर भी उसने अपने आदमी से कहा, 'ऐलंग दाव मांगता है।' पिता ने उसे एक नहीं, दो-दो दाव बनाकर दे दिए।

ऐलंग दाव लेकर जंगल गया। वहां पहुंचकर वह एक हाथी में बदल गया और दोनों दाव उसके दांत हो गए। उसने एक ही दिन में तीन पहाड़ियों के आजू बाजू का जंगल साफ कर दिया। पर पहाड़ियों के बीच में रबर का एक बहुत बड़ा पेड़ था। बस उसे उसने नहीं काटा। उसने सोचा, 'यह पेड़ बहुत सुंदर है। मैं इसके नीचे आराम किया करूंगा।'

शाम को ऐलंग ने अपने दांत उतारकर उन्हें दाव बना दिया और अपने कछुआ बन गया। वह घर लौटा तो पिता ने पूछा 'तुमने कितना जंगल साफ किया?' ऐलंग बोला, 'मुझसे अभी कुछ मत पूछो, पर जब काम पूरा हो जाएगा और फसल काटने का समय आएगा तब बताऊंगा।'

रबर के जिस पेड़ को ऐलंग ने छोड़ दिया था उस पर एक देव रहता था जिसकी बहुत सी संतानें थीं। उसने देखा कि सारे पेड़ साफ हो गए हैं तो उसने सोचा कि अब उसकी भी बारी आने ही वाली है इसलिए उसने अपने बच्चों

को खाली हो चुके भाग में भेज दिया। उसने अपनी बांसुरी बजाई और इसके साथ ही उसके बच्चों ने उन सभी पेड़ों को उठा दिया और वे पहले जैसे पेड़ों में बदल गए। जब पूरा जंगल लहरा उठा तो बच्चे अपने पिता के पास रबर के पेड़ पर लौट आए।

अगले दिन जब ऐलंग वापस आया और पेड़ों का हाल देखा तो वह आग बबूला हो उठा। वह फिर हाथी में बदल गया और तमक कर पूरे जंगल को मटियामेट करने लगा। इस बार उसने ठान लिया कि वह एक भी पेड़ को न रहने देगा। पर जब रबर के पेड़ की बारी आई तो उसका देव और उसके बाल बच्चे सभी बाहर आ गए और उससे लड़ने को तैयार हो गए। वे लड़ाई में उसका सामना नहीं कर सके, क्योंकि एलंग बहुत बलवान था। कुछ ही देर बाद वे उससे दया की भीख मांगने लगे।

पेड़ पर रहने वाले देव ने कहा, 'हमारी जान छोड़ दो। इसके बदले हम तुम्हारा सारा कहा मानेंगे।'

ऐलंग ने कहा, 'तो एक काम करो, मैने जितने भी पेड़ काटे हैं उन सभी को आग लगा दो और जब वे अच्छी तरह जल जाएं तो उनकी राख में बीज बो दो।'

अब पेड़ के देव और उसके बच्चों ने मिल कर उस मैदान को तैयार किया और उसमें ऐलंग ने जो धान के बीज दिए उन्हें बो दिया। जब फसल तैयार हो गई तो एलंग देव और उसके बच्चों से पहुत प्रसन्न हुआ। उसने उनसे कहा, 'एक काम और करो। खेत काटकर दाना अलग करके मेरे घर पहुंचाओ।'

अब ऐलंग ने अपना कछुए वाला वेश बनाया और घर जाकर अपने माता पिता से बोला, 'फसल तैयार हो गई है और मजूरे अभी धान लेकर आते ही होंगे।' उन्हें भरोसा ही नहीं हो रहा था कि उनके बच्चे ने सचमुच कोई खेत तैयार किया है, पर तभी आत्मा और उसके बच्चे इतना अधिक धान लादे हुए पहुंचे जिसे रखने के लिए उनके पास जगह ही नहीं थी। ऐलंग ने अपने माता-पिता से कहा, 'इन मजूरों को खूब पेट भर खाना खिलाओ। अब इसके बाद मैं तुम लोगों के साथ नहीं रहूंगा, अब मैं जंगल में ही जा कर रहूंगा।'

उनके देखते देखते ही एलंग ने पहले की ही तरह हाथी का रूप धारण कर लिया और दावों को अपने दांत बनाकर लगा लिया और जंगल में चला गया। उसके माता पिता ने देव और उसकी संतानों की जी खोलकर आव-भगत की थी इसलिए देव उस समय से आज तक धरती पर प्रसन्न होकर रहते हैं

और जब तक आदमी उन्हें याद करता रहता है, उनकी दया उस पर बनी रहती है।

कुत्ता और सूअर

एक आदमी के पास एक कुत्ता और एक सूअर था। ये दोनों खाना छोड़कर और कोई काम नहीं करते थे। वे इतने आलसी थे कि कोई काम उनके बूते का था ही नहीं। कुछ समय के बाद मालिकों ने तय किया कि उन्हें अपना पेट भरने के लिए तो कुछ करना ही होगा और उनसे कहा कि वे जाकर खेत जोतें।

सूअर अपने थूथन से जमीन को खरोंचता हुआ पूरे दिन काम करता रहा और उसने पूरी जमीन खोदकर रख दी। पर कुत्ता एक पेड़ की छाया में पड़ा हुआ सोता रहा।

शाम को सूअर तो सीधे घर वापस लौट गया पर कुत्ता उठा और उसके पांवों के निशान मिटाता और उनकी जगह अपने पांवों की छाप दौड़ता हुआ घूमता रहा और इसके बाद वह भी घर चला गया।

उस शाम को आदमी ने कुत्ते और सूअर से पूछा कि उन्होंने दिन भर क्या किया है तो सूअर बोला, 'मैंने सारा खेत कोड़ डाला पर यह कुत्ता एक पेड़ के नीचे पड़ा-पड़ा सोता रहा।'

कुत्ता बोला, 'खेत तो मैंने कोड़ा है। यह सूअर तो घूम-घूम कर कंद खोदता रहा।'

आदमी ने कहा, 'मुझे तुम दोनों में से किसी की भी बात पर भरोसा नहीं। कल जाकर मैं खेत को अपनी आंखों देखूंगा।'

अगले दिन वह आदमी अपने खेत में गया और पाया कि कुत्ते के पावों के निशान तो चारों ओर हैं पर सूअर के पावों का कोई निशान नहीं है। वह वापस लौटा और सूअर को यह कहकर गाली देने लगा कि निकम्मा है।

उसके बाद से सूअर को तो घर से बाहर रहना पड़ता है और जब उसे खाना देने को बुलाया भी जाता है तो 'मो-मो' कह कर। इसका मतलब है, 'नहीं-नहीं, तुमने कोई काम नहीं किया।'

पर कुत्ते को घर के भीतर रहने दिया जाता है और जब उसे बुलाया जाता है तो कहा जाता है, 'को-को' जिसका मतलब है, 'हां-हां, तुमने अपना काम किया है।'

सांप-पति

एक बुढ़िया के दो लड़कियां थीं। बड़ी लड़की बहुत सुंदर थी पर कोई उसकी कदर नहीं करता था , क्योंकि वह ठीक से बुनाई नहीं कर पाती थी। दूसरी लड़की तरह-तरह के सुंदर नमूने बनाकर बुनाई कर लेती थी पर यह लड़की केवल सादे कपड़े ही बुन पाती थी, इसलिए दूसरी सारी लड़कियां उसकी हंसी उड़ाती थीं।

एक दिन वह इस बात पर बहुत दुखी हो रही थी। उसने सारे दिन खाना नहीं खाया और शाम होने पर नदी में नहाने गई। वह नहा रही थी उसी समय एक बड़ा सा सांप पानी से निकला। उसे देखकर वह भागने लगी, पर जब सांप ने देखा कि वह इतनी सुंदर है तो वह एक सुंदर लड़का बन गया और उससे बोला, 'तुम डर क्यों रही हो?'

लड़की ने कहा, 'क्योंकि तुम सांप हो।'

लड़के ने कहा, 'नहीं, मैं सांप नहीं हूं। मैं पानी के नीचे रहता हूं और जब चाहूं तब आदमी या सांप का रूप बदल सकता हूं।'

अब लड़के की सुंदरता देखकर लड़की उसके पास आई और दोनों के बीच लगाव हो गया। इसके बाद से हर रोज जब लड़की शाम को खाना खा लेती तो वह अपने प्रेमी से मिलने के लिए चोरी से नदी के किनारे चली जाती थी। भोर होने पर लड़का सांप बन जाता और पानी के भीतर अपने निवास में चला जाता।

एक शाम जब वे दोनों मिले तो लड़की उससे बोल ही नहीं रही थी, क्योंकि वह इस बात पर बहुत दुखी थी कि उसे ठीक से बुनाई करने नहीं आता। जब वह बहुत हठ करने लगा तो उसने अपने मन की बात बताई। उसने कहा, 'इसकी चिंता मत करो। भोर होने पर मैं अपनी सुंदर खाल पहने आऊंगा और तुम मुझे अपने घर ले चलना और अपने करघे पर बैठ जाना और मुझे अपनी गोद में लिए रहना और मेरे शरीर के नमूने को कपड़े में उतारती जाना।'

इसके बाद लड़का सांप बन गया और पानी में चला गया और लड़की सारी रात नदी के किनारे बैठी रही। भोर होने पर वह अपनी सुंदर खाल में वापस आया। लड़की उसे अपने घर ले गई और उसे अपनी गोद में बैठा कर बुनाई करने बैठ गई। दूसरी लड़कियां उसकी बुनाई देखने आईं पर जब उन्होंने सांप को देखा तो वे डरकर भाग गईं। अब कुछ ही समय में वह

इतने सुंदर कपड़े बुनने लगी कि उस जैसे कपड़े पूरे गांव में कोई बुन ही नहीं पाती थी।

शाम होने पर लड़की सांप को नदी के किनारे ले गई और वह फिर आदमी बन गया। कुछ ही दिनों में लड़की ने बहुत सुंदर तीन थान कपड़े बुन दिए। उसने एक थान तो अपनी बहन को दिया, दूसरा थान दूसरी लड़कियों को दिया कि वे उसकी नकल कर सकें और एक अपने पास रख लिया।

कुछ समय वाद नाग ने कहा, 'यह भी जीने का कोई ढंग है। ठीक वात यह है कि मैं तुमसे शादी कर लूं और तुम्हें अपने घर ले जाऊं।

लड़की ने पूछा, 'पर मैं पानी के भीतर रहूंगी कैसे?'

सांप ने कहा, 'उसकी चिंता न करो। कल मैं बारात लेकर पूरे गाजे- वाजे के साथ आऊंगा और तुम्हें साथ लेकर जाऊंगा। तुम पानी के भीतर वहुत आनंद से रहोगी।'

अगले दिन लड़की ने अपनी मां से कहा, 'मैं अपने पति के पास जा रही हूं।'

मां ने पूछा, 'तुम्हारा पति कौन है?'

लड़की वोली, 'वह एक सांप है। उसी ने मुझे वुनाई सिखाई।'

'पर तुम ऐसा कैसे कर सकती हो? वह तुम्हारी जान ले लेगा।'

मां उसे झिड़कती और फुसलाती रही। पर वह कुछ सुनने को तैयार ही नहीं थी।

दो दिन बाद लड़का बहुत बड़ी बारात लेकर गाजे-बाजे के साथ आया। गांव वालों को वे सभी नाग दिखाई दे रहे थे और लड़की को वे आदमी नजर आ रहे थे। जब उसका पति उसे लेकर जा रहा था तो उसने अपनी मां से कहा, 'मैं तो जा रही हूं पर यदि तुम्हारे ऊपर कोई आफत-बिपत आए तो तुम नदी के किनारे आकर मुझे पुकारना।' इसके बाद लड़की नदी पर गई और फिर पानी के भीतर सोने के एक महल में पहुंची और दोनों वहां आनन्द से रहने लगे। उनके कई बच्चे हुए।

फिर एक दिन छोटी वहन ने कहा, 'मैं भी किसी सांप से व्याह क्यों न करूं।' वह नदी के किनारे एक विल के पास गई जिसमें एक काला नाग रहता था। वह उस विल के पास ही इस आशा में लेटी रही कि नाग सुंदर लड़के का रूप बदलकर आएगा और उससे व्याह कर लेगा। पर जव वह बिल से वाहर निकला तो वह नाग का नाग निकला और उसने उसे काट लिया और वह मर गई।'

अब लड़की की मां की देखभाल करने वाला कोई नहीं रह गया और वह वहुत बूढ़ी हो चली थी। वह इधर-उधर भटकती ही रह सकती थी। घर में खाने को कुछ रह नहीं गया था। इसलिए एक दिन वह रोती हुई नदी के किनारे गई और चिल्लाकर बोली, 'मेरी वेटी, ओ मेरी बेटी !' इसके बाद रात हुई तो लड़की पानी से बाहर आई और बोली, 'मेरे साथ चलो।' पर उसने जाने से इंकार कर दिया। पर उसकी लड़की ने उसके मुंह पर एक कपड़ा लपेट दिया और उसे खींचकर नीचे ले गई। वहां जाकर बुढ़िया ने सोने का महल देखा और उसके

ढेर सारे कच्चे-बच्चे देखे जो उसे नानी-नानी करते हुए उसके कपड़े खींचने और उसके गले से लिपटने लगे और उसकी गोद में गिरने लगे। एकाएक वे सभी नागों में बदल गए और उन्होंने उसके चारों ओर कुंडली मार कर उसे लपेट लिया। उसने डरकर उन्हें झटककर फेंक दिया और इसके बाद वे दुबारा आदमी हो गए।

इसके बाद बुढ़िया ने कहा, 'मुझे मेरे घर वापस भेज दो। यह सब मुझे नहीं सुहाता।'

उसके दामाद ने कहा, 'ठीक है, लेकिन मैं तुम्हें अपने साथ ले जाने के लिए एक सौगात देता हूं।'

उसने एक थैली में कुछ बालू रख दिया और दूसरी में कुछ अनाज। उसे रस्सी का एक टुकड़ा और लकड़ी की चैलियां मिल गई जो उसकी कानी उंगली के बरावर थीं। उसने इन चीजों को एक पोटली में बांध दिया और बुढ़िया को देते हुए कहा, 'रास्ते में इनको मत देखना। इन्हें घर ले जा कर इनमें से एक-एक को बड़े-से-वड़े टोकरे में रख देना। फिर सात दिन बाद टोकरों को खोलना और देखना कि तुम्हारे पास क्या है।' फिर उसने उसे पानी से वाहर निकाल दिया।

जब वह औरत अकेली रह गई तो उसने सोचा, 'मैं अपनी लड़की और दामाद के यहां पाहुनी बनकर गई। उनसे पैसा-कौड़ी तो देते बना नहीं, दिया भी तो ये बेकार की चीजें।' वह इतनी उलझन में पड़ गई कि उसने उस पोटली को जमीन पर फेंक दिया। पर कुछ देर बाद में उसने सोचा, मुझे कम से कम वह सब करके तो देखना चाहिए था जो मेरे दामाद ने सुझाया था। इसलिए उसने जितनी चीजें संभाली जा सकती थीं उन्हें फिर समेटा और घर ले जा कर उन्हें छोटी-छोटी टोकरियों में रख दिया। सात दिन बाद उसने जब उन्हें खोला तो पाया कि लकड़ी की चैलियां सूखी मछलियां बन गई हैं। रस्सी सूखा मांस बन गई है। बालू चावल बन गया था और दाने धान बन गए हैं। पर उसके दामाद ने उसे जो कुछ दिया था उसका ढेर सारा तो वह फेंक आई थी और जो बचा रह गया था उसे उसने छोटी टोकरियों में रखा था इसलिए यह उसके पास बहुत कम ही रह गया था। पर उसके जीने का एक सहारा तो मिल ही गया था और वह जब तक जीवित रही उसी के वल पर जिंदा रही।

याक

अरुणाचल का पश्चिमी भाग भूतान से बहुत दूर नहीं है। याक की उत्पत्ति कैसे हुई—इस आशय का एक बहुत शानदार नाच यहां रहने वाले शेरदुक्पेन जाति के लोग करते हैं।

तिब्बत में एक बूढ़ा अपापेंक और उसकी लुगाई रहती थी। उनके तीन बेटे थे—गाप्पासाम्ब्रू, तेपागलू और दाग्येसाम्ब्रू। बूढ़े-बुढ़िया बहुत धनी थे। उन्होंने अपनी जायदाद का बंटवारा गाप्पासाम्ब्रू और दाग्येसांब्रू में कर दिया, पर तेपागलू को उन्होंने कुछ नहीं दिया। उसने उनके पास जाकर अपना हिस्सा मांगा, पर वे कुछ भी देने को तैयार नहीं थे।

इससे तेपागलू को बहुत दुख हुआ और वह सोचने लगा, 'इस जायदाद में मेरा कोई हिस्सा तो है नहीं, मेरे पास खाने को भी कुछ नहीं है, फिर यहां रहने से क्या लाभ? इससे अच्छा तो यह है कि मैं किसी ऐसी जगह चला जाऊं जहां मेरा पेट भर सके।'

उसने अपना घर छोड़ दिया और महाप्रभु के पास गया और उनसे सारी बात कह सुनाई। उसने उनसे पूछा, 'बताइए, क्या मुझे कभी अपने माता-पिता के माल-मता में से अपना भाग मिलेगा या नहीं?'

महाप्रभु ने कहा, 'तुम्हें यह कभी नहीं मिलेगा।'

वह आत्माओं के पास गया और पूछा, 'बताइए, क्या मुझे कभी अपने माता-पिता के माल-मता में से अपना भाग मिलेगा या नहीं?'

आत्माओं ने भी कहा, 'कभी नहीं मिलेगा।'

फिर वह पवन के पास गया और पूछा, 'बताइए, क्या मुझे कभी अपने माता-पिता के माल-मता में से अपना भाग मिलेगा या नहीं?'

पवन ने भी कहा, 'तुम्हें यह कभी नहीं मिलेगा।'

अंत में निराश होकर तेपागलू जंगल चला गया। वह पेड़ों के बीच से जैसे-तैसे आगे बढ़ रहा था कि एक पहाड़ी के किनारे बनी एक बहुत बड़ी गुफा के पास पहुंच गया। उस गुफा के दोनों ओर दो धाराएं बह रही थीं और बीच में सूखा रास्ता था। बालक गुफा के भीतर चला गया। उसमें अंधेरा छाया था फिर भी वह उसके भीतर बढ़ता चला गया। वह जमीन में बहुत नीचे चला गया। जब वह बहुत दूर चला गया तो उसने देखा कि जतुग-तुंग-कर्मू नाम की एक विशाल चिड़िया अपने तीन बड़े-बड़े अंडों के ऊपर बैठी है। उसने उस चिड़िया को माथा झुकाया और उससे पूछा, 'ऐसी जगह में तुमको खाने को क्या

मिलता है ?'

चिड़िया ने कहा, 'मैं चावल खाती हूं।'

लड़के ने कहा, 'मैं कई दिनों से भूखा हूं। भूख से मैं वेदम हो गया हूं। क्या तुम मुझे कुछ चावल खाने को दोगी?'

चिड़िया ने कहा, 'चावल तो मेरे पास भी नहीं है, क्योंकि अक्सर मैं खाने की तलाश में वहार निकल जाती हूं। तुम्हारे लिए फिर भी मैं कुछ चावल जुटा सकती हूं पर मुसीबत यह है कि मैं इन अंडों पर वैठी हूं। मैं यहां से हटी तो इन्हें ठंड लग जाएगी और ये वेकार हो जाएंगे।'

लड़के ने कहा, 'तुम जाओ और जाकर चावल ले आओ। तुम्हारे अंडों को मैं गरम रखूंगा।'

चिड़िया मान गई पर साथ ही उसने यह भी कहा, 'देखो, तुम और कुछ भी करना पर इन अडों को उलटना-पलटना नहीं।'

लड़के ने कहा कि वह अंडों को उलटे-पलटेगा नहीं, उनके ऊपर अपना हाथ रखे रहेगा। इस पर चिड़िया वहां से उड़ चली और लड़का अंडों पर हाथ रखकर उनको गरमी पहुंचाने लगा।

पर तभी उसे कुतूहल पैदा हो गया। उसने अंडों को निहारना चाहा। उसने एक अंडे को उठाया, उसे ध्यान से देखा और फिर वापस रख दिया पर रखते समय उसने उसे उलटा रख दिया।

कुछ समय बाद चिड़िया लौटी। उसने तेपागलू को चावल लाकर दिया पर जब उसने देखा कि अंडों को उलटा रख दिया गया है तो वह चिढ़कर वहां से चली गई।

चिड़िया चली गई तो लड़का अकेला रह गया और विलखकर रोने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। तभी उसे याद आया कि महाप्रभु वहुत दयालु हैं और वे चाहें तो इन अंडों में से कुछ निकल सकते हैं। इसलिए उसने एक अंडे को अपने हाथ में लिया और यह कहते हुए महाप्रभु को याद किया ,'महाप्रभु, मैं चारों ओर से निराश हो चुका हूं। एक तुम्हारा ही आसरा है। मुझ पर दया करो और मेरी मदद के लिए इस अंडे के भीतर से कुछ पैदा कर दो।' यह कहकर उसने उस अंडे को अपनी छड़ी से तोड़ दिया। अंडे के टूटते ही उसके भीतर से एक सफेद याक़ बाहर निकली और हवा में उड़ती हुई महाप्रभू के पास चली गई। लड़के ने दूसरे अंडे को तोड़ा तो उसमें से एक लाल याक बाहर निकली और हवा में उड़ती हुई वन की आत्माओं के पास के पास चली गई। लड़का चीख पड़ा, 'अव एक ही अंडा रह गया है। कम से कम इसे तो मेरे काम के लिए रहने देना।'

उसने अंडे को तोड़ा और उसके भीतर से एक काली याक निकली और वह नीचे पानी में चली गई। इसके वाद लड़का गुफा से बाहर निकला और एक रस्सी लेकर पूरे एक साल तक नदी के किनारे बैठा रहा। पूरे साल वह काली याक पानी के भीतर ही रही, पर साल पूरा होते ही उसने अपना सिर पानी के ऊपर निकाला और तेपागलू ने उसे पकड़ लिया। वह उसे अपने घर ले गया और उसे अपने पास रखा। कुछ समय बाद उसे बछड़ा पैदा हुआ और

लड़के को दूध और घी मिलने लगा। तीन साल के भीतर उसने तीन बछड़े दिए।

जव अपापेक ने यह बात सुनी तो वह अपने दोनों लड़कों के साथ आया और तीनों इस जानवर के सम्मान में नाचने लगे जिससे उनको आहार मिलता था।

पहला मिथुन

मिथुन बाइजन से मिलता जुलता एक शानदार जानवर है जिसे अरुणाचल प्रदेश की सभी जातियों के लोग बहुत चाहते हैं। यह खरा सोना है, क्योंकि यही उनकी दौलत का मूल है। इसे जुर्माना चुकाने, दूल्हन के घर वालों को दहेज देने के लिए तो काम में लाया ही जाता है, वलि के लगभग सभी अवसरों पर इसकी ही वलि दी जाती है। यह कहानी अका लोगों में चलती है और इसमें बताया गया है कि पहला मिथुन कैसे पैदा हुआ और उसे बीमारी भगाने के लिए कैसे वलि चढ़ाया गया।

बुसलो-आओ दुनिया का पहला आदमी है। उसके तीन लड़के और तीन लड़कियां थीं। लड़कों के नाम थे सिज्जी-जाओ, माच्लो-जाओ और चालो-जिजाओ और लड़कियों ने नाम थे, फीवी-चीसी, माच्लो-चीसी और चालो-मिचीसी।

दुनिया में दूसरा कोई आदमी तो था नहीं इसलिए जब बच्चे बड़े हुए तो व्याह के लिए न तो लड़कों को लड़कियां मिल रही थीं, न ही लड़कियों को लड़के। पिता ने तय किया कि ये आपस में ही व्याह कर लें। इसलिए सिज्जी-जाओ ने फीवी-चीसी से, माच्लो-जाओ ने माच्लो-चीसी से और चालो-जिजाओ ने चालो-मिचीसी से व्याह कर लिया। इनमें से दो जोड़े तो आनंद से रहने और अपने खेतों में डटकर काम करने लगे। चालो-मिचीसी ने चालो-जिजाओ से व्याह तो कर लिया था, पर वह उसके साथ खुश नहीं थी, क्योंकि वह कहती, 'मैं अपने भाई के साथ कैसे खुश रह सकती हूं।' इसलिए न तो वह अपने मर्द के पास जाती, न ही उसके साथ काम करती। इस तरह एक पूरा साल लड़ते-झगड़ते ही बीत गया और नौबत यह आ गई कि सभी उस लड़के से कहते, 'तुम्हारी जोरू निकम्मी है। न तो वह तुम्हें प्यार करती है न ही काम करती है।' चालो-जिजाओ लंबे समय तक यह सब झेलता रहा पर एक दिन उसने अपनी जोरू की पिटाई कर दी और वह दुख और ग्लानि में भरकर

घर के एक कोने में पड़ रही।

पर जब दूसरे सभी खेत पर चले गए तो वह उठी और उसने बांस की बोतलें और तूंबे एक टोकरी में रखे और नदी पर पानी भरने चली गई। नदी पर पहुंचकर उसने टोकरा तो माथे पर रख लिया पर तूंबों को अपने सिर के दोनों ओर इस तरह लटका लिया जैसे वे सींगें हों। उसने मंडा छानने की छननी को पीछे यूं लटका लिया मानो पूंछ हो। बांस की बोतलों को उसने अपने हाथों और पांवों से बांध लिया। अब उसने अपने कपड़ों को ही चबा डाला और इससे उसका पेट फूल गया। इस तरह वह मिथुन बन गई और जंगल में चली गई और जाकर जंगल में रहने लगी।

शाम को जब सभी काम से लौटे और वह दिखाई नहीं दी तो उन्होंने सोचा कि वह अभी तक मुंह फुलाए किसी कोने में पड़ी होगी इसलिए किसी ने उसकी खोज खबर नहीं ली।

दो दिनों तक उस लड़की का जब कोई अता-पता नहीं चला तब चालो-जिजाओ का माथा ठनका और वह उसकी खोज करने लगा। अभी वह रवाना ही हुआ था कि भौंरे ने बताया कि वह मिथुन बन गई है और पानी के घाट के पास ही जंगल में है। चालो जिजाओ भागा-भागा उस जगह पर पहुंचा। वह सचमुच मिथुन बनकर वहीं पर पड़ी थी। उसकी आंखें छलछला आईं, वह उससे लिपट गया और मनाकर अपने घर ले आया। उसने पूरे परिवार को जुटाया और बताया कि मामला क्या है। वे सभी हैरान रह गए और बुस्लु-आओ ने कहा, 'हम अपनी लड़की को इस तरह जंगल में नहीं भटकने देंगे। हमें इसके लिए कोई ठीहा-ठिकाना तो तलाश करना होगा। मेरा सुझाव यह है कि इसे घर के पास ही बांध रखा जाए।' उसने बेंत की एक मजबूत रस्सी बनाई और उसे एक खूंटे से बांध दिया। उन्होंने उसे दाना-पानी दिया पर उसने कुछ भी खाने-पीने से इनकार कर दिया। वह वहीं खड़ी-खड़ी रोती रही।

फिर बुस्लु-आओ ने मिथुन की आंखों से आंसू बहते देखकर कहा, 'तुम मेरी बेटी हो - सच तो यह है कि तुम बेटी भी हो और पतोहू भी। अब महाप्रभु ने तुम्हें मिथुन बना दिया। इस पर मेरा क्या वश है? अब इस तरह हठ न करो, हम लोग जैसे खाते-पीते हैं, तुम भी खाया-पिया करो।'

मिथुन ने कहा, 'यह तो सच है कि महाप्रभु ने मुझे मिथुन बना दिया और इसकी मुझे खुशी है, पर मैं इसके साथ ही एक औरत भी हूं और मैं बिना मर्द के नहीं रह सकती। इसलिए तुम लोग मुझे छोड़ दो। मैं जाकर अपने लिए मर्द तलाश कर लूंगी।'

जब उसके पिता ने यह बात सुनी तो उसने उसका पगहा खोल दिया और वह अपने लिए मर्द की तलाश में वहां से चल पड़ी। पर इसे ढूंढ़ पाना कोई हंसी खेल नहीं था।

पहले पहल उसको कुछ दूरी पर एक कुत्ता दिखाई दिया। उसे देखकर उसने सोचा, हो सकता है मैं इससे व्याह कर लूं, पर जब वह उसके पास पहुंची तो उसने पाया कि वह बहुत छोटा है और उसका मर्द होने के योग्य नहीं है। अब वह उसे छोड़कर तलाश करती हुई आगे चली तो उसे एक सूअर मिला। पहले तो उसे लगा कि हो सकता है इससे काम चल जाए पर जब वह उसके पास पहुंची तो उसने सोचा, 'इसका रंग तो मेरे जैसा ही है, लेकिन यह भी बहुत छोटा है।'

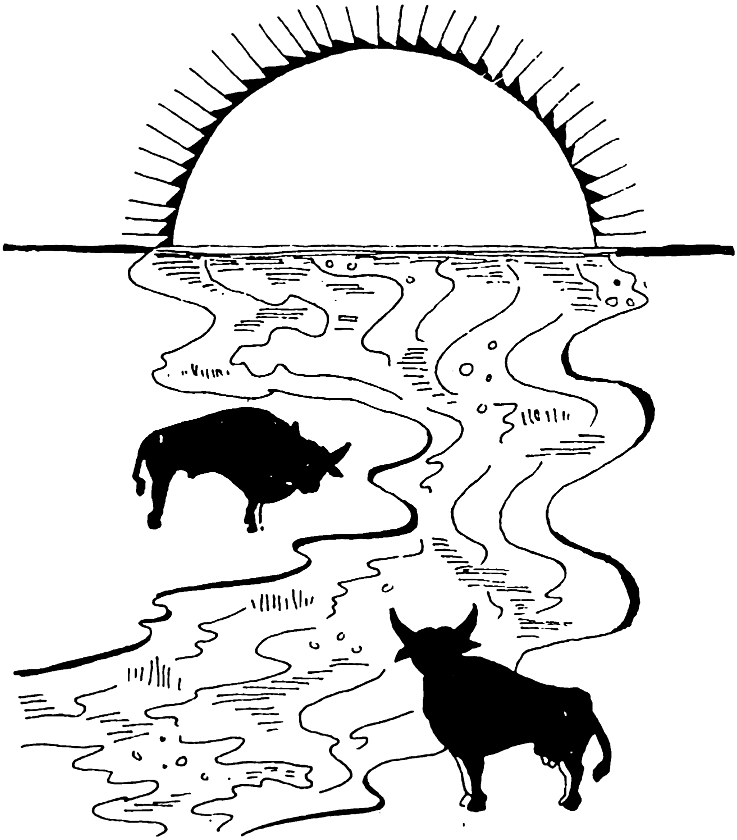

तभी उसे कुछ दूरी पर एक घोड़ा दिखाई दिया और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने सोचा कि यह उसके जोड़ का रहेगा पर जब वह उसके पास पहुंची तो उसने देखा कि उसके पांव, दुम, मुंह सभी अलग किस्म के हैं। उसने सोचा कि इससे भी बात नहीं बनेगी।

इसके बाद मिथुन घोड़े को छोड़ कर भटकती हुई आगे बढ़ती चली गई तब उसे कुछ दूरीं पर एक बड़ा हिरन दिखाई दिया। पहली नजर में तो उसे लगा कि यह सबसे अच्छा रहेगा पर निकट आने पर उसने पाया कि यह भी एकदम अलग किस्म का है। एक वात यह भी कि उसके सींग वहुत वड़े थे। इसी तरह उसकी भेंट एक भालू से, वाघ से, बंदर से, और वारी-वारी जंगल के सभी जानवरों से हुई, लेकिन उनमें कोई भी ऐसा नहीं था जो उससे इतना मिलता-जुलता हो कि वह उसे अपना मर्द बना सके।

अंत में वह उस जगह पहुंच गई जहां से सूरज निकलता है। उसने ठंडे पानी की नदी पार की, गर्म पानी की नदी पार की और अंत में उसे नदी की छायादार पेटी में खड़ा एक नर मिथुन दीख गया। जब उसने उसे दूर से देखा तो उसके शरीर में सनसनी छा गई और उसने वहीं से डकार लगाई और नर मिथुन ने उसके जवाव में डकार लगाई। जव वह उसके पास पहुंची तो उसने देखा कि उसका रंग वही है, चेहरा वैसा ही है, पांव वैसे ही हैं और दुम वैसी ही है जैसी उसकी। उसे पता चल गया कि यही उसका जोड़ा है। वे दोनों मिल गए और समय आने पर उसके दो बछड़े पैदा हुए।

इसी बीच मिथुन का मानव पति चालो-जिजाओ बीमार पड़ गया और पुजारी को यह पता लगाने के लिए वुलाया गया कि उसे हुआ क्या है। पुजारी ने बताया कि लड़का तभी चंगा होगा जब वे किसी मिथुन की वलि दें।

उन्होंने पूछा, 'पर मिथुन मिलेगा कहां?'

पुजारी ने बताया, 'मिथुन हैं तो पर वे ठंडी नदी के पार, गर्म नदी के पार, वहुत दूर हैं।' अब सिज्जी-जाओ और माच्लो-जाओ दोनों बड़े भाई उनका पता लगाने निकले। वे उस जगह पहुंच गए जहां से सूरज उगता है। उन्होंने ठंडे पानी की नदी को पार किया, पर वे गर्म पानी की नदी को पार न कर पाए। अव वे अपने हाथों में पत्तियां और नमक लिए हुए इस किनारे खड़े हो गए और नदी की दूसरी ओर के मिथुनों को गुहार लगाई। जव उन्होंने नमक देखा तो वे गर्म पानी की नदी को पार करने लगीं। पर गर्मी उन्हें सहन नहीं हो रही थी। इनमें से वह मिथुन जो पहले चालो-मिचीसी रह चुकी थी, और उसके दो वछड़े, ही बचकर इस पार आ सके। लड़के उन्हें लेकर घर आए और उन्हें द्वार के सामने एक खूंटे से वांध दिया।

वुस्लु-आओ की लुगाई उन्हें देखने घर से निकली और उसे लगा कि यह तो उसकी अपनी लड़की ही लगती है। उसने कहा, 'हम इनकी वलि नहीं चढ़ा सकते।'

पर वुस्लु-आओ ने कहा, 'यह सच है कि यह कभी हमारी वेटी थी पर अव देवता उसे पाना चाहते हैं तो उसे वलि तो चढ़ाना ही होगा।'

यह फैसला हो गया तो उन्होंने उसे वांध दिया और उसे मारना चाहा पर अपने कुल्हाड़े से वे उसकी चमड़ी तक नहीं काट सके। इसके वाद वुस्लु-आओ की जोरू ने कहा, 'मैंने तो पहले ही कहा था कि यह हमारी लड़की है। जव तक उसे यह न वता दिया जाए कि मरना उसका धरम है तव तक उसका वध नहीं किया जा सकता।'

वुढ़िया अपनी मिथुन कन्या के पास गई और उसके कान में कहा, 'कभी तुम मनुष्य थीं और तुम्हारी वलि नहीं दी जा सकती थी, पर अब तुम मिथुन वन चुकी हो। अव तुम्हारे मरने की घड़ी आ गई है।'

इसके बाद वह अलग हट गई और इसके बाद दूसरों ने उस बेचारे जीव पर दाव से आघात कर उसे मार डाला।

जादूनगरी की सैर

पक्षियों की अतिथिसेवा

एक राजा के लड़के और एक अगरिया लोहार में दोस्ती हो गई, पर वे हमेशा खुराफात में लगे रहते थे इसलिए राजा ने उनको वनवास दे दिया। दोनों लड़के ऊंचे-ऊंचे पेड़ों के बीच से चले जा रहे थे कि इसी समय उन्होंने कुछ गौरैयों को चारा चुगते देखकर पूछा, 'हमें कहीं थोड़ा सा खाने को मिलेगा?'

गौरैयों ने कहा, तुम औनारपुर पाटन बाजार जाओ। यहां तुम्हें कुछ खाने को नहीं मिलेगा।'

लड़के यह सुनकर आगे चले गए। चलते-चलते सांझ हो गई। वे एक सेमल के पेड़ के नीचे रुके। एक लड़का सो गया और दूसरा जागकर आग में लकड़ियां डालता रहा।

उस पेड़ पर चक्का और चक्की नाम के दो पक्षी रहते थे। वे दोनों एक दूजे से चाक के दो पाटों की तरह प्यार करते थे इसीलिए उनका यह नाम पड़ गया था।

चक्का ने नीचे देखकर चक्की से बोला, 'हमारे पेड़ के नीचे दो भूखे राहगीर ठहरे हुए हैं। हमारा धरम है कि हम उन्हें कुछ खिलाएं।'

चक्की ने चक्का से कहा, 'हमारे पास तो उनको खिलाने को कुछ है नहीं, पर यदि हम सीधे आग में गिरकर भुन जाएं तो जरूर उनको खाने को मिल जाएगा।'

इसके बाद दोनों पक्षी आग में गिर गए। अगरिया लड़का उस समय पहरा दे रहा था। उसने एक-एक पक्षी के तीन-तीन टुकड़े किए और उन्हें भून डाला। उनमें से तीन टुकड़े उसने खा लिए और तीन अपने मित्र के लिए एक किनारे रख दिए। जब राजा का लड़का जगा तो उसने भी अपना भोजन किया और अगरिया का लड़का सोने लगा। जब राजा के लड़के ने देखा कि

वह गहरी नींद सो गया है तो वह वहां से चुपचाप अकेले ही चल पड़ा। वह देश-देश घूमता रहा और खूब मालदार हो गया। फिर उसे पता चला कि उसके पिता गुजर गए हैं, इसलिए वह वापस लौटा और उसके स्थान पर राजा बन गया।

लेकिन जब अगरिया का लड़का जगा तो उसे बहुत डर लगा। उसने सोचा, 'हो सकता है मेरा दोस्त औनारपुर पाटन वाजार गया हो।' वह उसको जगह-जगह खोजता अकेले चलता रहा। कुछ दिनों के वाद वह हाटक नदी पर पहुंच गया। इसके किनारे पर एक वहुत वूढ़ी औरत रहती थी। लड़का उसके साथ ठहर गया और उसकी सेवा-टहल करने लगा। एक दिन उसने पूछा, 'वोलो, मैं तुम्हें क्या दे दूं?'

लड़का वोला, 'मैं औनारपुर पाटन वाजार देखना चाहता हूं।'

वुढ़िया वोली, 'यह तो वहुत कठिन है। खैर, तुम उस पेड़ से एक आम तोड़ लो और विना पीछे मुड़े ले आओ।'

लड़के ने जाकर आम तोड़ लिया पर वह पीछे मुड़कर देखने का लोभ नहीं रोक सका। उसके ऐसा करते ही आम उसके हाथ से उड़कर पेड़ पर जा लगा। उसने दुवारा प्रयत्न किया और इस बार भी वही हुआ। लेकिन तीसरी वार वह उस फल को ले ही आया। अव वुढ़िया ने उसे बाजार का रास्ता वता दिया। जव वह आम को लेकर चला तो आम एक सुंदर लड़की में वदल गया।

वे एक अनोखे जंगल से जा रहे थे जहां चक्की के वरावर वड़े-वड़े गूलर फले हुए थे और जव पेड़ से टूटकर गिरते तो उनसे डम-डम की आवाज होती थी। उनकी पत्तियां मोम जैसी मुलायम थीं। वे एक घनी वंसवारी से होकर गुजरे। हवा वहने पर पुराने वांस एक दूसरे से इस तरह टकराते थे जैसे लोहे के हों और उनसे ठन-ठन की आवाज निकलती थी और नए मुलायम कल्लों से सूखे हुए ढोल की तरह कसमस-कसमस की आवाज फूटती थी। कोर्कोट की पत्तियां एक दूसरे से रगड़ खाती हुई आवाज करती थीं तो उनमें छिपी हुई वूढ़ी लोमड़ी डर जाती थी। वाघ यहां-वहां उछल रहे थे और तेंदुए कुत्तों की तरह खेल रहे थे। वाघ दहाड़ रहे थे, तेंदुए गुर्रा रहे थे, वंदर किटकिटा रहे थे और हरने हवा में उछल रहे थे। लंवे सींग वाले गौर और अरना भैंसों के शरीर के वाल खड़े थे और वे इधर से उधर धमाचौकड़ी कर रहे थे।

पर अंत में वे जंगल से वाहर खुले मैदान में आ गए और उनका सामना सात चोरों से हो गया। वे वहुत निर्दयी और दुष्ट थे। उन्होंने वच्चे को

एक कुएं में डाल दिया और लड़की को लेकर चल दिए। पर वह एक आम में वदल गई और इससे चोर इतने डर गए कि उसे एक पेड़ के नीचे रखकर चले गए।

कुछ समय बाद उसी जगह पर वह लड़का आया जो राजा हो गया था। वह शिकार पर निकला था और उसने उसी सेमल के पेड़ के नीचे आराम किया जहां चक्का-चक्की ने अपने प्राण दिए थे। इस समय तक उन पक्षियों के वच्चे वड़े हो गए थे और वे डालियों पर वैठे हुए आपस में वातें कर रहे थे। वड़े पक्षी ने अपनी पत्नी से अगरिया लड़के की पूरी कहानी सुनाई और यह भी वताया कि कैसे चोरों ने उसे कुएं में डाल दिया है और वह कुआं कहां है। राजा ने उनकी वात सुनी तो वह तुरत वहां से चल पड़ा और वहां पहुंचकर अपने दोस्त को वचा लिया। वे दोनों साथ-साथ चल पड़े। कुछ ही देर वाद उन्हें एक पेड़ के नीचे वह आम मिल गया। वे उसे लेकर अपने घर की ओर चले तो वह आम एक वार फिर लड़की में वदल गया और उसके पेट से औनारपुर पाटन वाजार निकल आया। उस बाजार में कोई दुकानदार नहीं था। केवल दुकानें थीं और जिस आदमी को जो कुछ लेना था उसे वह स्वयं उठा लेता था। अगरिया के लड़के को इससे वड़ी खुशी हुई, पर उसने इस बाजार को फिर एक आम में बदल दिया और इसे लेकर अपने घर की ओर चला। अव तो उसकी मौज आ गई। वह जो कुछ भी चाहता, उसे वह सव कुछ मिल जाता और शाम को एक सुंदर सलोनी लड़की मिल जाती जो उसकी लुगाई वनकर उसका दिल वहलाती।

सुनहला मोर

एक गड़रिया था। उसके एक छोटा बच्चा था जिसे वह बहुत प्यार करता था। एक दिन लड़के ने कहा, 'मैं अपना पालन खुद करना चाहता हूं इसलिए मुझे एक कुल्हाड़ी और एक कंबल ला दो।' उसे जब दोनों चीजें मिल गईं तो वह जंगल में गया, वहां जमीन साफ की। डालियों को काटकर उसने जला दिया और उसी राख में बीज बो दिए।

जब धान पकने पर आया तो लड़का रोज अपना कंबल लेकर रात में खेत की रखवाली करने जाता। एक दिन वह बहुत थक गया था और सारी रात सोता रह गया। जब वह सो गया तो एक सुनहले पंखोंवाला मोर आया और धान खा गया। लड़का सवेरे जब जगा और देखा कि उसकी फसल

चौपट हो चुकी है तो वह फूट-फूटकर रोने लगा। लेकिन खेत में एक सुनहला पंख गिर गया था। वह इसे लेकर घर गया और इसे अपनी छाजन में खोंस दिया।

एक दिन एक नाई उस गांव में आया। जब उसने उसकी छाजन में लगे हुए सुनहले पंख को देखा तो उसने राजा को इसकी खबर दे दी। राजा ने लड़के और उसके बाप को पकड़कर लाने के लिए अपने प्यादे भेज दिए। जब राजा ने लड़के से पूछा कि यह पंख उसे कहां मिला तो उसने जवाब दिया, 'मुझे यह मेरे खेत में मिला।'

यह सुनकर राजा ने कहा, 'जिस जानवर का यह पंख है उसे पकड़ कर जिंदा यहां ले आओ नहीं तो मैं तुम्हें जमीन में गड़वा दूंगा और तुम्हारे सिर के ऊपर आग जलवा दूंगा।'

लड़का भीतर से दहल उठा। उसने अपना कुल्हाड़ा और कंबल लिया और भागकर अपने खेत में चला गया। वहां उसे मोर के पांवों के निशान मिल गए और वह उनको ही पकड़े आगे चला। पर एकाएक निशान गायब हो गए क्योंकि उसके आगे उसने हवा में उड़ान भर ली थी। लड़का वहीं बैठकर विलाप करने लगा। जब वह रो रहा था उसी समय एक सांभर उधर से गुजरा और उससे पूछा, 'छोटे भैया, तुम रो क्यों रहे हो।'

लड़के ने कहा, 'सांभर भाई, राजा ने मुझे सुनहले पंखों वाला मोर लाने को भेजा है पर मुझे उसका कोई निशान नहीं मिल रहा है। अब राजा मुझे जमीन में गाड़ देगा और मेरे सिर के ऊपर आग जला देगा।'

सांभर ने लड़के को अपनी पीठ पर बैठा लिया और जंगल के बीच से होकर दौड़ चला। अब उन्हें सुनहले मोर के पांवों के निशान एक बार फिर मिले।

अब सांभर तो चला गया और लड़का निशान पकड़े आगे बढ़ता गया कि तभी एक बार फिर निशान गुम हो गए।

लड़का फिर बैठकर कलपने लगा। इस बार एक बारहसिंगा उधर से निकला और उसने उससे पूछा, 'छोटे भैया, तुम से क्यों रहे हो?'

लड़के ने कहा, 'बारहसिंगा भाई, राजा ने मुझे सुनहले पंखों वाला मोर लाने को भेजा है पर मुझे उसका कोई निशान नहीं मिल रहा है। अब राजा मुझे जमीन में गाड़ देगा और मेरे सिर के ऊपर आग जला देगा।'

इस पर बारहसिंगे ने लड़के को अपनी पीठ पर बैठा लिया और और जंगल के बीच से होकर दौड़ चला। अब उन्हें सुनहले मोर के पांवों के निशान एक बार फिर मिले। बारहसिंगा तो चला गया और लड़का निशान पकड़े आगे बढ़ता

गया कि तभी एक वार फिर निशान गुम हो गए। मोर वहां से भी हवा में उड़ गया था।

लड़का फिर वैठकर रोने-कलपने लगा। इस वार एक वाघ उधर से निकला और उसने उससे पूछा, 'छोटे भैया, तुम रो क्यों रहे हो?'

लड़के ने कहा, 'वाघ भाई, राजा ने मुझे सुनहले पंखों वाला मोर लाने को भेजा है पर मुझे उसका कोई निशान नहीं मिल रहा है। अव राजा मुझे जमीन में गाड़ देगा और मेरे सिर के ऊपर आग जला देगा।'

इस पर वाघ ने लड़के को अपनी पीठ पर वैठा लिया और और जंगल के वीच से होकर दौड़ चला। एकाएक वे एक खड़ी कुवड़ी पहाड़ी और चपटे पठार के पास आ पहुंचे, जहां हरे वांस कचमच-कचमच की आवाज कर रहे थे और सूखे वांस ढोल की तरह वज रहे थे। वहां फूलों से लदे पेड़ थे और वारह भालू थे जो हो-हो करके चिग्घाड़ते थे और अपने पंजे हवा में हिलाते हुए उलट जाते थे। वहां जव एक पत्ती गिरी तो पैंतीस वाघ यह देखने को दौड़

पड़े कि माजरा क्या है। यह एक अद्भुत देश था। लड़के ने दूर एक पेड़ की चोटी पर सुनहले मोर को देखा। पर यह इतनी ऊंचाई पर था और लड़का इतना छोटा था कि वह वहीं बैठ गया और फिर रोने लगा। उसी समय एक हाथी उधर से गुजरा। और उसने उससे पूछा, 'छोटे भैया, तुम रो क्यों रहे हो?'

लड़के ने कहा, 'हाथी भाई, राजा ने मुझे सुनहले पंखों वाला मोर लाने को भेजा है पर वह इतनी ऊंचाई पर है कि मैं वहां तक पहुंच ही नहीं सकता। मोर नहीं मिला तो राजा मुझे जमीन में गाड़ देगा और मेरे सिर के ऊपर आग जला देगा।'

इस पर हाथी ने लड़के को अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और उस पेड़ के पास ले गया जिस पर मोर बैठा था। उसने पेड़ को तोड़ दिया और मोर जमीन पर गिर गया। लड़के ने उसे पकड़ लिया।

जब लड़का सुनहले मोर को लेकर वापस आया तो राजा उससे इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपनी लड़की का ब्याह उससे कर दिया और उसके मरने के बाद वह लड़का ही उस देश का राजा बना।

चुराई हुई आंखें

यह कहानी बस्तर के वनों से भरी हुई सुहावनी पहाड़ियों में प्रचलित है। इस कहानी में एक बात तो उस दूर-दूर तक फैले विश्वास की है कि आदमी अपनी 'आत्मा' को बचाने के लिए शरीर से बाहर कहीं छिपाकर रख सकता है। इसका एक नियम यह है कि जिसकी आत्मा है वह चाहे जितनी भी दूर हो, जिसमें आत्मा छिपाकर रखी गई है उसे जो कुछ होगा वही उसके साथ भी होकर रहेगा।

एक मरिया राजा के सात बेटे थे। पड़ोस के राज में एक दूसरा मरिया राजा था जिसके सात लड़कियां थीं। दोनों राजाओं के सामने अपने बच्चों की शादी तय करने की समस्या थी पर वे एक दूसरे को जानते नहीं थे इसलिए वे अपने परिवार के सभी बच्चों को दूसरे परिवार में ब्याहने का समझौता नहीं कर सकते थे, जो आसान भी था और दोनों के मेल का भी था।

अंत में राजा के सातों लड़कों ने अपने लिए दूल्हनों की तलाश में बाहर जाने का मन बनाया। पर राजा ने कहा कि कम से कम एक लड़का उसके पास राज-पाट संभालने में उसकी मदद करने के लिए रह जाए और उसने सबसे छोटे

बेटे को जिसे वह बहुत प्यार करता था, अपने पास रख लिया। जब छहों बड़े बेटे अपनी राह जा रहे थे तो उन्हें उस मरिया राजा के बारे में पता चला जिसकी सात बेटियां थीं। वे उसके पास गए और उसकी छह लड़कियों से धूम-धाम से ब्याह कर लिया। सातवीं बेटी को वे अपने छोटे भाई के लिए साथ लेते आए।

जब वे वापस लौट रहे थे तो उन्होंने एक विशाल बरगद के नीचे डेरा डाला। इस पेड़ के पास ही एक ताल था। इस ताल में एक दुष्ट दानव रहता था। जब उसने इन सातों सुंदर कन्याओं को देखा तो उसने उनके पतियों को खत्म करके उनको हर लेने की ठान ली। वह हवा में उड़ा और उनके ऊपर उसी तरह आ गिरा जैसे बादल उठकर सूरज पर छा जाता है और चारों ओर अंधेरा छा जाता है। अब वे छहों भाई और उनके घोड़े पत्थर हो गए और दानव ने लड़कियों को पकड़ लिया और उन्हें उसी पेड़ के नीचे रख लिया। वह हर दिन जंगल में जाता और उनको खिलाने के लिए कंद खोदकर ले आता। वह भोर होते ही निकल जाता और रात होने पर लौटता।

जो लड़का घर पर रह गया था वह उनकी बाट जोहता-जोहता थक गया और तब सभी को यह चिंता सताने लगी कि कहीं उनके साथ कोई आफत-बिपत तो नहीं घट गई। इसलिए वह उनको खोजने चल पड़ा और कुछ समय बाद दूसरे मरिया राजा के महल में पहुंचा जिसने बताया कि उसके भाइयों को अपनी दूल्हनें लेकर रवाना हुए कई दिन हो गए। छोटा राजकुमार उसी रास्ते से वापस चला जिससे होकर उसके भाई चले थे और जल्द ही वह उस तालाब पर पहुंच गया और सातों लड़कियों को बरगद के पेड़ के नीचे देख लिया। उन्होंने उसे पूरा हाल कह सुनाया और शाम होने को आई तो उससे विनती की कि वह वहां से भाग जाए क्योंकि दानव आकर उसको मार डालेगा।

लेकिन राजकुमार अपने जादू के बल से एक मक्खी में बदल गया और बरगद के पेड़ में छिप गया। दानव को इसकी भनक तक न मिली। सवेरा होने पर वह कंद-मूल की खोज में जंगल चला गया तो राजकुमार ने फिर आदमी का रूप धारण कर लिया और लड़कियों से कहा कि वे दानव से पूछें कि उसने अपनी आत्मा को कहां छिपा रखा है। उस सांझ दानव कुछ अधिक देर से घर लौटा और लड़कियों ने नकली चिंता जताते हुए कहा, 'कभी-कभी तुम इतनी देर से लौटते हो कि हमलोग घबरा जाती हैं। तुम इतना बता दो कि तुम्हारी आत्मा कहां है जिससे कोई विपदा आने पर हम झट तुम्हारी सहायता

को तो आ सकें।

दानव ने कहा, 'सात समुंदर और सोलह नदियों के पार एक बरगद का पेड़ है। उस पेड़ पर एक सुनहला पक्षी रहता है। उस पक्षी में ही मेरी आत्मा बसती है।'

अगली भोर दानव के काम पर जाते ही लड़कियों ने राजकुमार को उस पक्षी की बात बता दी और वह तुरत उसकी खोज में निकल पड़ा। जब वह जा रहा था तो उसके रास्ते में एक ताड़ का पेड़ मिला जिस पर एक चिड़िया का घोंसला बना हुआ था। वह चिड़िया जितनी बार अपने अंडे सेकर बच्चे निकालती उतनी बार एक सांप रेंगता हुआ ऊपर जाता और उन्हें चट कर जाता। जब राजकुमार उधर से गुजर रहा था तो उसने उन चुरुंगों को चिंचियाते हुए सुना और देखा कि एक सांप ऊपर की ओर चढ़ा जा रहा है।

उसने अपनी तलवार निकाली और सांप को मार डाला और फिर अपनी राह हो लिया। जब चुरुंगों की मां वापस आई तो उन्होंने बताया कि कैसे राजकुमार ने उनकी जान बचाई है। चिड़िया इस नेकी के लिए धन्यवाद जताने के लिए उसके पीछे उड़ी और उसके पास जाकर बोली, 'तुम्हें जिस सुनहली चिड़िया की तलाश है उसकी खोज में मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।'

लंबे समय के बाद वे सातों समुंदरों और सोलहों नदियों के पास पहुंचे। चिड़िया ने लड़के को अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और उसे लेकर उनके पार उड़ गई। वहां बरगद का पेड़ था और जब लड़का उसके ऊपर चढ़ा तो उसे वह सुनहला पक्षी भी मिल गया। उसने इस पक्षी को ज्योंही अपने हाथों में पकड़ा, दानव, दूर उस जंगल में जहां वह कंद खोद रहा था, बीमार पड़ गया।

उस दोस्त चिड़िया ने राजकुमार को फिर अपनी पीठ पर चढ़ाया और सोलहों नदियों और सातों समुद्रों के पार उड़ चली और कुछ ही समय में वे उस जगह पहुंच गए जहां लड़कियां उसकी राह देख रही थीं। अब उसने उस पक्षी के पर नोच डाले और इसके साथ ही दानव के बाल गिर गए। उसने पक्षी के पंख तोड़ दिए और इसके साथ ही दानव के हाथ टूट गए। उसने पक्षी के पांव तोड़ दिए और इसके साथ ही दानव के पांव टूट गए। अब उस पंगु पक्षी को लेकर राजकुमार दानव के पास पहुंचा जो जंगल में असहाय पड़ा हुआ था और उससे कहा, 'यदि तुमने मेरे भाइयों को जीवित नहीं किया तो मैं इस पक्षी की गर्दन काट दूंगा और इसके साथ ही तुम भी मर जाओगे।'

दानव ने कांपते हुए झटपट उसके भाइयों को फिर से जीवित कर दिया पर इसके बाद भी राजकुमार ने पक्षी की गर्दन मरोड़ दी और दानव मर गया।

पर जब छोटे भाई ने दूसरे भाइयों को पूरी कहानी बताई और यह बताया कि उसने उनकी जान कैसे बचाई तो उनके मन में जलन पैदा हो गई और वे उसकी हत्या करने की सोचने लगे। फिर भी, सबसे बड़े भाई को यह बात पसंद नहीं आई और उसने सुझाव दिया कि वे उसकी जान लेने की जगह उसकी आंखें निकाल लें।

उन्होंने कहा, 'आओ प्यारे भाई, नदी के किनारे चलकर मछलियां पकड़ें।'

वहां पहुंचने पर उन्होंने उसकी आंखें निकाल लीं और उसे उसके भाग्य पर छोड़ दिया। जब वे बरगद के पेड़ के पास पहुंचे तो सबसे छोटे राजकुमार की पत्नी ने पूछा कि उसका पति कहां है। उन्होंने कहा, 'वह आ ही रहा होगा।' यह कहकर वे आगे चल पड़े। पर उस लड़की के मन में खटका पैदा हो गया

कि हो न हो, दाल में कुछ काला है। वह दूसरों से पीछे रह गई और लौटकर नदी के किनारे गई जहां उसने पाया कि उसका पति अंधा और असहाय होकर पड़ा हुआ है। वह उससे विनती करने लगी कि वह उसके साथ चले, पर उसने कहा, 'यदि तुम मुझसे सचमुच प्यार करती हो तो जो मैं कहता हूं वह करो। तुम अमुक राजा की राजधानी चली जाओ। तुम्हारी सुंदरता को देखकर वहां हर एक आदमी तुमसे प्यार करने लगेगा। पर तुम कहना, तुम उसी से ब्याह करोगी जिसका वाण आकाश को छू लेगा।' लड़की से जैसा कहा गया था उसने वैसा ही किया। सैकड़ों नौजवान उससे व्याह रचाने को आए पर किसी का वाण आकाश को छू न सका।

इधर अंधे राजकुमार ने जैसे-तैसे नदी को पार कर लिया। उधर जाने पर उसने पाया कि एक मरिया अपने खेत से चिड़ियां उड़ा रहा है। उसने उससे कहा कि चिड़ियां उड़ाने का काम वह कर सकता है। मरिया यह सोच कर हंस पड़ा कि यह अंधा भला क्या चिड़ियां उड़ा पाएगा।

लड़के ने कहा, 'यदि तुम अपने खेत के चारों ओर घुमा दो तो तुम जो चाहते हो मैं करके दिखा दूंगा।'

मरिया ने उसे अपने खेत के चारों ओर घुमाया और इसके बाद लड़के ने वहुत सारे पत्थर जुटाए और मचान पर जा बैठा। जहां भी वह चिड़ियों के पंख की फड़फड़ाहट सुनता उधर पत्थर चला देता और चिड़िया डरकर भाग जाती।

उस नदी में सात जलपरियां और एक बुडुआ रहता था। वे हर रात पानी से निकलकर नाचते और किलोल करते। जब उन्होंने मचान पर इस लड़के को देखा तो उसे भी अपने साथ नाचने-कूदने को बुलाया। पर उसने कहा, 'वह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि उसके पास आंखें नहीं हैं। इस पर जलपरियों ने उसे एक जोड़ा आंखें लाकर दे दिया और अब वह देख भी सकता था और उनके साथ खेल भी सकता था। पर भोर होने से पहले ही वे आंखें वापस ले लेतीं और राजकुमार फिर अंधा हो जाता। यह सिलसिला कई दिनों और कई रातों चलता रहा और इसके वाद एक दिन राजकुमार ने मरिया से अपनी पूरी कहानी वता दी। मरिया इस बात से वहुत प्रसन्न था कि वह उसके खेतों की रखवाली चिड़ियों से कर रहा था इसलिए उसने जलपरियों से आंखें हासिल करने में उसकी मदद करने की ठान ली। वह गांव के दूसरे लोगों को साथ ले आया और वे नदी के किनारे की झाऊ-कास में दुवककर बैठ गए। रात को जलपरियां और बुडुआ हर रात की तरह खेलने आए और उन्होंने आंखें लड़के को दे दीं। आंखें

मिलते ही वह उन्हें लेकर भाग चला। जलपरियों ने और वुडुआ ने उसका पीछा किया कि उसी समय झाड़ियों में से गांव के लोग निकल आए और उन्होंने उन्हें खदेड़ दिया।

अव राजकुमार अपनी दूल्हन की खोज में निकला। रास्ते में उसे उस सुंदर लड़की के बारे में चर्चा सुनने को मिली जो केवल उसी आदमी से ब्याह करेगी जिसको वाण आकाश को छू ले। वह उस जगह पर गया और तुरत वाण से आकाश को भेद दिया और दावा किया कि यह लड़की अव उसकी दूल्हन हो गई। पर वह इतना मैला-कुचैला था और उसके कपड़े इस तरह फटे हुए थे कि वह उसे पहचान ही न पाई। लेकिन जब उसने राजा के दिए हुए कपड़े और गहने पहने तो उसका असली रूप प्रकट हो गया और उसने उसे पहचान लिया। जब राजा ने सुना कि वह सचमुच का राजकुमार है तो उसने उसे बहुत सारा धन और अपने घर पहुंचाने के लिए साथ में सेना की एक टुकड़ी दी।

जब वह अपने राज्य में पहुंच गया तो उसने अपना पड़ाव राजभवन के पास ही डाला और अपने पिता और भाइयों को दावत पर वुलाया। जव वे आपस में वात कर रहे थे तो राजा ने बताया कि उसका सवसे छोटा लड़का कैसे गायब हो गया है। इस पर राजकुमार ने कहा कि मैं एक कहानी सुनाता हूं और शुरू से लेकर अंत तक जो कुछ हुआ था उसे उसने पूरे विस्तार से सुना दिया। वूढ़े राजा ने अपने बेटे को पहचान लिया और उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। परंतु उसने अपने छहों दुष्ट लड़कों को देश निकाला दे दिया। समय आने पर छोटा लड़का ही राजा बना।

मृग-वाला

एक राजा शिकार पर गया। उसने एक गर्भवती मृगी को पकड़ लिया। उसने उसके पांव बंधवा दिए और उसे घर ले आया, परंतु उसके लड़के ने बंधन खोल दिए और उसे जाने दिया। जव राजा को यह वात मालूम हुई तो वह विगड़ उठा और उसने अपने लड़के को देश निकाला दे दिया।

राजकुमार उदास मन लिए एक जगह से गुजर रहा था कि तभी वह मृगी दौड़ी हुई उसके पास आई और आते ही आते वारह वर्ष की एक सुंदर कन्या वन गई। उसने कहा, 'मैं अपराधी हूं। मेरे पास न आओ नहीं तो तुम्हें इसके लिए पछताना पड़ेगा।' पर मृगवाला ने उसकी वात पर ध्यान ही न दिया और उसके पीछे-पीछे जंगल में घूमती रही। कुछ देर वाद राजकुमार को बहुत

जोरों की प्यास लगी। उसे एक गड्ढा मिल गया जिसमें वहुत थोड़ा सा पानी था। वह उसका पानी पीने के लिए झुका। वहां उसने देखा कि एक सांप ने एक मेढक को अपने मुंह में पकड़ रखां है। मेढक अभी जीवित था और टर-टर-टर करके चीत्कार कर रहा था। राजकुमार सांप को मार नहीं सकता था क्योंकि ऐसा करना पाप होता। पर उसने तय कर लिया कि वह मेढक की जान अवश्य वचाएगा। उसने अपनी दायीं भुजा में से थोड़ा सा मांस काटा और इसे मेढक के वदले सांप को दे दिया। मेढक की जान वची तो वह मौज से उछलता हुआ एक ओर चला गया। इसके वाद मृगवाला और राजकुमार दोनों एक दूसरे देश चले गए।

उस देश की राजधानी में एक नाई ने उस लड़की को देख लिया और वह दौड़ा-दौड़ा गया और राजा से बोला, 'एक बहुत सुंदर बालिका आई हुई है। उसे आप को अपने रनिवास में रख लेना चाहिए।'

राजा ने कहा, 'मैं उसे उसके पति से अलग कैसे कर सकता हूं?'

नाई ने समझाया, 'उसे वुलाकर कहिए कि वह एक कटोरा वाघिन का दूध ले आए नहीं तो उसे मरवा दिया जाएगा।'

अगले दिन राजा ने लड़के को अपने दरवार में बुलवाकर कहा कि वह एक कटोरा वाघिन का दूध ले आए नहीं तो उसे मरवा दिया जाएगा। लड़का बहुत उदास मन से घर लौटा तो उस वालिका ने उससे उदासी का कारण पूछा। जव उसने पूरी वात वताई तो वह बोली, 'डरने की कोई बात नहीं। दूध तुम्हें मिल जाए, इसका जिम्मा मैं लेती हूं। कटोरा ले लो और बाघिन की खोज में चल पड़ो। जब वह हमला करे तो अपना दायां हाथ ऊपर उठा दो और वह तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचाएगी। क्योंकि मैं इस हाथ में अपना जादू उतार दे रही हूं।'

राजकुमार दूर जंगल के भीतर चला गया और वहां उसे एक बाघिन अपने छौनों के साथ सोई हुई मिली। जब उसे आदमी की गंध मिली तो बाघिन उछली और लड़के की ओर दौड़ी। पर लड़के ने अपना दायां हाथ उठा दिया और बाघिन कुछ सोचती हुई सी ठिठक गई। उसने अपने छौनों से कहा, 'यह तुम्हारी सबसे छोटी बहन के घर से आया है। वह दूध के लिए आया है। हमें इसे दूध दे देना चाहिए।' इसके वाद वाघिन ने अपने ही पंजों से अपना दूध निकालकर उस कटोरे में भर दिया और उसे लड़के को थमा दिया। वह अपने दोनों छौनों को लिए-दिए उसके साथ राजा के महल तक गई। जव राजा ने उन्हें देखा तो वह डर गया।

पर अगले दिन नाई फिर आया और बोला, 'डरने की कोई बात नहीं।

आप उस कन्या को अपने महल में लाकर ही दम लें।'

राजा ने कहा, 'पर इसके लिए मैं करूं क्या?'

'उसके पति को दानवों के देश से अनाज लाने को कहो।'

राजा ने एक बार फिर उस लड़के को बुलवाया और उसे यही हुक्म दे दिया। लड़का फिर मुंह लटकाए वापस लौटा तो लड़की ने पूछा कि वह उदास क्यों है। इस पर लड़के ने पूरी बात बता दी। लड़की ने कहा, 'डरने की कोई बात नहीं। जितना अनाज उसने लाने को कहा है मैं उससे दूना अनाज मंगवा दूंगी। मैं एक छड़ी पर एक संदेशा लिखूंगी और जब दानव इसे देखेगा तो वह राजी-खुशी तुम्हें अनाज दे देगा।'

लड़के ने वह छड़ी ली और जंगल में दानवों के इलाके में चला गया। वहां एक दानवी, अपना एक कान जमीन से सटाए और एक कान आने वाले अजनवी लोगों को अकनने के लिए खोले, सोई पड़ी थी। उसने इसे आते देखा तो उछली और उसकी जान लेने को बढ़ी। पर जैसे ही उसने छड़ी पर लिखे संदेश को पढ़ा उसने वह सारा अनाज दे दिया जो वह चाहता था और उसके साथ दो दानव उसे छोड़ने राजा के महल तक आए। यह देख कर राजा की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

उसने नाई को फिर बुलवाया। नाई ने कहा, 'इस बार रानी के हार को कुएं में डलवा दीजिए और इस लड़के से कहिए कि वह हार निकालकर लाए।'

राजा ने लड़के को फिर बुलवाया और कहा, 'मेरी रानी का हार कुएं में गिर गया है। उसे निकालकर बाहर लाओ नहीं तो मैं तुम्हें फांसी पर चढ़वा दूंगा।'

राजकुमार इस बार बहुत घबरा गया। वह बात लौटकर जब उसने

मृगकन्या को वताई तो उससे भी कुछ कहते नहीं वन पड़ा। पर इसी समय वे मेढ़क और सांप जिनकी उसने मदद की थी, सामने आए और उन्होंने कुएं में से हार निकालकर दे दिया और राजकुमार ने इसे राजा के सामने हाजिर कर दिया।

एक वार फिर नाई राजा के पास गया। राजा ने कहा, 'यह लड़का इतना चालाक है कि इसके सामने हमारा कोई वश नहीं चलता।'

पर नाई ने कहा, 'एक वार और परखा जाए। इसे वुलाकर हुक्म दीजिए कि वह एक ही रात में आमों का फलों से लदा हुआ वगीचा तैयार कर दे। वह ऐसा कर नहीं पाएगा और उस दशा में आप उसको फांसी दिलवा सकते हैं।'

राजा ने कहा, 'यह तो वहुत कमाल का विचार है।'

इस वार लड़के ने जव राजा का हुक्म सुना तो उसके होश उड़ गए। जव लड़की को इसका पता चला तो उसने कहा, 'तुम आराम से खाना खाओ। आम का वगीचा तुम्हारे लिए मैं वनाऊंगी। तुम वस इतना करो कि कहीं से एक तलवार और एक पसेरी नमक ले आओ। तलवार को नमक से तव तक साफ करते रहो जव तक वह चमकने न लगे। उसके वाद मैं मृगी वनकर पूरे गांव में दौड़ लगाऊंगी। जव मैं लौटकर आऊं तो तुम मेरा सिर उड़ा देना।'

रात हुई तो मृगवाला ने पूरे गांव का चक्कर लगाया। वह जहां से भी दौड़ती हुई गुजरती वहां फलों से लदवद आम के पेड़ उठ खड़े होते। इस तरह पूरा गांव आम के पेड़ों से भर गया। जव वह लौटकर आई तो राजकुमार ने उसका गला काट दिया और काटने के साथ ही वह फिर लड़की में बदल गई। भोर होने पर राजा को चारों ओर फलों से लदे आम ही आम दिखाई दे रहे थे। अव उससे कुछ और कहते न वना।

कुछ दिनों वाद राजकुमार ने अपनी पत्नी को लेकर घर लौटने का निश्चय किया। वे वहां से चल पड़े। वे कई दिनों तक जंगलों और मैदानों से होकर चलते रहे। अंत में वे उस जगह पहुंचे जहां मृगी ने वालिका का रूप धारण किया था। यहां आकर लड़की ने कहा, 'अव मैं अपनी विरादरी में जाऊंगी और तुम अपने पिता के पास चले जाओ।' उसने उसको अपनी वांहों में भर लिया और इसके साथ ही वह मृगी वनकर भागती हुई वन में चली गई। राजकुमार अकेला ही अपने पिता के पास लौटा।

संपत्ति और बुद्धि

भारतीय गांवों में बुनकर का अक्सर मजाक उड़ाया जाता रहा है। बुनकरों को लेकर बस्तर के मुड़िया समाज में जो कहानी चलती है वह यहां दी जा रही है :

एक बार संपत्ति और बुद्धि का राह चलते आमना सामना हो गया और यह बहस छिड़ गई कि दोनों में बड़ा कौन है। अभी वे एक दूसरे से उलझतीं चली ही जा रही थीं कि वे एक शहर में पहुंच गए जिसमें चोर भरे हुए थे और इनके पहुंचने से पहले ही किसी चोर ने राजा का ही घोड़ा चुरा लिया था। कोई चोर का पता नहीं लगा सका था और हारकर राजा को खुद ही प्रजा का भेस बनाकर इसका पता लगाने के लिए निकलना पड़ा था।

रात का समय था। बरसात भी चालू हो गई थी। राजा ने एक जुलाहे के घर के ओसारे में शरण ली। इसी समय जुलाहिन पानी फेंकने को बाहर निकली तो उसे देखते ही चिल्लाती हुई भागी, 'एक चोर हमारे ओसारे में छिपा हुआ है।'

लोग इकट्ठा हो गए। उन्होंने राजा को पकड़ लिया और उसकी धुनाई करने लगे। राजा चिल्लाता रहा, 'अरे मैं चोर नहीं, तुम्हारा राजा हूं।'

सभी के सभी उसकी बात सुनकर यह कहते हुए हंसने लगे, 'क्या हमारा राजा इस तरह भटकता फिरता है। वह तो राजसिंहासन पर बैठता है।'

वे उस अभागे की पिटाई तब तक करते रहे जब तक उसकी एक टांग टूट नहीं गई। जुलाहे ने तो उसे उठाकर बीच सड़क पर ही पटक दिया।

राजा वहां पड़ा-पड़ा कराह रहा था कि उसी समय संपत्ति और बुद्धि दोनों गला फाड़कर बहस करते वहां आ पहुंचीं। वे दोनों राजा को देखकर यह पता लगाने के लिए ठिठक गईं कि मामला क्या है। राजा ने उन्हें सारी घटना कह सुनाई। वे अपने ही झगड़े में इतनी डूबी हुई थीं कि उन्हें राजा की बात सुनने की फुर्सत नहीं थी। उन्होंने कहा, 'यदि तुम सचमुच के राजा हो तो फैसला करो कि हम दोनों में बड़ा कौन है।'

राजा ने अपनी चोट का ख्याल करके और यह सोचकर भी कि दोनों में कोई भी बुरा न माने, कहा, 'मेरी समझ से तुम दोनों ही बराबर हो।'

संपत्ति ने कहा, 'यह तो कोई फैसला हुआ नहीं। देखो, हममें से जो भी राजा की टूटी हुई टांग ठीक कर देगा वही दूसरे से बड़ा होगा।'

संपत्ति ने राजा की टूटी हुई टांग के चारों ओर सोने और चांदी का ढेर लगा दिया पर इससे उसका दर्द और बढ़ गया, कम न हुआ। बुद्धि ने बांस की खपच्चियां और कुछ जंगली जड़ी बूटियां लीं और राजा की टांग को ठीक कर दिया। वह खड़ा होनें और चलने लायक हो गया।

इसके बाद बुद्धि ने कहा, 'अव तो यह सिद्ध हो गया न कि मैं तुमसे बड़ी हूं।'

संपत्ति ने कहा, 'एक आदमी की टांग ठीक करने में क्या धरा है! मैं तुमसे बड़ी हूं।'

बुद्धि ने कहा, 'दिखाओ तो सही।'

वे अपनी राह चलते रहे और कुछ ही देर बाद वे एक गरीब जुलाहे के घर के सामने पहुंच गए। वह इतना गरीब था कि उसकी एक-एक हड्डी गिनी जा सकती थी। खाने के नाम पर उसे कंद-मूल ही मिलता था। संपत्ति ने कहा, 'इस अभागे जुलाहे को देखो। क्या इससे भी अधिक दरिद्र, दुखियारा कोई दूसरा हो सकता है? इससे नीची और तिरस्कृत कोई दूसरी जाति हो सकती है? मैं यदि इसका विवाह राजा की लड़की से करा दूं तब तो मानोगे न कि मैं तुमसे बड़ा हूं?'

बुद्धि ने इस दूर की कौड़ी पर हंसते हुए कहा, 'क्यों नहीं, क्यों नहीं।'

उस जुलाहे ने अपने खेत में मक्का बो रखी थी। संपत्ति ने एक-एक डंठल में चार-चार बालियां लगा दीं और उनका एक-एक दाना सोने का बना दिया। जब फसल तैयार हुई और सौदागर उसका अनाज खरीदने आए तो वह इतना मूरख निकला कि उसने पांच-पांच बालियां एक-एक पैसे में बेच दीं। सौदागरों ने उसे घर ले जाकर जब देखा कि दाने तो सोने के हैं तो वे डर गए। उन्होंने इन्हें ले जाकर राजा को भेंट के रूप में पेश करने की बात सोची। जब उसने यह देखा तो उसने जुलाहे को बुलवा मंगाया और उससे कहा, 'तुम अपने बगीचे की सारी मक्का मुझे दे दो और इसके बदले मैं अपनी बेटी का ब्याह तुम्हारे साथ कर दूंगा।'

उसने अपने खेत की सारी मक्का राजा को दे दी और उसका ब्याह राजकुमारी से हो गया। वे दोनों नगर के एक बहुत सजीले मकान में रहने को चले गए। पर जुलाहा जब कभी कोई कीमती सामान देखता वह अपना हाथ कुछ इस तरह चलाता, जैसे कपड़ा बुंनते समय चलाता था, और मुंह से टुकरुस-टुकरुस की आवाज निकालता। उसकी बीवी इस पर खीझ उठी और बोली, 'अव तुम राजा के दामाद हो। अब तुम्हें अपना काम सीखने के लिए राजसभा में जाना चाहिए।' और उसने अपने मन में सोचा, 'यदि यह कल

राजसभा में नहीं गया तो मैं इसकी जान ले लूंगी और बेवा होकर अपने दिन काट लूंगी।'

इस पर वुद्धि ने संपत्ति से कहा, 'तुमने उस अभागे का व्याह तो राजकुमारी से करा दिया पर क्या इससे उसका कोई भला हुआ? वह यदि कुछ कर पाता है तो टुकरुस-टुकरुस की आवाज और चारों ओर अपनी ढरकी को तलाशता फिरता है। और कल उसको अपनी जान से भी हाथ धोना होगा।'

संपत्ति ने कहा, 'चलो, अव वाजी यह रही कि हम दोनों में जो उसकी जान वचा सकेगा वही बड़ा माना जाएगा।'

बुद्धि ने इसे मान लिया और झटपट उसके पास जाकर उसे ज्ञान से भर दिया। अगले दिन वह सवेरे ही उठा, नहाया, पूजा करने मंदिर गया और फिर राजसभा में चला गया। उसकी पत्नी बहुत प्रसन्न हुई और उसने सोचा, 'मेरे पति को कुछ समझ तो आई।' इसके बाद जुलाहा राज दरबार जाने लगा और कुछ समय बाद राज-काज़ चलाने में वहुत चालाक हो गया, अंत में राजा ने उसे मंत्री वना दिया।

अव संपत्ति और वुद्धि दोनों मिलीं तो संपत्ति ने हंसते हुए कहा, 'तुमने तो उस बेचारे को मंत्री वना दिया और उसकी जान बचा ली। पर यदि मैं उसे उस पद से हटा दूं तो हम दोनों में कौन वड़ा माना जाएगा?'

वुद्धि ने कहा, 'तव तो तुमको ही बड़ा मानना होगा।'

संपत्ति नगर के एक वाभन के पास पहुंची और उसे सोने और चांदी से मालामाल कर दिया। अव बाभन राजा के पास गया और वोला, 'महाराज, आप एक प्रधान हिन्दू राजा हैं, या नहीं ? आप ने अपनी कन्या एक जुलाहे को दे दी जो एक नीच जाति का है, तो भी किसी ने कुछ नहीं कहा; पर अब आप ने उसे मंत्री वना दिया तो राह चलता आदमी भी आप पर हंस रहा है। हम हाथ जोड़कर विनती करते हैं कि इस आदमी को इस पद से हटाकर किसी और को रखिए।'

राजा ने कहा, 'वह अपना काम अच्छी तरह कर रहा है फिर हम उसे हटा कैसे सकते हैं?'

बाभन बोला, 'वह अपना काम अच्छी तरह करता है तो उससे कहिए, तुम जुलाहे हो और तुम्हारा हुनर बुनकरी का है। मैं ऐरे-गैरे जुलाहों का वुना कपड़ा नहीं पहनना चाहता। मैं जव मंदिर जाता हूं उस समय मैं मकड़ी के जाले का वना एक कपड़ा पहनना चाहता हूं।' वह ऐसा कपड़ा एक महीने के भीतर बनाकर दे दे तव तो ठीक, नहीं तो उसको मरवा दीजिए।

राजा ने उसकी वात सुनी और जव मंत्री मिलने आया तो उसने उससे

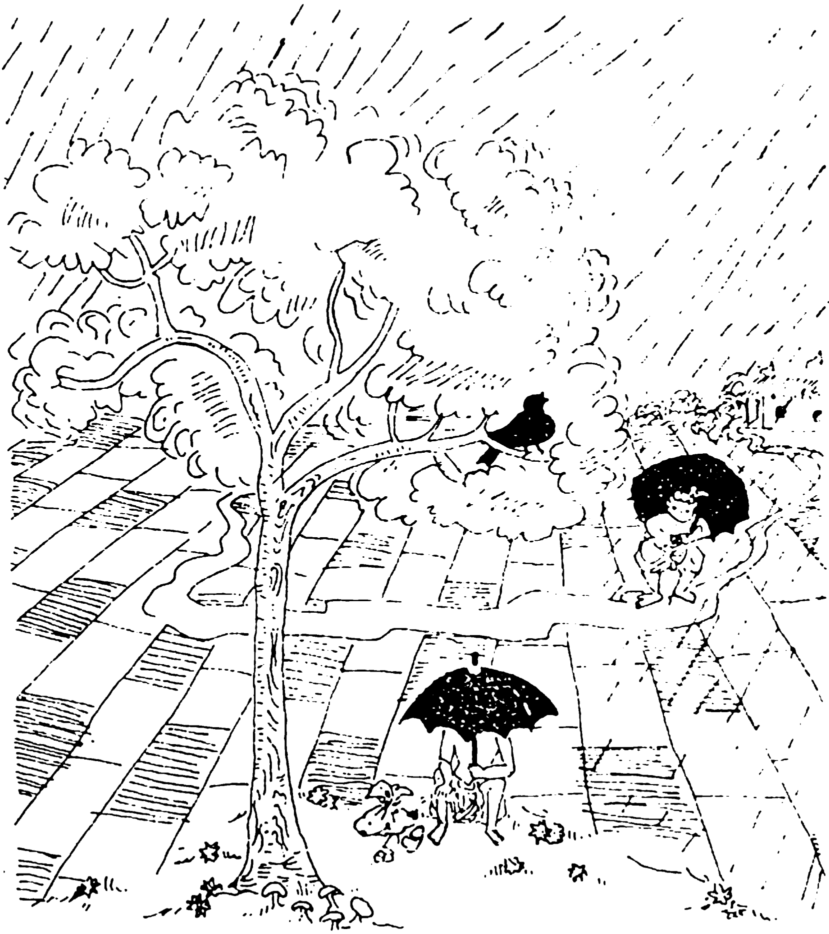

मकड़ी के जाले से वना कपड़ा लाने को कहा। अभागा आदमी अपने घर गया और जो कुछ हुआ था उसे अपनी बीवी और बच्चों को सुनाया। वे इतने डर गए कि दिन-दिन कुम्हलाने लगे। पर उसका जो सबसे छोटा वच्चा था उसने सोचा कि यदि ये सभी मर गए तो मैं भी नहीं वचूंगा। अच्छा है कि मैं किसी तरह वच निकलूं।' यह सोचकर उसने एक छाता और कुछ खाना लिया और भागकर एक दूसरे नगर में चला गया जहां उसने एक व्यापारी के घर में शरण ली। उस व्यापारी के एक लड़की थी। व्यापारी धनी था। उसके साठ तो हल थे। लड़का उसके साथ खेत पर जाता तो जब किसी नदी को पार करना होता,

वह जूते पहन लेता और सूखे पर आ जाता तो जूते उतारकर हाथ में ले लेता। जब पानी बरस रहा होता तो वह छाता बंद कर लेता, पर जब वह किसी पेड़ के नीचे पहुंचता छाता तान लेता।

एक दिन व्यापारी अपने खेत में बैठा अपने नौकरों को बीज बोते देख रहा था। वह लड़का उसके पास आया और बोला, 'चाचा जी, क्या ये हल और बैल हैं? इतनी बड़ी फसल होने पर आप अपने कितने खत्ते भूसे से भर सकते हैं?' व्यापारी की समझ में कुछ नहीं आया, पर लड़का वही सवाल तब तक दुहराता रहा जब तक वह आदमी अपना आपा नहीं खो बैठा और तंग आकर घर नहीं चला गया। उसकी लड़की ने उसे खाना परोस दिया और रसोई में लौटी तो वह हंसने लगा। लड़की दौड़ी-दौड़ी वापस आई और उससे पूछ बैठी, 'आप इससे पहले कभी खाना खाते समय हंसते नहीं थे, अभी खाते-खाते आपको हंसी क्यों आई?' वह कोई जवाब नहीं दे पाया इसलिए उसने उसकी थाली यह कहते हुए हटा ली कि जब तक वह अपनी हंसी का कारण नहीं बताएंगे उन्हें खाना नहीं मिलेगा। इसके बाद उसने उस मूर्ख लड़के की पूरी कहानी सुनाई और फिर बोला, 'वह इतना मूर्ख है कि मैं उसकी याद आने पर अपनी हंसी रोक ही नहीं पाया।'

लड़की ने कहा, 'उसे मुझे हंसाने के लिए यहां बुलवाइए नहीं तो मैं आप को कुछ भी खाने को नहीं दूंगी।'

व्यापारी को भूख लगी थी इसलिए वह उस लड़के को ले आने को चला गया। लड़के ने कहा, 'मैं नहीं आता। पहले अपनी लड़की से जाकर पूछो कि वह पक गई है, या कच्ची है।'

वह आदमी गया और उससे पूछा। उसने कहा, 'पक गई।'

दूसरी बार लड़के ने कहा, 'पूछो, घास उग आई है या नहीं।'

लड़की ने कहा, 'उग आई है।'

यह सुनने के बाद लड़का उसके घर गया। लड़की ने दो या चार जगहों पर खाना परोस दिया—एक ओसारे में, दूसरा द्वार पर, तीसरा कमरे के बीच में और चौथा रसोई में। सबसे पहले बूढ़ा घुसा और वह द्वार पर परोसे गए थाल को खाने बैठ गया। लड़का कमरे के बीच में बैठ गया। जब वे खाना खा चुके तो लड़का वहीं लेट रहा और सो गया। व्यापारी ने अपनी बेटी से कहा, 'देखो न इसकी नादानी। ओसारे में खाना परोसा हुआ था फिर भी यह घर के भीतर आकर बैठा।

इसके बाद लड़की ने इन बातों का खुलासा किया, 'लड़का पानी में जूता इसलिए पहनता था कि पानी में यह दिखाई नहीं पड़ता कि पांवों के नीचे क्या

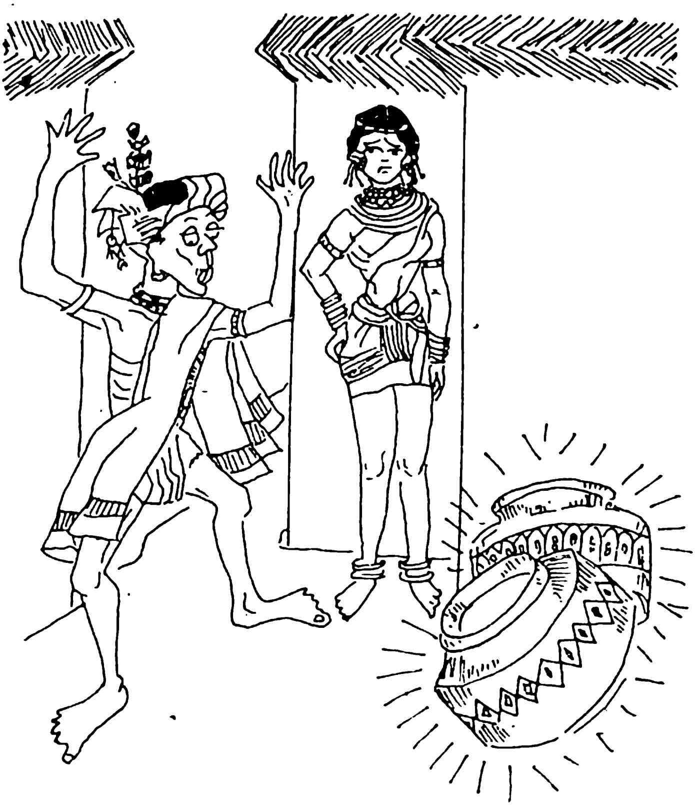

है पर खुले में हर चीज दिखाई पड़ती है। वह पेड़ के नीचे आने पर छाता इसलिए लगा लेता है कि उस पर बैठी कोई चिड़िया यदि बीट करे भी तो उसके शरीर पर न गिरे। मैंने चार स्थानों पर थालियां यह सोचकर परोसी थीं कि यदि वह छोटी जात का हुआ तो ओसारे में बैठ जाएगा पर वह ऊंची जात का है इसलिए वह घर के भीतर घुस आया और कमरे के बीच में बैठा। खभोड़ू होता तो सीधे रसोई में जा बैठता।' उसे यह जान कर बड़ा सुख मिला कि लड़का चालाक है, अच्छे कुल का है और नपा-तुला भोजन करता है। इस पर व्यापारी हंस पड़ा और उसने अपनी लड़की का ब्याह उसके साथ करने का मन बना लिया।

ब्याह के बाद लड़का अपने परिवार और उस संकट के बारे में सोचने लगा जिसमें वह पड़ गया था। जव उसकी लुगाई सो जाती तो वह उनकी याद करके रोने लगता और भोर होने पर लड़की पाती कि उसकी चटाई के नीचे

की जगह आंसुओं से गीली है। कुछ दिन वह यह सव देखती रही फिर उसने अपने पति से यह जान लिया कि माजरा क्या है। जव उसने पूरी कहानी सुन ली तो उसने कहा, 'घवराइए नहीं। हम दोनों उन्हें वचाने के लिए साथ ही वहां चलेंगे।'

जव यह लड़का अपनी लुगाई के साथ वहां पहुंचा तो उन्होंने देखा कि मंत्री दाना-पानी छोड़ देने के कारण हड्डी-हड्डी रह गया है, और बीमार पड़ गया है। इसके वाद लड़की ने कहा, 'अव डरने की कोई वात नहीं। आप मजे से खाना खाइए। मैं सव कुछ संभाल लूंगी। मैं राजा को मकड़ी के जाले का कपड़ा दूंगी।'

मंत्री ने खाना खाया और अगले दिन सभा में गया। कुछ देर वाद लड़की मिट्टी का नया वर्तन अपने सिर पर रखे उसके पीछे-पीछे चली। उसने राजा को माथा नवाया और कहा, 'आपने मेरे ससुर से मकड़ी के जाले का कपड़ा वुनने को कहा है। यह कपड़ा इस तरह नहीं वुना जाता। यह वर्तन है। पहले आप को इस वर्तन में तव तक फूंक मारते रहना होगा जब तक यह हवा भरने से फट नहीं जाता। इसके तुरत वाद हम आपका कपड़ा तैयार कर देंगे।'

राजा का होश ठिकाने आ गया। उसने कहा, 'मैं इसे फूंक से भर कैसे सकता हूं?'

इस पर लड़की ने जवाव दिया, 'तव फिर हम मकड़ी के जाले का कपड़ा कैसे बना सकते हैं?'

इसके बाद राजा ने कहा, 'अब मेरा विचार वदल गया। आप मेरी सभा में रहेंगे।'

पर मंत्री और उसकी पतोहू के वापस लौटते ही वाभन फिर आया और राजा से पूछा कि क्या हुआ। राजा ने उसे पूरी वात बताई तो वाभन वोला, 'वहुत बढ़िया। इस बार तो वह सचमुच वाजी मार ले गया। पर उसको एक बार और परखिए। अव आप उससे एक पसेरी मच्छरों की हड्डी लाने को कहिए।'

यह कहकर वाभन ने राजा को बहुत सारा पैसा भेंट किया और चला गया।

राजा ने जुलाहे को बुलवाया और कहा, 'एक महीने के भीतर एक पसेरी मच्छरों की हड्डी ले आओ नहीं तो मैं तुम्हें मरवा दूंगा।'

एक बार फिर बेचारे को निराशा ने घेर लिया और उसने दाना-पानी छोड़ दिया। जव लड़की ने यह बात सुनी तो उसने कहा, 'घवराने की कोई

बात नहीं। मैंने जैसे पहली बार आपको बचाया था उसी तरह इस बार भी बचाऊंगी।'

उसने उसे खाना-वाना खिलाया और राजसभा में भेज दिया। इसके बाद उसने एक टोकरी में भुने हुए चने लिए और उसे एक कपड़े से ढक दिया और इसे लेकर उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। उसने कहा, 'मैं मच्छरों की हड्डी ले आई हूं लेकिन इसे तौलने के लिए तराजू भी चाहिए। ये जैसे-तैसे तराजू में नहीं तौले जा सकते। इनको तौलने के लिए ऐसी तराजू चाहिए जिसकी डांड़ी हवा की हो और पलड़े ताप के।'

राजा ने यह बात सुनी तो उसने कहा, 'पर ऐसी तराजू भला किसे मिल सकती है?'

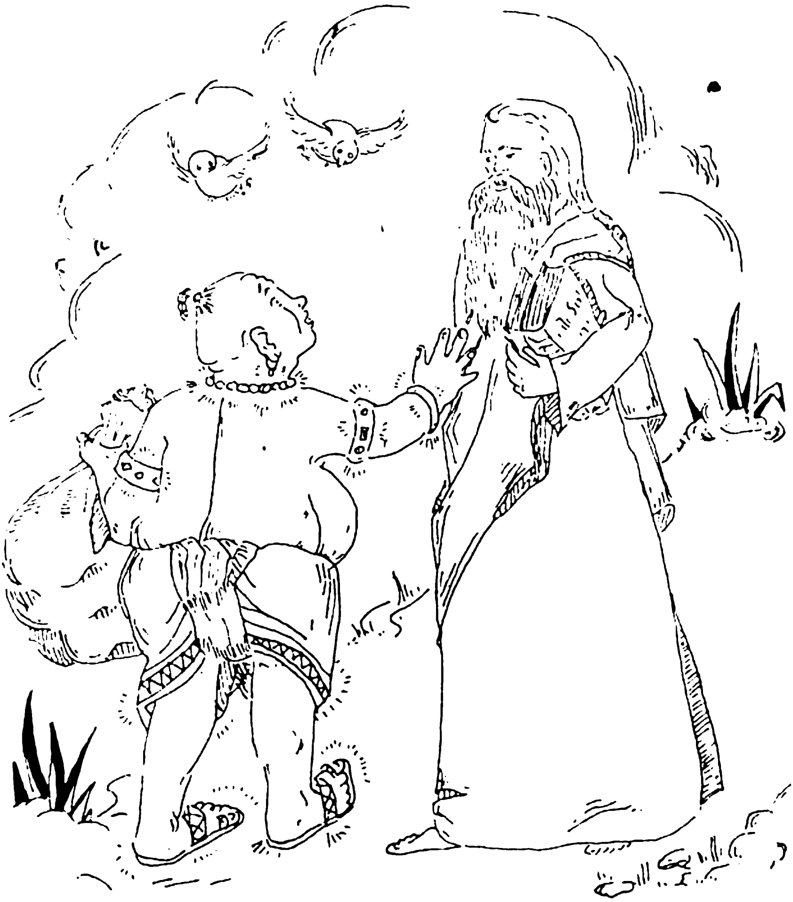

इस पर लड़की बोली, 'तो भला एक पसेरी मच्छरों की हड्डी किसे मिल सकती है?'

राजा ने अपने मंत्री से कहा, 'आपको कुछ भी लाने की जरूरत नहीं। आप मेरी सभा में बने रहेंगे।'

पर मंत्री और उसकी पतोहू के वापस लौटते ही बाभन फिर आया और राजा ने उसे पूरी बात बताई तो बाभन बोला, 'यह लड़की तो बहुत तेज निकली। अब आप मंत्री से एक काम करने को कहिए। उससे कहिए कि वह अपने घर में एक कुआं खोदे और उसे वहां से उठाकर बीच बाजार में रख दे जिससे सौदा-सुलुफ बेचने वालों को पीने को पानी मिल सके।'

बाभन ने राजा को बहुत सारा पैसा भेंट किया और चला गया।

राजा ने जुलाहे को फिर बुलवाया और बताया कि उसे क्या करना है और कहा, 'एक महीने के भीतर यह काम न हुआ तो मैं तुम्हें मरवा दूंगा।'

मंत्री निराशा में डूबा हुआ घर आया और उसने फिर दाना-पानी छोड़ दिया। जब लड़की ने यह बात सुनी तो उसने कहा, 'यह तो मेरे बाएं हाथ का खेल है। घबराने की कोई बात नहीं। मैं आपको इस बार भी बचाऊंगी।'

लेकिन उसने कहा, 'नहीं, यह तो किसी के वश का काम नहीं।'

उसने जरा-मरा खाना खाया और लड़की की बात पर कान न देकर घर में कुआं खोद डाला। इसके बाद वह सभा में गया। लड़की ने अपने को कीचड़ में लपेट लिया और एक रस्सा हाथ में लिए उसके पीछे-पीछे चल दी। राजा ने उसे देखा तो पूछा, 'माजरा क्या है?'

लड़की ने कहा, 'मैं अपने घर के कुएं को खींचकर बाजार में ले जाने के लिए उसे खींच रही थी पर यह बहुत भारी है। आप अपने महल के कुएं को हमारी मदद के लिए भेज दीजिए। हम रस्से का एक सिरा आप के कुएं के गले में बांध देंगे और दूसरा अपने कुएं के गले में। इसके बाद आपका कुआं हमारे कुएं को खींचकर बाजार तक पहुंचा देगा।'

राजा की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने कहा, 'पर मैं अपने कुएं को तुम्हारे कुएं को खींचने के लिए कैसे भेज सकता हूं?'

लड़की ने कहा, 'फिर हम अपने कुएं को उठाकर बाजार में कैसे रख सकते हैं ?'

इसके बाद राजा ने कहा, 'अब मैंने हार मान ली। इसके बाद मैं आप को कभी तंग नहीं करूंगा। अब आप निश्चिंत हो जाइए।'

इस बार जब बाभन राजा के पास आया तो उसने उसे खूब खोटी-खरी सुनाई और कहा, 'तुम्हारी साथिन संपत्ति है तो हुआ करे, लड़की के पास बुद्धि

है और वह धन से अधिक बलवान है। उसने उसे अपने राज्य से निकाल बाहर किया और उसकी सारी संपदा जब्त कर ली।

जादुई मादल

एक बाघ जंगल में शिकार पर निकला था। उसके सामने एक सूअर पड़ गया। बाघ ने उससे कहा, 'सूअर, मैं बहुत भूखा हूं। मैं तुझे खाऊंगा।'

सूअर ने कहा, 'तुम खाओगे या नहीं यह तो बाद की बात है। पहले तो मेरी और तुम्हारी लड़ाई होगी। मैं हार गया तब तो तुम मुझे खा ही जाओगे पर तुम हार गए तब क्या होगा?'

बाघ ने कहा, 'मेरी तुम्हारी लड़ाई होगी तो इसका पंच कौन होगा?'

सूअर ने कहा, 'तुम तो इतनी तेजी से दौड़ लेते हो। जाओ, किसी को भी हमारी लड़ाई का पंच चुनकर लेते आओ।'

यह सुनकर बाघ पंच खोजने चला गया।

ररिऊ-जिज़ा नाम का एक आदमी भी उसी जंगल में शिकार कर रहा था। बाघ उसकी ओर बढ़ा तो उसके होश उड़ गए। वह वहां से भाग चला। बाघ ने उसे आवाज दी और कहा, 'घबराओ नहीं।'

ररिऊ-जिजा ने कहा, 'क्या तुम मुझे खाने नहीं आए हो ?'

बाघ ने कसम खाकर कहा, 'तुम्हें खाने का मेरा तनिक भी इरादा नहीं है। मेरी और जगली सूअर की लड़ाई होने वाली है। मैं तुमसे इतना ही चाहता हूं कि तुम इसमें पंच बन जाओ।'

ररिऊ-जिजा यह बात मानने को तैयार ही नहीं हो रहा था पर बहुत समझाने बुझाने पर वह मान गया।

इस बीच सूअर ने अपने शरीर पर खूब सारा कीचड़ डाल लिया था। जब बाघ उस जगह पर पहुंचा तो उसने कहा, 'अब तुम्हें ही फैसला करना है कि लड़ाई में जीतता कौन है।'

बाघ और सूअर लड़ने लगे। सूअर ने अपने शरीर को कंपाया तो कीचड़ उछलकर बाघ की आंख में पड़ गई और वह इतना डर गया कि भागने के लिए मुड़ पड़ा। यह देख कर ररिऊ-जिजा ने ऐलान कर दिया कि सूअर जीत गया और इसे बाघ भी मान गया।

अब सूअर तो बच गया पर बाघ को तो भूख लगी ही थी। उसने ररिऊ-जिजा से कहा, 'मैं बहुत भूखा हूं और अब तुमको तो खाऊंगा ही।'

ररिऊ-जिजा ने कहा, 'लेकिन तुम तो इसकी कसम खा चुके हो कि तुम ऐसा नहीं करोगे। अब इस समय तुम उससे मुकर नहीं सकते।'

बाघ ने कहा, 'तुमने मुझे विजेता बताया होता तो मैंने सूअर को खा लिया होता और तुम बच जाते। पर तुमने उसे विजेता घोषित कर दिया इसलिए वह तो बचकर निकल गया। अब मेरे पास तुम्हें खाने को छोड़कर कोई दूसरा चारा तो है नहीं।'

जब ररिऊ-जिजा को पता चल गया कि बाघ सचमुच उसे खाने पर ही तुला हुआ है तो वह वहां से भाग खड़ा हुआ और भागते-भागते जब बेदम हो गया तो एक ऊंचे पेड़ की ऊंची डाली पर जा छिपा। बाघ पेड़ पर तो चढ़ नहीं सकता था इसलिए वह यह सोचकर उसके नीचे बैठ गया कि जब वह उतरेगा तो उसे खा जाएगा।

इस पेड़ के नीचे ही अरना भैंसे रात को जमावड़ा करते थे। रोज की तरह जब वे उस दिन भी शाम को आए तो उन्होंने बाघ को वहां से भगा दिया।

सवेरे जब भैंसें फिर चरने को निकल गए तो ररिऊ-जिंजा नीचे उतरा और उस जगह को साफ करके पेड़ पर फिर जा चढ़ा।वह कई दिन तक ऐसा ही करता रहा। जब भैंसे रात को जुटते और देखते कि उनके जमावड़े की जगह साफ-सुथरी रहती है तो वे हैरान रह गए कि यह हो कैसे रहा है? वे एक दूसरें से कहने लगे, 'यहां कोई न कोई आदमी जरूर है। हम उसे पकड़ें तो पकड़ें कैसे?

एक बूढ़ी भैंस ने कहा, 'मैं बहुत बूढ़ी हो चली हूं इसलिए कल मैं चरने नहीं जाऊंगी और उसे आते ही पकड़ लूंगी।'

दूसरी भैंसों ने भी हामी भरी और कहा कि जब वे चरकर आएंगी तो उसके लिए भी चारा ले आएंगी।

अगले दिन सवेरे दूसरी सभी भैंसें चली गईं और यह भैंस इस तरह पड़ रही मानो उसके शरीर में जान ही न हो। ररिऊ-जिजा उस दिन भी पेड़ से नीचे उतरा, उस जगह को साफ किया और जब उसने देखा कि एक भैंस वहां मरी पड़ी है तो वह उसके लिए रोने-कलपने लगा और उसके शरीर को धोने पर जुट गया। जब वह उसे धो रहा था उस समय उसने उसे अपने पिछले दोनों पांवों से पकड़ना चाहा। वह इससे इतना चौंका कि उछलकर अलग हो गया और झट पेड़ पर अपने आराम करने की जगह पर पहुंच गया। सांझ ढले जब दूसरी सभी भैंसें वापस लौटीं और उन्होंने पूरी बात सुनी तो वे चिढ़ गईं और उन्होंने उसे चारा देने से इनकार कर दिया।

अगली सुवह उसने कहा, 'इस वार मैं कोई चूक नहीं करूंगी। अब उसे पकड़कर ही रहूंगी।'

रारिऊ-जिजा फिर नीचे उतरा और रोज की तरह सफाई करने के बाद यह सोचकर कि अव तो यह भैंस मर ही गई है, चौकन्ना होकर उसके शरीर को धोने लगा। जव वह ऐसा कर रहा था उसी समय उसने उसे पकड़ लिया और इस वार वह वचकर नहीं निकल पाया। शाम को जव दूसरी भैंसें लौटीं और उन्होंने देखा कि यह आदमी भैंस की टांगों के वीच पकड़ा पड़ा है तो वे वहुत खुश हुईं। उन्होंने रारिऊ-जिजा से कहा, 'डरने की कोई वात नहीं। तुमने हमारी इतनी सेवा की है। हम हर तरह से तुम्हारी मदद करेंगे। आज से तुम्हें छककर दूध पीने को मिलेगा।' उन्होंने वुढ़िया भैंस को भी वह चारा दिया जो वे उसके लिए ले आई थीं।

इसके वाद से रारिऊ-जिजा भैंसों के साथ खुशी-खुशी रहने लगा। वह उनके बथान को साफ करता और कोई भैंस बीमार पड़ती या वहुत कमजोर होती तो वह चरागाह में जाकर उसके लिए घास ले आता। इसके वदले उसे जी भरकर दूध पीने को मिलता।

एक दिन भैंसों ने रारिऊ-जिजा से कहा, 'कभी-कभी हम लोग दूर चली जाती हैं। ऐसे समय में हमें कैसे पता चलेगा कि तुम्हारा हाल-चाल क्या है? तुम दो मादल वनाओ। एक तो एक नली वाला और दूसरा दो नलियों वाला। जब तुम एक नली वाले मादल को वजाओगे तो हम समझेंगी कि सब कुछ ठीक-ठाक है, और आगे वढ़ती जाएंगी। जहां तुमने दो नलियों वाला मादल वजाया, हम जहां होंगी वहां से लौट पड़ेंगी।

एक दिन रारिऊ-जिजा नदी पर नहाने गया। उसका कोई वाल निकल कर गिर पड़ा। उसने सोचा कि यह वाल इतना कीमती है कि इसे यूं ही नहीं फेंका जा सकता। इसलिए उसने इसके लिए काठ की एक पेटी वनाई और उसे उसी में रखकर उसे नदी में वहा दिया।

उसी नदी में वहुत दूर नीचे की ओर असम के राजा की वेटी नहा रही थी। उसने उस पेटी को बहते देखा तो उसे पकड़कर किनारे ले आई और जव उसने उसे खोला तो उसकी नजर उस सुंदर वाल पर पड़ी। उसने मन में सोचा, 'यह वाल इतना सुंदर है तो वह आदमी कितना सुंदर होगा जिसके ये वाल हैं। मैं अब उसे छोड़ किसी और से व्याह न करूंगी।' वह घर लौटी तो उसने खाना-पीना, हंसना-बोलना छोड़ दिया। उसके माता-पिता चिंता में पड़ गए। उन्होंने कहा, 'तुम चाहती क्या हो? तुम जो कुछ भी मांगो, हम वह सव देने

को तैयार हैं लेकिन तुम इस तरह से घुलना बंद कर दो।'

लड़की ने उन्हें वह पेटी और उसमें रखा बाल दिखाया और कहा, 'मैं उसी आदमी से व्याह करना चाहती हूं जिसका यह बाल है।'

राजा और रानी ने आदमियों, जानवरों, पक्षियों सभी को बुलाकर पूछा कि यह बाल किसका है, पर कोई उसको बता न सका। अंत में कौए ने कहा, 'मैं जाकर उसका पता लगाऊंगा। वह देस-देस उड़ता गया, उड़ता गया और अंत में उस पेड़ पर पहुंच ही गया जिस पर रारिऊ-जिजा रहता था। वह एक मादल

लिए इधर-उधर घूम रहा था। कौआ नीचे उतरा और उसके सिर पर हल्की सी चोट की। रारिऊ-जिजा ने कौए को मारने के लिए दोनों हाथ झटके तो उसके दोनों मादल छिटक कर गिर गए। कौए ने उन्हें उठा लिया और उन्हें लेकर लड़की के पास पहुंच गया। उसने कहा, 'अव चाहे कुछ भी हो, यह आदमी तुम्हारे पास जरूर आएगा।'

लड़की एक नली वाला मादल वजाती रही और भैंसें आगे की ओर बढ़ती चली गईं। कुछ देर वाद उसने सोचा पता नहीं यह दो नली वाला मादल कैसा वजता है। उसने उसे वजा दिया और इसके साथ ही भैंसें उसकी ओर लौट पड़ीं। रारिऊ-जिजा ने उनको जाते देखा तो उसने सोचा कि जरूर ये उसी के पास जा रही होंगी जिसके पास मादल हैं। इसलिए वह उनके पीछे-पीछे तब तक लगा रहा जब तव वे सभी लड़की के महल में नहीं पहुंच गए। इसके बाद वह उसके पास गया और अपने मादल वापस मांगे। इस पर उसने कहा, 'मैं इन्हें तुम्हें तभी लौटाऊंगी जब तुम मुझसे ब्याह करोगे।'

रारिऊ-जिजा इसके लिए तैयार हो गया और उन दोनों का ब्याह हो गया। राजा ने जब यह सुना कि उसके दामाद के पास इतनी सारी भैंसें और उन्हें मनचाहे ढंग से हांकने-संभालने के लिए दो मादल हैं तो उसने चाहा कि मादल उसे मिल जाएं। उसने चुपके से मादल चुरा लिए और अपनी लड़की और उसके पति को महल से निकाल बाहर किया।

रारिऊ-जिजा ने अपनी बीवी से कहा, 'अब हमें यहां नहीं रहना चाहिए। हम उसी पेड़ पर चलें जहां मैं इतने समय तक रहता रहा।' वे दोनों वहीं चले गए और उनके कई लड़कियां पैदा हुईं। और सच वात तो यह है कि जंगल में उन भैंसों के साथ रहते हुए उन्हें किसी तरह का कष्ट भी नहीं था।

प्रलय

दुनिया में मौत कैसे आई

*पहाड़ के लोगों के लिए मौत पहले नहीं थी। यह बीच में आ धमकी। पर जैसा कि स्विफ्ट ने बहुत पहले **गुलिवर की यात्राएं** में दिखाया है, जब तक अजरता न हो तब तक अमरता का कोई मतलब नहीं रह जाता। सिंग्पो लोगों में चलने वाली इस कहानी में यह दिखाया गया है कि मनुष्य के पास मौत अभिशाप नहीं वरदान बनकर आई थी।*

पहले पहल लोग न तो मरते थे न ही रोना जानते थे। वे बढ़ते चले जाते थे और जैसे-जैसे बूढ़े होते जाते वैसे-वैसे उनके दुख भी बढ़ते जाते। वे चल नहीं सकते थे, डटकर खा नहीं सकते थे और उनकी जिंदगी में कोई आनंद या आराम नहीं रह जाता था।

एक गिलहरी जंगल में एक बहुत ऊंचे पेड़ पर रहती थी। एक बार एक चील उसके पास से उड़ी और डर के मारे गिलहरी किटकिटा उठी। इस पर चील खुंदक खा गई और उसने उसे अपने चंगुल में पकड़ लिया और मार डाला और उसके शरीर को नीचे जमीन पर गिरा दिया। सिंगरा-फांग-मागन नाम का एक आदमी उधर से गुजरा और जब उसने गिलहरी को देखा तो उसे बड़ा अचरज हुआ क्योंकि उसने अपने जीवन में कभी किसी मरे हुए जीव को नहीं देखा था। उसने सोचा, 'बात क्या है, हमारे अपने लोगों के साथ तो कभी ऐसा होता नहीं कि वे जहां पड़े हैं वहीं के वहीं पड़े रह जाएं और उनके हाथ-पांव तनिक भी हिल डोल न सके?' उसने उस गिलहरी को उठाया और अपने घर के एक कोने में कपड़े से ढककर रख दिया।

इसके बाद उसने चांद और तारों को यह कहते हुए पुकारा, 'आओ, आओ और देखो, एक आदमी मर गया है।' चांद और तारे जंगलों और पहाड़ों की सभी आत्माओं के साथ रोते हुए आए और उनके साथ ही सिंगरा-

फांग-मागन और उसकी लुगाई भी रोने लगी। पर जब चांद और तारों ने पूछा कि मरा हुआ आदमी कहां है तो सिंगरा-फांग-मागन ने उन्हें गिलहरी को दिखा दिया। इस पर वे बहुत नाराज हुए और कहा, 'यह आदमी नहीं है, बस, एक जानवर है।'

सिंगरा-फांग-मागन ने पूछा, 'लेकिन यह गिलहरी क्यों मर गई और आदमी इसी तरह क्यों नहीं मरते?'

इस पर चांद और तारों ने पूछा, 'क्या आदमी लोग भी मरना चाहते हैं?'

उसने कहा, 'चाहेंगे क्यों नहीं! आदमी जब बूढ़ा हो जाता है तो जिंदगी वोझ बन जाती है।'

तव चांद और तारों और सभी आत्माओं ने कहा, 'तुम लोग गिलहरी का मांस खाओ तो तुम सभी मर जाओगे।'

सिंगरा-फांग-मागन ने गिलहरी के शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े कर डाले और उसे उसने दुनिया के सारे मर्दों और औरतों में बांट दिया और इसके कारण मौत उन्हें भी आने लगी और वे रोना भी सीख गए।

मौत दुनिया में कैसे आई इस बात को लेकर अका लोगों में यह कहानी चलती है।

पहले पहल सूरज का जोड़ा हुआ करता था। एक मर्द और दूसरी औरत। इसी तरह चांद का भीं जोड़ा था। एक मर्द और दूसरी औरत। इन चारों का ताप इतना अधिक था कि धरती पर घास और पेड़ सूख गए और आदमी और जानवर मर गए।

सूरज की औरत और चांद के मर्द में प्रेम हो गया। वे आसमान में तो मिल नहीं सकते थे इसलिए वे धरती पर उतर आया करते थे और जब वे मिलते थे तो वहां के आसपास की हर चीज में आग लग जाती थी। यही तो कारण है कि धरती आज भी कहीं तो लाल है और कहीं पीली है। इसी को देखकर तो पता चलता है कि सूरज और चांद ने यहां प्रेम किया था।

जब भी चांद और सूरज धरती पर उतरते, आदमी और जानवर वहां से भाग खड़े होते कि कहीं जलकर मर ही न जाएं। उन्होंने एक गुप्त स्थान में छिपकर सभा की और कहा, 'इन पापियों का नाश कैसे किया जाए?' पर उनमें से कोई इतना बलवान नहीं था कि वह सूरज या चांद को मार सके। इसलिए वे किसी ऐसे की खोज में निकले जो यह काम कर सके।

चाउ-सिफू और खारो-लिब्जी नाम के दो भाई थे। उन्होंने आदमियों और जानवरों को जंगल से जाते देखा तो उन्हें रोककर पूछा, 'आप सभी लोग जा

कहां रहे हैं?' आदमियों और जानवरों ने जो कुछ हुआ था वह सब बताया और यह भी बताया कि वे कितनी मुसीबत में जी रहे हैं।

इसे सुनकर दोनों भाइयों ने कहा, 'हम इन पापियों की जान लेकर छोड़ेंगे। तुम सभी लोग कहीं छिप जाओ। हम उनके यहां आने की बाट देखेंगे और उनके आते ही उनको मार डालेंगे।

आदमी और जानवर तो छिप गए। कुछ ही समय बाद सूरज की पत्नी और चांद का पति दोनों धरती पर आए और चाउ-सिफू और खारो-लिब्जी ने अपने धनुष से उन पर तीर छोड़ दिए। खारो-लिब्जी का बाण सूरज की पत्नी के आर-पार हो गया और वह वहीं धरती पर ही मर गई। चाउ-सिफू का बाण चांद के पति को लगा तो, पर वह तुरत उसके प्राण नहीं ले सका और वह हवा में उड़ चला। अपने शरीर में बाण को लिए-दिए ही भाग कर अपनी पत्नी के पास पहुंच गया। जब वह उसकी बांहों में पहुंचा तो वहीं मर गया। उसकी पत्नी ने उसे बाणों से छिदा देखा तो वह जार-बेजार रोने लगी।

सूरज ने कहा, 'मेरी पत्नी धरती पर मर गई है पर मेरी बहन का पति चांद यहां मरा है। यदि यह उसकी लाश आदमियों और जानवरों को दे देगी तो वे भी मर जाएंगे।'

इसलिए वह आदमियों और जानवरों को चेताने गया और कहा, 'मेरी बहन, चांद, तुम्हें पुकारे तो उसका कोई जवाब न देना पर यदि मैं गुहार लगाऊं तो जवाब देना।

वह अपनी जगह को लौट गया और चारों ओर अंधियारा छा गया।

रात के आते ही चांद अपने पति को अपनी बांहों में उठाए रोती-कलपती घर से बाहर आई। उस समय जंगल के भौंकने वाले हिरन और मोर को छोड़कर सभी सोए हुए थे। जब इन दोनों ने चांद की पत्नी के रोने की आवाज सुनी तो बोल उठे, 'क्या हो गया?'

यह सुनते ही चांद ने अपने पति की लाश को छोड़ दिया और वह धरती पर आ गिरा। इसके साथ ही वह चिल्लाई, 'धरती के आदमियो, जानवरो और चिड़ियो, जिस तरह तुमने मेरे पति को मार डाला उसी तरह तुम सभी भी मर जाओ।'

इस तरह मौत धरती पर आ गई।

लेकिन जब मुर्गे ने यह सुना तो उसने तुरत सूरज को जगाया और मदद के लिए बुलाया। सूरज अपने घर से बाहर निकला और कि आदमी और जानवर सभी रो रहे हैं। उसने कहा, 'अब तो मैं कुछ कर नहीं सकता। इसमें तो अब

बहुत देर हो गई। अब तुम सभी को मरना तो होगा ही।'

पर पहाड़ पर रहने वालों के मरने के साथ ही उनका अंत नहीं हो जाता। उनकी आत्मा धरती के गांवों की आत्मा की तरह की नहीं है, यह उनके मरने के बाद भी जीवित रहती है और समय-समय पर वह उस आदमी से मिलती भी है जिससे उसने जीवन में प्यार किया था। आत्मा परिवार का ही एक सदस्य बनी रहती है। जीवित लोग उसके लिए भोजन अलग रखते हैं और वह उन्हें सपने में दिखाई भी देती है।

पहाड़ के अनेक लोग यह मानते हैं कि यह धरती पर दूसरा रूप धर कर लौटती है।

कंप्यूटेक सिस्टम, मानसरोवर पार्क, दिल्ली द्वारा लेजर कम्पोज तथा सैंट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस, नारायणा नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

Acc. No. 91261
Date 23-2-99

भारत के पर्वतों और वनों में लगभग तीन करोड़ जनजातीय लोग निवास करते हैं। ये अनेकानेक वंशों के हैं और इनकी संस्कृति में बहुत तरह के धर्म, सामाजिक संस्थाएं, पोशाक और भाषाएं शामिल हैं। विख्यात नृतत्वविद डॉ. वेरियर एल्विन लंबे समय से उनकी लोककथाओं और मिथकों का संकलन करते रहे हैं। इस पुस्तक में उन्होंने उनमें से कुछ को रखा है जिन्हें ठीक उसी रूप में लिखा गया था जैसे सुनाने वालों ने उन्हें सुनाया था। इनमें से कुछ कई सौ वर्षों से अपने चारों ओर की सभ्यता से परिचित रहे हैं और कुछ दूसरे इससे पूरी तरह कटे रहे हैं। इसका नतीजा यह है कि कुछ कहानियों पर तो भारतीय लोक-कथाओं की अमर कृतियों, जैसे पंचतंत्र, जातक कथाओं, कथासरित्सागर आदि का प्रभाव है पर दूसरी अनेक मौलिक और नई हैं और जहां उनमें साझी परंपरा से कोई विषय चुना गया है वहां पर भी उन्हें एक अलग ही भंगिमा दे दी गई है। जनजातीय कथाओं में शायद ही कोई कथा हो जिसमें उपदेश देने का प्रयत्न किया गया हो, पर इनका अपना मजा और उत्तेजना तो है ही, एक ऐसी रम्यता और ताजगी भी है जो उनके जीवन की निर्बंधता और उल्लास को और उनके परिवेश के सौंदर्य को भी प्रकट करती हैं।

रु. 24.00

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

Library IIAS, Shimla
H 398.209 54 El 87 D
00091261

भारत के पर्वतों और वनों में लगभग तीन करोड़ जनजातीय लोग निवास करते हैं। ये अनेकानेक वंशों के हैं और इनकी संस्कृति में बहुत तरह के धर्म, सामाजिक संस्थाएं, पोशाक और भाषाएं शामिल हैं। विख्यात नृतत्वविद डॉ. वेरियर एल्विन लंबे समय से उनकी लोककथाओं और मिथकों का संकलन करते रहे हैं। इस पुस्तक में उन्होंने उनमें से कुछ को रखा है जिन्हें ठीक उसी रूप में लिखा गया था जैसे सुनाने वालों ने उन्हें सुनाया था। इनमें से कुछ कई सौ वर्षों से अपने चारों ओर की सभ्यता से परिचित रहे हैं और कुछ दूसरे इससे पूरी तरह कटे रहे हैं। इसका नतीजा यह है कि कुछ कहानियों पर तो भारतीय लोक-कथाओं की अमर कृतियों, जैसे पंचतंत्र, जातक कथाओं, कथासरित्सागर आदि का प्रभाव है पर दूसरी अनेक मौलिक और नई हैं और जहां उनमें साझी परंपरा से कोई विषय चुना गया है वहां पर भी उन्हें एक अलग ही भंगिमा दे दी गई है। जनजातीय कथाओं में शायद ही कोई कथा हो जिसमें उपदेश देने का प्रयत्न किया गया हो, पर इनका अपना मजा और उत्तेजना तो है ही, एक ऐसी रम्यता और ताजगी भी है जो उनके जीवन की निर्बंधता और उल्लास को और उनके परिवेश के सौंदर्य को भी प्रकट करती है।

रु. 24.00

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

Library IIAS, Shimla
H 398.209 54 El 87 D
00091261